मासिक

jaihaatkeshvani.com

जय हाटकेश वाणी

दिसम्बर 2015, वर्ष : 10 अंक : 8

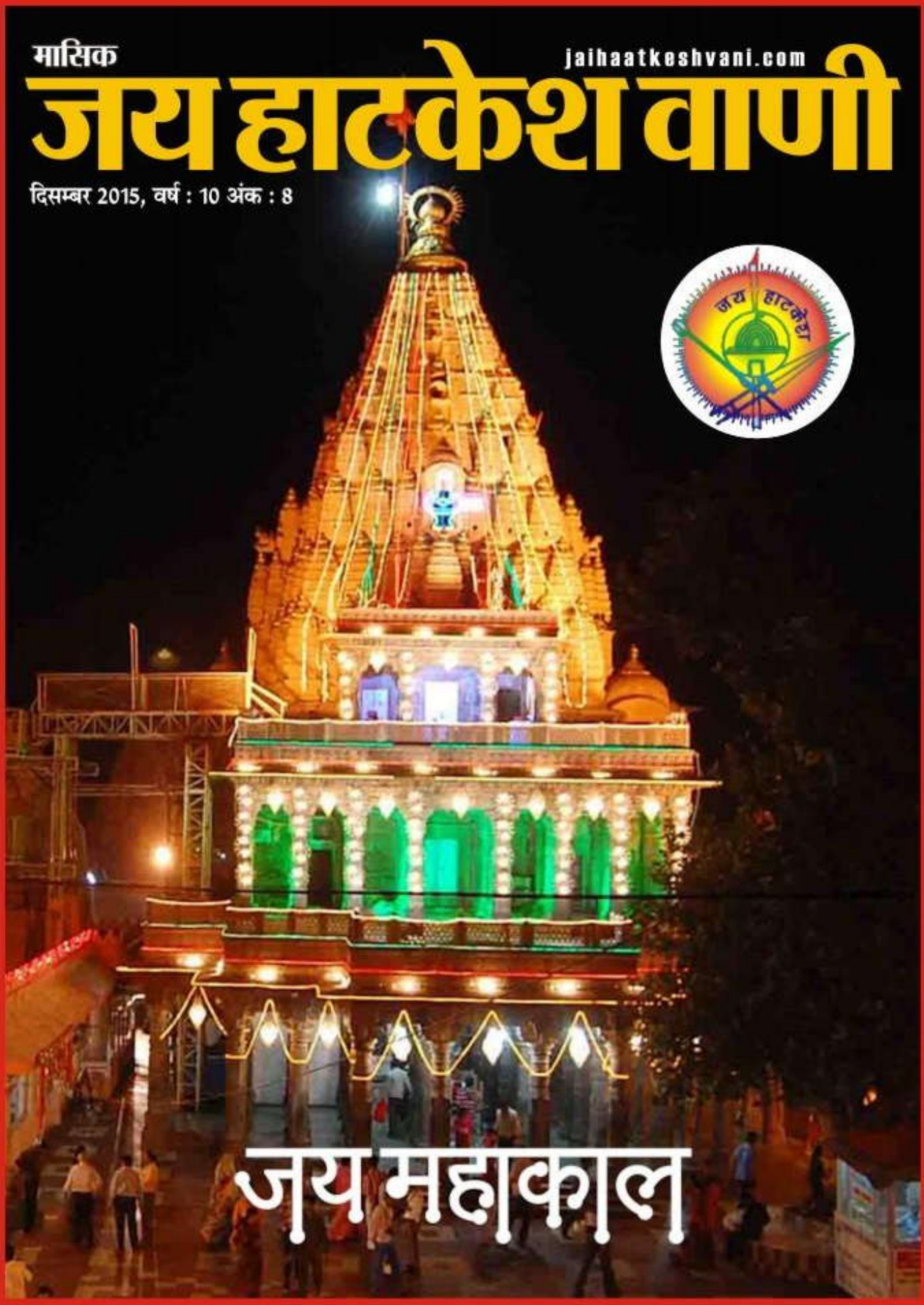

।। जय श्री कृष्ण ।।

श्री स्व:पिताम्बरलालजी उदयरामजी
पुण्यतिथि सं.2054 कार्तिक शुक्ल 15

सौ.स्व:मीराबाई पिताम्बरलालजी
पुण्यतिथि सं.2053 माघ शुक्ल 15

॥ सर्वधर्मात्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज
अहंत्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥

अध्याय 18वां श्लोक 66वां

भावार्थ- सर्वेधर्मों का अर्थात् सम्पूर्ण कर्मों के आश्रय को त्यागकर केवल मुझ सचिदानन्द घनश्याम वासुदेव परमात्मा में ही आश्रय, परमगति और सर्वस्व समझना, मेरी आज्ञानुसार कर्तव्य कर्मों का निःस्वार्थ भाव से मेरे लिए आचरण करना निश्चय ही मैं तेरे को सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूंगा।

**आपके सद्कर्म, आशीर्वाद एवं पुरुषोत्तम योगेश्वर,
श्री कृष्ण कर्मों के प्रति निष्ठा, परमात्मा
के प्रति सम्पूर्ण अर्पण भाव परिवार को प्रेरणा देता रहेगा।**

-गोविंदलाल, पुरुषोत्तमलाल, मदनलाल, रमेशकुमार, विनोद कुमार, ललित
देवांग, भरत, जितेन्द्र, विनित, वैभव, मानव, राज, धैर्य, दिव्य, हीर, रीत, परि

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्त्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता

श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

पं.श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं.श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं.श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुम्बई
पं.श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
पं.श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं.श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं.श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं.श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं.श्री सुनील मेहता, मन्दसौर
पं.श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं.श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा

सम्पादक
सौ.दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ.दमिता नवीन झा

विज्ञापन
पवन शर्मा-9826095995

कृपया ध्यान दें

मासिक जय हाटकेश वाणी में प्रकाशन हेतु सामग्री प्रतिमाह 20 तारीख तक अवश्य भेज देवें। यदि ईमेल पर प्रकाशन सामग्री भेजते हैं तो प्राप्ति के सम्बंध में कन्फर्म अवश्य कर लें।

अपने फोटो एवं प्रकाशन सामग्री आप वाट्सएप पर भी भेज सकते हैं इस हेतु ये नम्बर सेव कर लेवें।

मो. 8878171414, 9826146388

अगर 'वाणी' न मिले

डाक एवं पोस्ट की अव्यवस्था के चलते कईं स्थानों पर जय हाटकेश वाणी पहुँच नहीं पाती है, यदि आपको निर्धारित समय तक पत्रिका न मिल पाए तो अपना नाम पता निम्नलिखित मोबाइल नं. पर मैसेज करें- मो. 9826722066.

वाणी प्राप्ति हेतु निम्न स्थानों पर स्थानीय स्तर पर सम्पर्क किया जा सकता है, जहां पत्रिका की अतिरिक्त प्रतियां भेजी जाती है। इन स्थानों पर स्वयं जाकर भी प्राप्त कर सकते हैं।

भोपाल - श्री सुभाष व्यास,
अरेरा कॉलोनी फोन 0755-2463303
रतलाम- श्री ओम त्रिवेदी
टी.आय.टी. रोड़ फोन 07412-230222
उज्जैन- श्री संजय नागर इंदिरा नगर मो. 9425917540

(इनके अलावा नागर बहुल नगरों में जो समाजजन पत्रिका वितरण में सहयोगी बनना चाहते हैं तो वे हमसे अवश्य सम्पर्क कर लेवें। धन्यवाद

जय हाटकेश वाणी

सम्पर्क- अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल, (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
फोन : 0731-2450018, मो. 9826095995, 9926285002

मूल्य 10/-रुपये

website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

भारत का गौरव

BTF

STYLE OF TODAY

THE BOMBAY TEX FABRICS

SCHOOL UNIFORM

बॉम्बे मार्केटिंग एण्ड टेक्नालॉजी

64, कपोल निवास, दूसरी मंजिल , कमरा नं. 12 तीसरा कवेल क्रास लेन,
रामवाड़ी (भाजी गली) मुम्बई-400 002 फोन : 022-32403605
शान्ति भाई : 93226 42197, हुकमीचन्द भाई : 93237 87623, रंगराज भाई : 93235 13595

नागर घेवरचन्द जवानमलजी

विजयलक्ष्मी किराणा स्टोर्स

धणी रोड़, खुडाला स्टेशन, फालना जिला पाली (राज.)

समृद्ध, उन्नत नागर ब्राह्मण समाज की परिकल्पना

मासिक जय हाटकेश वाणी में कैसा हो हमारा नागर ब्राह्मण समाज? विचार क्रांति अभियान शुरु किए जाने के पीछे ठोस कारण है। दरअसल आज समाज का असंगठित होना, कुरीतियाँ ओढ़े रखना तथा नेतृत्व विहिन होते जाने के पीछे कई कारण है। जो समय एवं परिस्थितियों के बदलते वक्त नजरअंदाज किए गए, सिद्धांतों तथा आधुनिक चकाचौंध को बगैर सोचे अपनाने से उत्पन्न हुए हैं। नागर समाज के सभी वर्गों को एक किए जाने के लिए कोई गंभीर प्रयास न तब किया गया, न अब। मेरा मानना है कि जब नागर ब्राह्मण समाज की बात हो तो वहाँ 'नगरा' का प्रश्न आना ही नहीं चाहिए। इस नगरा की पहचान ने आज तक सम्पूर्ण नागर समाज को एक नहीं होने दिया। श्रेष्ठता और विशिष्टता का झगड़ा करते-करते समाज पूरी तरह संगठित नहीं हो पाया।

अखिल भारतीय स्तर पर जो परिवर्तन आए हैं वे आज संगठन एवं नेतृत्व को भी प्रभावित कर रहे हैं। जैसे संयुक्त परिवारों का खत्म होकर उनका एकल परिवारों में तब्दिल हो जाना। संयुक्त परिवारों में एकाध सदस्य को समाज कार्य के लिए समर्पित किया जा सकता था, वह एकल परिवार में संभव नहीं है।

विडंबना यह है कि वडनगरा हो, विसनगरा या और कोई 'नगरा', उन्हें केवल एक पहचान नागर ब्राह्मण की बनाकर देश में प्रतिष्ठित होना चाहिए था, इस संबंध में प्राचीनकाल में समाजजनों ने ध्यान नहीं दिया और आज स्थिति और विकराल हो गई है। गुजरात में तो बकायदा विसनगरा और वडनगरा के मंदिर भी अलग-अलग है, जहाँ हमारी जड़ थी वहीं आज तक चेतना नहीं आई, तो बाकि जगह भगवान ही मालिक है। दरअसल हमें नागर ब्राह्मण की पहचान से ही आगे बढ़ना चाहिए था, जो नहीं हो सका। अखिल भारतीय नागर परिषद् के पूर्व अध्यक्ष स्व.श्री दिलीप भाई मांकड़ ने नागर इतिहास के बारे में खूब खोजपरक जानकारियाँ एकत्र की जिसको संकलित कर वे एक पुस्तक का प्रकाशन करवाना चाहते थे, उनके बाद के अध्यक्ष श्री रजनी भाई मेहता ने उनसे इस पुस्तक प्रकाशन में लगने वाला समस्त खर्च भी देने का वादा किया था, परन्तु इसी बीच श्री दिलीप भाई मांकड़ का देवलोक गमन हो जाने से यह कार्य लंबित पड़ा है।

वह पुस्तक प्रकाशित होना चाहिए, जिसमें दिलीप भाई ने नागर समाज के 6 वर्ग वडनगरा, विसनगरा, साठोदरा, प्रश्नोत्रा, कृष्णोरा, दशोरा के अलावा श्रीनगरा नागर ब्राह्मणों के बारे में भी खोजपरक तथ्य प्रस्तुत किए हैं, दरअसल राजस्थान के तीन जिलों जालोर, सिरोही एवं पाली के निवासी ये सभी 1100 से अधिक नागर ब्राह्मण परिवार वडनगर के ही मूल निवासी है, दिलीप भाई ने बताया है कि वडनगर का एक नाम श्रीनगर भी रहा है तथा ये सब वहीं के निवासी होकर मुस्लिम शासकों के अत्याचार से त्रस्त होकर हमारी तरह निर्वासित होकर जालोर, सिरोही एवं पाली जिलों में जाकर बस गए एवं एक समय के बाद देश के अन्य भागों में विस्तारित हुए।

गुजरात के कुछ संगठन जब इन परिवारों को मान्यता देने में आनाकानी करने लगे तब श्री दिलीप भाई मांकड़ ने इनके बारे में प्रमाणित किया कि ये सब नागर ब्राह्मण है तथा वे अ.भा. नागर समाज से जुड़ने के लिए लालायित है, यह सर्वमान्य सत्य है कि आज देशभर में फैले नागर ब्राह्मण परिवारों को संगठित कर उनके बीच रोटी-बेटी का व्यवहार बनाना समाज के सबसे ज्यादा हित में है। संगठन में ही शक्ति है, और हम छः-सात अलग-अलग तवों पर अपनी रोटियाँ सेक रहे हैं। मेरा मानना है कि जाति के साथ ही प्रत्येक व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत पहचान भी होती है तथा नागर ब्राह्मण समाज के साथ यह प्लस पाईंट है कि इस वर्ग के व्यक्ति की अलग ही पहचान होती है। इसी आधार पर कोई व्यक्ति यदि नागर ब्राह्मण होने का दावा प्रस्तुत करता है तो केवल उसके रूप एवं गुण, चाल-ढाल से ही उसकी जाति की पहचान की जा सकती है, यह कहां मुश्किल काम है? दरअसल आज के परिप्रेक्ष्य में संगठन का कार्य बहुत जरुरी है, क्योंकि समाज इसी आधार पर उन्नति प्राप्त कर पाएगा।

अखिल भारतीय स्तर पर जो परिवर्तन आए हैं वे आज संगठन एवं नेतृत्व को भी प्रभावित कर रहे हैं। जैसे संयुक्त परिवारों का खत्म होकर उनका एकल परिवारों में तब्दिल हो जाना। संयुक्त परिवारों में एकाध सदस्य को समाज कार्य के लिए समर्पित किया जा सकता था, वह एकल परिवार में संभव नहीं है। वर्तमान स्थिति में परिवारों को एकसूत्र में बांधना मुश्किल है, बच्चे पढ़ाई पूरी करके नौकरी करने अन्य शहरों में नहीं जाए? इसका एक ही उपाय है कि समाज को मजबूती देने और उसे समृद्ध बनाने के लिए युवा पढ़ाई के बाद स्वरोजगार को अपनाएं तथा एक ही व्यवसाय के बहाने परिवार में जुड़े रहें तथा समाज के लिए भी योगदान दे सकें। यहाँ यह भी प्रश्न उठ सकता है कि आजकल कई परिवारों में एक ही पुत्र है तो वह स्वरोजगार कैसे करेगा? तो इसका जवाब भी है कि परिवार के शेष सदस्य (सेवा में रत या सेवा निवृत्त पिता व्यवसाय में सहयोग करें तथा विवाह पश्चात् पत्नी भी कहीं ओर जॉब करने के बजाय अपने पति के व्यवसाय में ही सहभागी बनें) ताकि वह परिवार, समाज के लिए भी उपयोगी बन सके। ज्ञातव्य है कि आज वे ही समाज अत्यंत समृद्ध एवं उन्नतिशील है जो व्यवसाय में रत है। इसलिए नागर ब्राह्मण समाज को नौकरी के बजाय स्वव्यवसाय पर जोर देना चाहिए। इसके लिए समाज संगठनों को भी प्रयास कर रोजगार प्रशिक्षण शिविर अथवा रोजगार सेवा केन्द्र, आर्थिक सहयोग देने वाले केन्द्र बनाना चाहिए। समाज संगठन एवं समृद्धि के लिए आवश्यक प्रयास किए जाकर ही उद्देश्य प्राप्त किया जा सकेगा। अन्यथा समाज आगे नहीं बढ़ पाएगा।

-संगीता दीपक शर्मा

श्रीराम सेवा समिति
जालोर (राज.)

संरक्षक : श्रीमती मंछीदेवी शंकरलाल नागर

श्रीराम दरबार

श्री नरसीजी मेहता

अष्टसिद्धि हनुमानजी

श्री सुधांशुजी महाराज

मुख्य उद्देश्य - शिक्षा - स्वास्थ्य - संस्कार

सम्पर्क - मो. 093225 09288

रिश्तों की बहार...

मेलापक 2016 का प्रकाशन फरवरी माह में

प्रतिवर्षानुसार मासिक जय हाटकेश वाणी द्वारा फरवरी 2016 में मेलापक का प्रकाशन किया जा रहा है, आप विवाह योग्य युवक-युवती के बायोडाटा निम्नलिखित आवेदन पत्र में भरकर हमें 20 जनवरी 2016 तक अवश्य भिजवा देवें। प्रविष्टियों का प्रकाशन पूर्णतः निःशुल्क किया जाता है। ज्ञातव्य है कि मासिक जय हाटकेश वाणी में प्रकाशित वैवाहिक प्रस्तावों से अब तक अनेकों रिश्ते हुए हैं तथा पत्रिका का प्रसार क्षेत्र सम्पूर्ण भारत में होने से मनचाहे स्थान एवं पसन्द अनुसार रिश्ते करने की सुविधा इस माध्यम से प्राप्त होती है-

वैवाहिक प्रस्ताव

फोटो
रंगीन
पासपोर्ट
साइज

नाम .....

पिता का नाम .....

माता का नाम.....

जन्म दिनांक ..... जन्म समय ..... स्थान .....

गौत्र ..... कद..... वजन ..... मंगल- है / नहीं.....

शैक्षणिक योग्यता .....

कार्यरत-.....

पता- .....

.....

फोन/मो.नं.....

त्यौहार का असली आनन्द बांसवाड़ा में

त्यौहार का आनन्द अपने लोगों के बीच मनाने का सबसे ज्यादा होता है। बांसवाड़ा नागर समाजजन नवरात्रि हो या दीपावली बांसवाड़ा को आबाद कर देते हैं और यह भूल जाते हैं कि बच्चे उनके पास नहीं रहते बाहर रहते हैं। कोई नहीं सोच सकता कि नवरात्रि में भी अहमदाबाद के व्यावसायिक गरबों को छोड़कर पारम्परिक गरबों के लिए सभी बांसवाड़ा का रूख कर लेते हैं। यहाँ सब के कंठ में माँ सरस्वती विराजमान है। बच्चों से लगाकर बड़े-बुढ़ों तक सब इस कला में पारंगत हो गए है। ये अपने-अपने प्रशंसकों के साथ किसी एक मंदिर को आराधना का केन्द्र बना लेते हैं।

केशवाश्रम धर्मशाला में जहाँ भक्त जीवन, अक्षय कीर्ति, जीतू भगत और अमु भगत की रचनाओं के स्वर गूंजते हैं तो ज्वालामुखी माता मंदिर में इन भक्तों के साथ स्वरुचित गरबों की धूम रहती है। सभी गायकों की ऑडियो सीडी बांसवाड़ा के कई मंदिरों में गूंजती रहती है। मगर नवरात्रि में कई बाहर कार्यक्रम करने के नाम पर कन्नी काट लेते हैं।

परिवारजनों के साथ बालिकाएँ, महिलाएँ पारम्परिक वेष में गरबों की धून और ढोलक की थाप पर थिरकते दिखाई देते हैं, स्थान की कमी उनके उत्साह में कमी नहीं आने देती। नए एवं उभरते गायकों को यहाँ पूरा मौका मिलता है और 9 बजे से लेकर अर्द्धरात्रि 12-1 बजे तक उनका स्वर मंद नहीं होता। इसी दौरान पुराने मंजे हुए गायक शक्ति पीठ अम्बामाता मंदिर में मोर्चा संभाले रहते हैं। जहाँ पूरे नगर की महिलाएं-पुरुष गरबा खेलने के लिए उपस्थित रहते हैं।

जब यहाँ की कमान श्री व्रजेन्द्र पंड्या, कमल कुमार याज्ञिक, परमेश्वर झा, महेश्वर झा, मुकुन्द नागर, मनीष याज्ञिक, वशिष्ठ त्रिवेदी, श्री प्रसाद और बलदेव दवे संभाल रहे थे। वहीं ज्वाला मुखी मंदिर में श्री संदीप पंड्या, हाटकेश झा, सुरेश पंड्या, जितेन्द्र और उमंग पंड्या, जागृत पंचोली, बहुचरा मंदिर में शशिकांत पंचोली, मधूसुदन झा, जानकीवल्लभ नागर और भैरव चौक पर प्रशान्त दवे, पुष्पेन्द्र और जलज पंचोली-उमाकांत पंचोली अपनी अदाकारी से सबका ध्यान आकर्षित कर रहे थे। यहाँ कलाकारों की लंबी फेहरिस्त होने से भूल हो जाने की पूरी संभावना है।

यश जानी जैसे बाल कलाकार थे, तो दशहरे की सवारी में श्रीमती चंद्रिका नागर ने कसेरा चौक महाकाली मंदिर पर गरबे की कमान संभाली। महिलाओं के सामुहिक गरबों में श्रीमती चेतना याज्ञिक, कोकिला नागर, सिद्धिबेन और मनूबेन प्रमुख थे। अष्टमी के हवन और विजयादशमी की सवारी के नगर भ्रमण के पश्चात् पुनः अम्बामाता मंदिर में हजारों भक्तों के बीच मुंजरा और अमे अमारे घेर जइये रे माँ जय अम्बे ।मां बोल्यु चाल्यु माफ करो ने माँ जय अम्बे की आराधना के साथ नवरात्रि महोत्सव को विदाई दी।

-श्रीमती मंजू प्रमोदराय झा
बांसवाड़ा (राज.)

प्रियल नागर को सुयश

सुपुत्री सौ.सीमा–आलोक नागर उज्जैन को 'अपना उज्जैन' द्वारा आयोजित सिंहस्थ 2016 चित्रकला जिला स्तरीय प्रतियोगिता में सीनियर वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। उनकी इस उपलब्धि पर उन्हें कलेक्टर कविन्द्र कियावत द्वारा सम्मानित किया गया।

नागर परिवार उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

नागर परिवार ऋषि नगर, भाटगली, उज्जैन

मेहता परिवार (महू)

NAYAN SHARMA MAKDONE

29 November

सुपुत्र–

महेन्द्र कुमार शर्मा

सौ.सुनीता शर्मा

दादीजी श्रीमती कोमल

सुरेन्द्र शर्मा

मुरलीधर–सौ.शारदा शर्मा, सौ.पुष्पा–चन्द्रशेखर नागर

विजय–सौ.कुसुम शर्मा, सौ.आशा–आशीष नागर

शुभम, अर्पणा (पींकू), प्रतीभा (चिंकू),

शिवम, देवेन्द्र (रिंकू), आषुतोष,

प्रतिष्ठा, शामभवी (मिठी), मोक्ष (टुकटुक)

शर्मा परिवार माकड़ोन

मो.9424815705

विवाह वर्षगांठ

विनोद-तरुणा नागर (10 अक्टूबर)

एवं

पुत्र रत्न प्राप्ति

1-11-15

की बधाई शुभकामनाएँ

मो. 9977777531, 7566607906

हीरल नागर

5 दिसम्बर

सुपुत्री- नीतिन-सौ.रुपाली नागर

शुभाकांक्षी- नागर परिवार, इन्दौर, राऊ

नागर परिवार, भाटगली, उज्जैन

केशवाश्रमजी शिष्य मंडल द्वारा परम पूज्य मातुश्री स्व.राधावंती पिता श्री स्व.नानीगरामजी त्रिवेदी के शुभाशीष एवं सद् प्रेरणा से श्री सुभाषचन्द्र त्रिवेदी द्वारा भामाशाह की तरह धन एवं सेवाएं देने पर इसका नामकरण 'उमा स्मृति भवन' किया गया और तत्काल बोर्ड बनवाकर लगवाया गया।

उमा स्मृति भवन लोकार्पित

माही गंगा के पावन तट पर बसे परसोलिया और सर्वेश्वर महादेव का मंदिर जहाँ नदी में श्री केशवाश्रमजी ने जल समाधी ली और उनके चरण जिस शीला पर अंकित हो गए थे। इसीलिए स्थानीय जन उसे पगलाजी (चरण पादुका) मंदिर भी संबोधित करते हैं। इसी समाधी पर्व पर बांसवाड़ा नागर समाज संत गुरु केशवाश्रमजी का सत्संग पर्व मनाता है।

परसोलिया के आध्यात्मिक महत्व एवं प्राकृतिक सौन्दर्य के मद्देनजर वहां विधायक मद से घाटों का पुनर्निर्माण करवाया गया है। प्रतिवर्ष की भांति समाज के लोगों में भारी उत्साह था, प्रातः 9 बजे से रुद्राभिषेक, पूजा, अर्चना का कार्यक्रम दोपहर 12.30 बजे तक चलता रहा। इसी बीच दीनबंधु हाल के ऊपर नवनिर्मित हाल के लोकार्पण की तैयारियां भी चल रही थी। केशवाश्रमजी शिष्य मंडल द्वारा परम पूज्य मातुश्री स्व.राधावंती पिता श्री स्व.नानीगरामजी त्रिवेदी के शुभाशीष एवं सद् प्रेरणा से श्री सुभाषचन्द्र त्रिवेदी द्वारा भामाशाह की तरह धन एवं सेवाएं देने पर इसका नामकरण 'उमा स्मृति भवन' किया गया और तत्काल बोर्ड बनवाकर लगवाया गया। तय कार्यक्रम के अनुसार सायं 4 बजे भक्तगण हाल में एकत्रित हुए। श्री राधावल्लभ धाम (श्रीजी) के कंठीधारी सेविका जिनका भामाशाह त्रिवेदीजी आदर करते हैं उन्होंने काले पत्थर पर अंकित पट्टिका से पर्दा हटाकर उसे लोकार्पित किया। श्री उत्पल त्रिवेदी ने अपने कुलगुरु हीत हरिवंशजी, अपनी दादी, दादाजी और मातुश्री उमादेवी के चित्र पर माल्यार्पण कर पूजा-अर्चना के

कार्यक्रम को आगे बढ़ाया, सभी पंडितों का पुष्पहारों से स्वागत कर पोथी पूजन के पश्चात् गोपाल सहस्त्रनाम और विष्णु सहस्त्रनाम जाप आरंभ हुआ।

कार्यक्रम को इस तरह संयोजित किया गया कि वह रात्रि को आरती तक चलता रहे। श्री सुभाषचन्द्र त्रिवेदीजी ने स्वयं गुरुवर हीतहरिवंशजी और राधावल्लभ मंदिर के भजन से कार्यक्रम आरम्भ किया। महिलाओं द्वारा श्री दुर्लभरामजी के भिलुड़ा के गीतों की प्रस्तुति आरंभ हुई।

श्री गजेन्द्र पंड्या, श्री शंकरप्रसाद पंड्या, कमल भाई याज्ञिक और महेश्वर झा ने श्री केशराश्रमजी के भजनों के साथ श्री दीनबंधुदासजी की संगीतमय जीवनी गुरुअष्टक और अन्य प्रस्तुतियां दी। अंत में मंदिर में धराया गया हार और शाल को प्रसादी स्वरूप श्री त्रिवेदीजी को भेंटकर उनका सम्मान किया गया। आरती के पश्चात् पिताम्बर धारणकर सभी जातिबंधुओं से महाप्रसाद का आग्रह किया। महाप्रसादी में पूर्णतः गौघृत से तैयार हलवा, दाल, सब्जी, पूरी के भोज

के पश्चात सभी विसर्जित हुए। इस कार्यक्रम की शोभा श्री सुभाषचन्द्र त्रिवेदी से ही थी, उनकी शिक्षा बांसवाड़ा में ही हुई, परन्तु रोजगार हेतु कोलकाता गए जहाँ सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की नेताजी मार्ग मुख्य शाखा से खजांची के पद पर कार्य प्रारंभ किया, वहां चल रही नक्सली आंदोलनों के फलस्वरूप बांसवाड़ा के सभी नागरों ने मध्यप्रदेश और गुजरात की तरफ स्थानांतर की मांग कर उधर का रुख कर लिया, श्री त्रिवेदी भी रतलाम, नीमच, आलोट और कुन्दनपुर में विभिन्न पदों पर रहे। सादगी और मितव्ययिता को अपनी जीवन शैली बनाकर मिलनसार स्वभाव से सबका दिल जीता। कुंदनपुर शाखा में ब्रांच इचार्ज की हैसियत से कार्य करते हुए लोन मेले और बढ़ते राजनीतिक हस्तक्षेप से परेशान होकर सेवानिवृत्ति ली तथा सामाजिक कार्यों की तरफ अपना रुझान बनाया। गोसेवा का संकल्प लेकर गौशालाओं में सेवाएं दी। चिकित्सा में बायोकेमिक और गोमुत्र चिकित्सा का प्रचार-प्रसार किया। कृषि भूमि क्रम करके कृषि से जुड़ने और सुधारों का श्रीगणेश किया, यही नहीं समाज के लोगों की आवास की समस्या के निराकरण हेतु श्री अरविन्द दवे से जुड़े और बहुमंजिला भवन आश्रय की आधारशिला रखी, अभी भी अन्य लोगों से सम्पर्क कर नागरवाड़ा में जमीन प्राप्त कर वहाँ निर्माण उनकी प्राथमिकता है। अपनी रुचि और हाल के लिए सुन्दर स्थान उपलब्ध होना प्रेरणा का कार्य कर गया और स्वयं भामाशाह बनकर 'उमास्मृति भवन' को मूर्तरूप देने में जुट गए उन्हें और उनके परिवार को प्रसन्नता है कि उनका स्वप्न पूरा हो गया और भवन श्री केशवाश्रमजी के चरणों में भेंट हो गया।

-प्रमोदराय झा, बांसवाड़ा (राज.)

जामनगर के नवरात्रि उत्सव में भावनगर की श्रीमती पंड्या मुख्य अतिथि

गुजरात के जामनगर शहर में नवरात्रि के 18 अक्टूबर 2015 के वृहद आयोजन में भावनगर की ब्राह्मण एवं लोकप्रिय समाज सेवी श्रीमती मधुबेन पंड्या मुख्य अतिथि के रूप में निमंत्रित थी। आयोजन की विशेषता बैठे गरबों का गायन भी था, जिसमें अनेक महिला सदस्यों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। ज्ञातव्य है कि जामनगर महिला मंडल 12 वर्ष से कम आयु की कन्याओं के लिए 'गरबी' का गत 50 वर्षों से नियमित आयोजन करता है। श्रीमती मधुबेन पंड्या ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कार्यकर्ता बहनों की एकता, सहकार, प्रतिभा एवं व्यवस्थापकीय क्षमता की भूरि-भूरि प्रशंसा की। आयोजक श्रीमती उर्वशी बेन वैष्णव तथा श्रीमती उर्मिला बहन मेहता ने सफल संचालन के लिए धन्यवाद दिया। **-श्री रश्मिभाई पाठक, भावनगर, (गुज.)**

एक कंजूस को बिजली का करंट लग गया....

बीवी: आप ठीक तो हैं ना ?

फालतू की बात छोड़ मीटर देख के बता यूनिट कितना बढ़ा....

प्रेमिका - जानू तुम हफ्ते में कितनी बार शेव करते हो ?

प्रेमी - मैं तो दिन में 20-30 बार शेव करता हूँ !

प्रेमिका - पागल हो?

प्रेमी - मैं तो **नाई** हूँ !

सभी समाज बंधुओं का हार्दिक अभिनन्दन

भोलेनाथ फर्निचर

मोतिश राईस मिल मात-गिरणी, वीर सावरकर रोड़, विरार (पूर्व)

Harish Nagar : 06650 26609
Ashok Nagar : 95616 46174
Suresh Nagar : 77580 09299

चैन्नई में दीपावली मिलन समारोह सम्पन्न

चैन्नई में समस्त नागर परिवारों ने मिलकर दीपावली के पश्चात रविवार को दीपावली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में चैन्नई के सभी नागर परिवारों ने एकत्र होकर भगवान का पूजन, आरती एवं भोजन का आनन्द लिया।

नवचंडी महोत्सव सम्पन्न

श्री नागर समस्त शालीहोत्र (आसोटिया) परिवार द्वारा श्री चामुंडा माताजी मंदिर खेजडला नगरे (राज) में नवचंडी महोत्सव का आयोजन 19 नवम्बर 2015 को किया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत यज्ञ महोत्सव 18 नवम्बर सायं से 20 नवम्बर प्रातः तक चला। प्रातः 9 बजे यज्ञ प्रारंभ हुआ, ध्वजा पूजन, नवग्रह हवन, दुर्गासप्तशती हवन, देवी महापूजन, पूर्णाहुति महाआरती के पश्चात् सायं 5 बजे महाप्रसादी का आयोजन किया गया। महोत्सव के निमंत्रक गं. स्व.सगीबेन भूरमलजी (तखतगढ़) स्व.सुन्दर बेन अमीचंदजी, पुत्र-नथमल, मदनलाल, कांतिलाल, किशोर कुमार, सुरेश कुमार, श्यामलाल, चन्द्रकांत, सहपरिवार एवं मुख्य हवन के यजमान स्व.श्री मोहनलालजी हजारीमलजी, श्रीमती इंदुबेन बाबूलालजी पुत्र- सौरभ कुमार, मिहिर, पौत्र- प्रांजल, गुनगुन सहपरिवार डायलाणा हाल मुकाम नरोड़ा रहे। सभी शालीहोत्र बंधुओं ने महोत्सव में तन-मन-धन से सहयोग दिया।

भीनमाल में अन्नकूट महोत्सव सम्पन्न

भीनमाल (राज.) में वहरश्याम मंदिर में अन्नकूट का आयोजन किया गया। जिसमें नगर के सभी नागर ब्राह्मण समाज के सदस्य एकत्र हुए एवं आरती एवं प्रसाद का आनन्द लिया।

उज्जैन में श्री हाटकेश्वर धाम में आयोजित अन्नकूट समारोह की चित्रमय झलकियां

सहस्त्रधारा अभिषेक कर श्री हाटकेश्वर को लगाया अन्नकूट का भोग

नागर ब्राह्मण हाटकेश्वर न्यास (हरसिद्धि पाल) के तत्वावधान में एवं अन्नकूट महोत्सव समिति के संयोजन में श्री हाटकेश्वर धाम में दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें प्रथम दिवस संगीतमय सुंदरकांड पं.अजय व्यास एवं मण्डली द्वारा किया गया। जिसका समाजजनों एवं धर्मालुजनों ने आनंद लिया। वहीं द्वितीय दिवस महिलाओं और युवतियों द्वारा आकर्षक रांगोली बनाई गई। समाजसेवी विजयप्रकाश मेहता, ललीत नागर, मनोहरलाल शुक्ल से सपत्निक सहस्त्र धारा अभिषेक पं.सतीष नागर ने विधिविधान के साथ सम्पन्न करवाया।

इस आयोजन में श्री हाटकेश्वर के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन पंडितों द्वारा स्वस्ति वाचन के साथ डॉ.जी.के. नागर, डॉ.प्रदीप व्यास, सुरेन्द्र मेहता सुमन, जमनाप्रसाद पाठक, रमेश मेहता प्रतिक, श्रीमती रमा मेहता, श्रीमती तृप्ति देवेन्द्र मेहता, अमित नागर, विकास रावल द्वारा किया गया। गणेश वंदना श्रीमती तृप्ति-महेश नागर द्वारा प्रस्तुत की गई। जिसके पश्चात् अन्नकूट दर्शन जय हाटकेश घोष के साथ किया गया। कार्यक्रम में स्वागत भाषण कार्यक्रम संयोजक अमित नागर द्वारा दिया गया। विगत 4 वर्षों से सफल अन्नकूट महोत्सव की जानकारी युवा समाजसेवी मनीष मेहता ने प्रस्तुत की। इसके साथ ही हाटकेश्वरधाम में आय-व्यय की जानकारी न्यास के कोषाध्यक्ष रामचन्द्र नागर द्वारा प्रस्तुत की गई।

श्री हाटकेश्वरधाम की प्रगति एवं भावी योजनाओं की विस्तृत जानकारी सचिव संतोष जोशी ने प्रदान की। कार्यक्रम में अध्यक्षीय उद्बोधन न्यास के अध्यक्ष सुरेन्द्र मेहता सुमन द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन गोविन्द नागर ने किया। वहीं आभार संजय जोशी ने माना। इस आयोजन में उज्जैन नगर के साथ ही रतलाम, देवास, शाजापुर, नागदा, इटावा, तराना, घट्टिया, राऊ, इन्दौर व अन्य स्थानों से पधारे समाजजनों ने भाग लिया।

इनका हुआ सम्मान-श्री हाटकेश्वर धाम में विशेष सहयोग प्रदान करने के लिये श्रीमती संगीता दीपक शर्मा इन्दौर, पवन शर्मा इन्दौर, श्रीमती शैल विजय प्रकाश मेहता नागदा, श्रीमती मधुलिका विकास रावल उज्जैन, मनीष मेहता एवं इनकी युवा टीम, पं.अजय व्यास एवं सुंदरकाण्ड मण्डली के साथ ही जमनाप्रसाद शुजालपुर वाले का श्रीफल, दुपट्टा एवं स्मृतिचिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

श्री हाटकेश्वर धाम में दानराशि भेंट

5,001/- : श्री नवीनकृष्णजी व्यास ग्वालियर, स्व.पिताश्री सूर्यकांतजी व्यास की स्मृति में भेंट
35,000/- : श्री बाबूलालजी शर्मा वरिष्ठ न्यासी सदस्य, देवास
स्व.मातुश्री केसरबाई रुपाखेड़ी की स्मृति में (कमरा निर्माण पेटे पूर्व में 26,000/- जमा किये।)
14,000/- : श्री सुरेन्द्र मेहता 'सुमन' (अध्यक्ष) श्री हाटकेश्वर धाम उज्जैन (कमरा निर्माण की शेष राशि जमा)
स्व.माता पिताश्री श्रीमती बसंती बाई- श्री गोवर्धनलालजी मेहता की स्मृति में
2,100/- : श्री रामलालजी दवे लुनेरा रतलाम
611/- : श्री मनोहरलालजी भंडारी डेलची घोषणा की शेष राशि पूर्व में 500/- जमा
10,000/- : श्री रामगोपालजी नागर, सुतारखेड़ा (देवास) घोषणा की शेष राशि पूर्व में 1100/- जमा
10,351/- : श्री विष्णुदत्तजी नागर (शर्मा) शाजापुर (चेक) स्व.मातुश्री धापूबाई नागर की स्मृति में
5,000/- : श्री रामकिशनजी घनश्यामजी नागर गोईखेड़ी शाजापुर, स्व.पिताश्री स्मृति में (घोषणा राशि जमा)
1 एलसीडी : श्री उमाशंकरजी रावल खजराना (एलसीडी 32 इंच की घोषणा) प्रदान की।
11,000/- : श्रीमती अल्पना शुक्ल द्वारा स्व.पतिश्री कमलेश शुक्ल की स्मृति में
(इनके पुत्र श्री श्रेयांश शुक्ल की रेल्वे सर्विस की प्रथम वेतन की राशि बर्तन खरीदने हेतु)
कूलर- श्रीमती मीना-लीलाधरजी मेहता मड़ावदा

श्री बाबूलाल शर्मा, देवास

राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन 24 एवं 25 दिसम्बर को उज्जैन में

मध्यप्रदेश नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति के तत्वावधान में 38 वें राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन उज्जैन में किया जाएगा।

24 दिसम्बर 2015 को समिति के संस्थापक स्व.श्री विष्णुप्रसादजी नागर की स्मृति में समिति की सांस्कृतिक इकाई अभिरूचि विकास मंच द्वारा सांस्कृतिक समारोह का आयोजन होगा, जो मध्यप्रदेश नागर ब्राह्मण परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री राजेश त्रिवेदी 'टमटा' द्वारा प्रायोजित होकर उनके पिता एवं वरिष्ठ समाजसेवी स्व.श्री दुष्यन्तजी त्रिवेदी को समर्पित रहेगा।

25 दिसम्बर 2015 को प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा। उक्त जानकारी देते हुए समिति के सचिव श्री अशोक व्यास एवं सहकोषाध्यक्ष श्री किरणकान्त मेहता ने बताया कि विगत् वर्षों के अनुसार इस वर्ष भी आमंत्रण पत्र नहीं छपवाये गये हैं। नागर ब्राह्मण समाज के दो दिवसीय समारोह में समस्त नागर ब्राह्मण परिवार सादर आमंत्रित है। ये आयोजन आप सबके स्नेह, सहयोग, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से प्रतिवर्ष 24 एवं 25 दिसम्बर को किये जाते हैं।

पुरस्कार प्राप्त करने हेतु चयनित छात्र-छात्राओं को पत्र भेजे जाएंगे। पुरस्कार एवं कार्यक्रम सम्बंधी जानकारी हेतु समिति के अध्यक्ष श्री रमेश मेहता 'प्रतीक' 530, सेठी नगर उज्जैन मोबाइल क्रमांक 9425093702 से सम्पर्क कर सकते हैं।

यह उल्लेखनीय है कि दानदाताओं से प्राप्त राशि बैंक में सावधि जमा है, जिससे प्राप्त ब्याज का ही उपयोग समिति आयोजन हेतु करती है। अतः समस्त नागर ब्राह्मणजनों से समारोह में सहयोग एवं सहभागिता हेतु अनुरोध है। जिससे छात्र-छात्राओं का उत्साहवर्धन होकर समारोह की गरिमा बढ़े।

म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभाशाली छात्र प्रोत्साहन समिति, उज्जैन

प्रतिभा सम्मान समारोह दि. 25-12-2015 हेतु चयनित छात्र-छात्राओं की सूची

क्र.	कक्षा	छात्र/छात्रा का नाम	पिता का नाम	स्थान	प्राप्तांक प्रतिशत	पुरस्कार
1.	नर्सरी	लक्ष्य मिश्रा	नवीन मिश्रा	उज्जैन	95.00	प्रथम
2.	नर्सरी	कौमुदी व्यास	अम्बर व्यास	उज्जैन	74.93	द्वितीय
3.	नर्सरी	कैरवी मेहता	भरत मेहता	उज्जैन	70.66	तृतीय
4.	केजी I	दिव्यांशी नागर	मनोज नागर	उज्जैन	97.00	प्रथम
5.	केजी II	सप्त मेहता	संदीप मेहता	उज्जैन	98.00	प्रथम
6.	केजी II	कौशल शर्मा	मनीष शर्मा	उज्जैन	88.25	द्वितीय
7.	केजी II	प्रियांशी जोशी	संजय जोशी	उज्जैन	85.50	तृतीय
8.	पहली	आराध्य व्यास	संजय व्यास	उज्जैन	99.00	प्रथम
9.	पहली	अन्वी व्यास	कृष्णकांत व्यास	उज्जैन	98.33	द्वितीय
10.	पहली	माही मेहता	सूरज मेहता	उज्जैन	95.00	तृतीय
11.	पहली	त्वरित नागर	मनोज नागर	उज्जैन	95.00	तृतीय
12.	दूसरी	सुनिधि मेहता	डॉ.नवीन मेहता	उज्जैन	95.00	प्रथम
13.	दूसरी	गौरव शर्मा	लक्ष्मीकांत शर्मा	उज्जैन	95.00	प्रथम
14.	दूसरी	अरण्या नागर	संदीप नागर	उज्जैन	95.00	प्रथम
15.	दूसरी	भव्य नागर	राजकमल नागर	उज्जैन	95.00	प्रथम
16.	दूसरी	स्नेहा व्यास	मनोज व्यास	उज्जैन	92.00	द्वितीय
17.	दूसरी	आस्था मेहता	गिरीश मेहता	उज्जैन	87.25	तृतीय
18.	तीसरी	आकृति मेहता	सुनील मेहता	उज्जैन	85.00	प्रथम
19.	तीसरी	अक्षत नागर	गिरीश नागर	उज्जैन	76.10	द्वितीय
20.	तीसरी	वंशिका नागर	अभिलाष नागर	उज्जैन	64.60	तृतीय

21.	चौथी	मेघा नागर	शैलेन्द्र नागर	उज्जैन	95.00	प्रथम
22.	चौथी	राजनिधि मेहता	डॉ. धर्मेन्द्र मेहता	उज्जैन	83.60	द्वितीय
23.	चौथी	आस्था जोशी	संजय जोशी	उज्जैन	81.70	तृतीय
24.	पाँचवी	कृतिका नागर	विशाल नागर	उज्जैन	97.40	प्रथम
25.	पाँचवी	रचित नागर	हिमांशु नागर	उज्जैन	95.00	द्वितीय
26.	अथर्व नागर	अवनीश नागर	उज्जैन	90.57	तृतीय	
27.	छठी	सौरभ शर्मा	लक्ष्मीकांत शर्मा	उज्जैन	90.25	प्रथम
28.	छठी	प्रियांश नागर	गोविन्द नागर	उज्जैन	82.85	द्वितीय
29.	छठी	परिधि मेहता	अभिलाष मेहता	उज्जैन	81.33	तृतीय
30.	सातवीं	आयुषी नागर	विनोद नागर	उज्जैन	87.50	प्रथम
31.	सातवीं	सुयोग व्यास	सुदीप व्यास	उज्जैन	80.75	द्वितीय
32.	सातवीं	हितेषी शर्मा	डॉ. मनोज व्यास	उज्जैन	79.13	तृतीय
33.	आठवीं	पूनम व्यास	मनोज व्यास	उज्जैन	96.88	प्रथम
34.	आठवीं	प्रियांशी नागर	गोविन्द नागर	उज्जैन	70.15	द्वितीय

म.प्र.स्तरीय स्व.पं.सत्यनारायणजी त्रिवेदी पुरस्कार (श्री योगेन्द्र त्रिवेदी, उज्जैन द्वारा)

35.	आठवी	पूनम व्यास	मनोज व्यास	उज्जैन	96.88	प्रथम
36.	आठवी	कोमलिका रावल	महेश रावल	रतलाम	89.44	द्वितीय
37.	आठवी	मोक्षदा नागर	मनमोहन नागर	देवास	88.35	तृतीय

स्व.श्री विनायकलालजी मेहता (पोस्ट मास्टर सा.) स्मृति पुरस्कार (अंशुल रमेश मेहता उज्जैन द्वारा) कक्षा 9वीं प्रथम पुरस्कार

38.	नवीं	चिन्मय पाण्डेय	हरीश पाण्डेय	मक्सी	98.00	प्रथम
39.	नवीं	चिरायु मेहता	हर्ष मेहता	इन्दौर	95.00	द्वितीय
40.	नवीं	रोशी मेहता	डॉ. राजेशकुमार मेहता	उज्जैन	95.00	द्वितीय
41.	नवीं	यश त्रिवेदी	ललित त्रिवेदी	महिदपुर	91.33	तृतीय

स्व.मुखियाजी श्री कृष्णदासजी मेहता स्मृति पुरस्कार (श्रीमती सावित्री मेहता, शाजापुर द्वारा)

42.	दसवीं	चिन्मय नागर	राजेन्द्र नागर	शाजापुर	95.00	प्रथम
43.	दसवीं	हिमांशु नागर	मनमोहन नागर	देवास	89.30	द्वितीय
44.	दसवीं	संध्या शर्मा	दिलीपकुमार शर्मा	नागदा	86.66	तृतीय
45.	यशदीप पण्डया	विजय पण्डया	रतलाम	86.50	प्रोत्साहन	

स्व.पटेल श्री दुर्गाशंकरजी नागर, स्व.श्रीमती मनोरमा नागर एवं स्व.श्री बद्रीलालजी नागर, लसूर्डिया ब्राह्मण स्मृति डी.एन.बी.पुरस्कार (श्री अनिल नागर वनसंरक्षक, होशंगाबाद द्वारा) कक्षा 11वीं के समस्त पुरस्कार

46.	11वीं विज्ञान	ख्याति मेहता	आशीष मेहता	इन्दौर	83.40	प्रथम
47.	11वीं विज्ञान	अंजलि त्रिवेदी	ललित त्रिवेदी	महिदपुर	83.00	द्वितीय
48.	11वीं विज्ञान	शैली शर्मा	शलभ शर्मा	उज्जैन	67.20	तृतीय
49.	11वीं वाणिज्य	नमन नागर	ओमप्रकाश नागर	शाजापुर	84.00	प्रथम
50.	11वीं वाणिज्य	अक्षिता मण्डलोई	राजीव मण्डलोई	खंडवा	84.00	प्रथम

स्व.समरथलालजी मेहता स्मृति छात्रवृत्ति (श्रीमती श्रृंगार बेन मेहता, उज्जैन द्वारा) (12वीं में सर्वाधिक अंक प्राप्त होने पर)

51.	12वीं विज्ञान	भव्य रावल	पंकज रावल	भोपाल	93.20	प्रथम

52.	12वीं विज्ञान	आयुष नागर	विजयकुमार नागर	रिछा (मंदसौर)	90.00	द्वितीय
53.	12वीं विज्ञान	अनुराधा शर्मा	कैलाशचन्द्र शर्मा	नागदा	89.40	तृतीय

स्व.कु लिपि दवे सुपुत्री श्रीमती नीता-अजय दवे जयपुर स्मृति पुरस्कार (श्रीमती सुनीता-डॉ.यज्ञनारायणजी मेहता, श्रीमती ममता-अक्षय मेहता, इन्दौर एवं श्रीमती कुमुद-जयेन्द्र व्यास, सुरत द्वारा) 12वीं वाणिज्य प्रथम पुरस्कार

54.	12वीं वाणिज्य	शिवेश शर्मा	मुकेश शर्मा	उज्जैन	90.20	प्रथम

स्व.कु.लिपि दवे, जयपुर स्मृति पुरस्कार (श्रीमती नीता-अजय दवे, जयपुर द्वारा) 12वीं वाणिज्य का द्वितीय पुरस्कार

55.	12वीं वाणिज्य	रिद्धि नागर	अमित नागर	रतलाम	88.00	द्वितीय

स्व.कु.लिपि दवे जयपुर स्मृति पुरस्कार (श्रीमती रीता-जगदीश मेहता द्वारा 12वीं वाणिज्य तृतीय पुरस्कार

56.	12वीं वाणिज्य	भूमिका त्रिवेदी	नीलकमल त्रिवेदी	मंदसौर	87.60	तृतीय
57.	डीसीए	विशाल नागर	त्रिलोकेश नागर	उज्जैन	69.57	प्रथम

स्व.कु.सीमा त्रिवेदी स्मृति पुरस्कार (श्री कृष्णशंकर त्रिवेदी, धार द्वारा) (बी.एस.सी. में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को)

58.	बी.एस.सी.	पूर्वा नागर	राकेश नागर	उज्जैन	75.67	प्रथम
59.	बी.एस.सी.	आयुषी मेहता	अशोक मेहता	रतलाम	68.74	द्वितीय
60.	बी.बी.ए.	रक्षित मेहता	नवनीत मेहता	रतलाम	62.15	प्रथम

स्व.डॉ.चुन्नीलालजी शर्मा एवं स्व.श्रीमती अन्नपूर्णा शर्मा स्मृति पुरस्कार (श्री विजय शर्मा उज्जैन द्वारा बी.फार्मा में प्रथम छात्र/छात्राओं को)

61.	बी.फार्मा	ईशा मेहता	संजय मेहता	उज्जैन	79.70	प्रथम

स्व.संजय व्यास स्मृति पुरस्कार (श्री आशीष कृष्ण गोपाल व्यास, उज्जैन द्वारा बी.ई. में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर)

62.	बी.ई.	आरुषि नागर	सुभाष नागर	शाजापुर	76.60	प्रथम
63.	बी.ई.	पलक मेहता	महेश मेहता	उज्जैन	75.80	द्वितीय
64.	बी.ई.	मोनिका पण्डया	विजय पंड्या	रतलाम	75.30	तृतीय

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व.श्री किशोर भाई त्रिवेदी स्मृति पुरस्कार (श्री दिलीप त्रिवेदी उज्जैन द्वारा बी.एड. प्रथम पुरस्कार)

65.	बी.एड.	वर्षा नागर	मोहनलाल नागर	गंधर्वपुरी	70.25	प्रथम
66.	बी.एड.	दिव्या नागर	राजकुमार शर्मा	देवास	70.00	द्वितीय
67.	बी.एड.	सुजाता मेहता	कृष्णकान्त मेहता	उज्जैन	64.40	तृतीय

स्व.श्री भगवन्तरावजी मण्डलोई (पूर्व मुख्यमंत्री म.प्र.) स्मृति स्नातकोत्तर पुरस्कार (श्री अमिताभ मण्डलोई, खण्डवा द्वारा)

68.	एम.एस.सी.	प्राची मेहता	राघवेन्द्र मेहता	देवास	76.29	प्रथम
69.	एम.एस.सी.	प्रज्ञा व्यास	संजय व्यास	उज्जैन	66.31	द्वितीय
70.	एम.ई.	नवनीत नागर	ललित नागर	उज्जैन	82.20	प्रथम
71.	एल.एल.एम.	नवेन्दु जोशी	डॉ.संदीप जोशी	उज्जैन	64.50	प्रथम
72.	एम.बी.ए.	अभिषेक नागर	मोहन नागर	उज्जैन	75.90	प्रथम
73.	एम.बी.ए.	निकिता नागर	राजेश नागर	उज्जैन	61.35	द्वितीय
74.	पीजीडीसीए	अंतिमा मेहता	विजयकुमार मेहता	रतलाम	63.70	प्रथम
75.	संगीत कला प्रवेशिका	कृतिका मेहता	दीपक मेहता	उज्जैन	96.00	विशेष

76.	संगीत कला प्रवेशिका	मंत्र नागर	संजय नागर	उज्जैन	72.28	विशेष
77.	संगीत कला मध्यमा (वादन)	मंत्र नागर	संजय नागर	उज्जैन	7050	विशेष
78.	संगीत कला विद्	डॉ.तृप्ति नागर	महेश नागर	उज्जैन	82.33	विशेष उपलब्धि
79.	बास्केट बाल (विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व)	विनय नागर	त्रिलोकेश नागर	उज्जैन	गौरव चिन्ह	विशेष
80.	राज्यस्तरीय शालेय खेलकूद प्रतियोगिता हैण्डबाल	आदर्श रावल	विजयकुमार रावल	रतलाम	द्वितीय स्थान	विशेष
81.	कैंसर शोधकार्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	नेहा शुक्ल	लोकेश शुक्ल	उज्जैन	प्रथम स्थान	विशेष
82.	इंटरनेशनल ओलंपियाड (अंग्रेजी)	भव्य नागर	राजकमल नागर	उज्जैन	स्वर्ण पदक	विशेष
83.	इंटरनेशनल ओलंपियाड (गणित)	भव्य नागर	राजकमल नागर	उज्जैन	रजत पदक	विशेष
84.	मिलेनियम नेशनल स्कालरशीप परीक्षा	आराध्य व्यास	संजय व्यास	उज्जैन	ए ग्रेड	विशेष
85.	मिलेनियम नेशनल स्कालरशीप परीक्षा	अथर्व व्यास	शैलेन्द्र व्यास	उज्जैन	ए ग्रेड	विशेष
86.	मिलेनियम नेशनल स्कालरशीप परीक्षा	हेमांग नागर	राहुल नागर	उज्जैन	ए ग्रेड	विशेष

विशिष्ट पुरस्कार- आशा-विष्णु स्वर्णपदक (श्रीमती आशा-विष्णुप्रसादजी, उज्जैन द्वारा) (समिति द्वारा पाँच बार पुरस्कृत होने पर)- 1. वैदिक त्रिवेदी आत्मज- श्री संजय-राधा त्रिवेदी उज्जैन, 2. कनिष्क मिश्रा आत्मज- श्री मनोज-हर्षा मिश्रा उज्जैन, 3. मौलेश नागर आत्मज- डॉ.धर्मेश नागर, उज्जैन

गणकला रजत पदक (स्व.श्री गणगौरीलालजी एवं स्व.श्रीमती कलावती मेहता की स्मृति में श्री जगदीश मेहता श्रीमती रीता मेहता एवं परिवार द्वारा)- 1. कु.कृतिका नागर आत्मजा- श्री विशाल-रीना नागर, उज्जैन कक्षा 5वीं में प्रथम, 2. कु. पूनम व्यास आत्मज- श्री मनोज व्यास-आशा व्यास उज्जैन म.प्र. स्तरीय कक्षा 8वीं में प्रथम

स्व.श्रीमती हेमकान्ता दामोदरजी मेहता स्मृति मंजूषा (श्री किरणकान्त मेहता एवं श्रीमती शशिकला रावल द्वारा)- 1. हायस्कूल स्तर - चिन्मय नागर, शाजापुर, 2. हायर सेकण्डरी स्तर - भव्य रावल, भोपाल, 3. विश्वविद्यालयीन स्तर - नवनीत नागर, उज्जैन, 4. विशिष्ट उपलब्धि (इंजीनियरिंग अनुसंधान)- हर्ष पण्डया, राजकोट

स्व.पं.श्रीकान्तजी व्यास, इकलेरा माताजी स्मृति पुरस्कार- (श्रीमती शान्ता व्यास द्वारा)- कु.ईशा मेहता आत्मजा श्री संजय मेहता, उज्जैन स्नातक स्तर पर सर्वाधिक अंक

स्व.श्री चन्द्रकान्त त्रिवेदी स्मृति पुरस्कार (श्रीमती श्यामा त्रिवेदी उज्जैन द्वारा)- हायस्कूल स्तर पर अंग्रेजी में सर्वाधिक अंक चिन्मय नागर, शाजापुर

विशेष सम्मान- विद्या भारती एएनटीटीएम शिक्षा सम्मान सर्व श्रेष्ठ प्रतिभा 2015- चिन्मय नागर आत्मज श्री राजेन्द्र-शोभा नागर, शाजापुर

संस्कार भारती एजेजेएम कला सम्मान-सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा 2015, 24 दिसम्बर 2015 के सांस्कृतिक समारोह से चयन

प्रोत्साहन भेंट- श्री अभिमन्यु त्रिवेदी गड़बड़ नागर उज्जैन द्वारा अपने माता-पिता स्व.श्रीमती सत्यभामा एवं श्री सुखदेवजी त्रिवेदी की स्मृति में- कक्षा पहली से आठवीं तक के छात्र-छात्राएँ, पहली- रुद्र नागर, रक्षित नागर, हार्दिक मेहता, हिरदेश नागर, आराध्य व्यास, **दूसरी-** पार्थ नागर, शिवांश नागर, अथर्व व्यास, **चौथी-** हर्षित नागर, तनय पुराणिक, प्रियांशी मनोज नागर, स्मृति मेहता, **छठी-** गौधूलि व्यास, युक्ता मेहता, सहज मिश्रा, **सातवी-** वैदिक त्रिवेदी, कनिष्क मिश्रा, चार्वी शर्मा, **आठवी-** आत्मन नागर, रेवान्त मेहता, कौस्तुभ मेहता, रितेश नागर, यश रावल, प्रियांशी गोविन्द नागर, इषिता मुकेश व्यास, **निर्णायकगण-** डॉ.के.पी. नागर, डॉ.कमलकांत मेहता, डॉ.रमाकान्त नागर, विष्णुदत्त नागर, उज्जैन, **अन्य विशेष पुरस्कार-** 1. स्व.श्री रमाकान्त नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार (श्रीमती संगीता-विनोद नागर, भोपाल द्वारा), 2. स्व.श्री विश्वनाथ मेहता स्मृति पत्रकारिता पुरस्कार (श्री ओमप्रकाश मेहता, वरिष्ठ पत्रकार भोपाल द्वारा), 3. स्व.श्री शंकरगुरु नागर, शाजापुर स्मृति सामाजिक पत्रकारिता पुरस्कार (श्री दामोदर नागर एवं श्री मधुसूदन नागर, उज्जैन द्वारा।

चंद्रमा की अमृत किरणों का सैकड़ों लोगों ने उठाया लाभ

उज्जैन। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी शरद पूर्णिमा 26अक्टूबर-15 को सायं 5 बजे से इन्दिरा सहयोगी मित्र मंडल द्वारा निःशुल्क दमा रोग चिकित्सा शिविर लगाया गया। चिकित्सा शिविर में औषधियुक्त खीर का वितरण व कर्ण वेधन चिकित्सा पद्धति द्वारा दमा रोगियों का इलाज किया गया। हनुमान भक्त मंडल इंदिरा नगर के सुरेशचन्द्र शर्मा के सहयोग से सुंदरकांड प्रारंभ किया गया।

मित्र मंडल का यह 20वाँ चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया। इस दौरान अब तक 40 हजार रोगियों ने चिकित्सा शिविर का लाभ लिया। 26अक्टूबर को आयोजित चिकित्सा शिविर में रोगियों ने रात्रि जागरण किया। जागरण हेतु हनुमान भक्त मंडल इंदिरा नगर के सहयोग से सुरेशचन्द्र शर्मा के मार्गदर्शन में सुंदरकांड किया गया। रोगियों ने भजनों के माध्यम से रात्रि जागरण किया। प्रातः 4 बजे औषधियुक्त खीर का वितरण किया जाता है। शिविर संयोजक डॉ. प्रकाश जोशी द्वारा औषधियुक्त खीर का वितरण एवं कर्ण वेधन चिकित्सा की गई। उक्त चिकित्सा आयुर्वेद के त्रिदोष सिद्धान्त पर आधारित है। दोषों को समान अवस्था में लाना ही चिकित्सा मूल उद्देश्य है। क्योंकि शरद पूर्णिमा पर चन्द्रमा सोलह कलाओं से युक्त होता है, कफ प्रधान व्याधियों का राजा चन्द्रमा होता है। चन्द्रमा की जो किरणें औषधियुक्त खीर पर पड़ती है तो स्वतः ही इस रोग को शमन करने की क्षमता आ जाती है। इसलिए खीर पीने का विधान बताया गया है। बिहार, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र तथा मालवा प्रान्त के अनेक रोगी इस चिकित्सा शिविर का लाभ ले चुके हैं।

इस चिकित्सा शिविर में डॉ. वंदना सराफ काय चिकित्सा विशेषज्ञ, डॉ. स्वाति जैन पाईल्स एवं गुदा रोग विशेषज्ञ, डॉ. निरंजन सराफ, डॉ. महेश कंडारिया, वैध सुदशन त्रिवेदी, डॉ. योगेश वाणे, डॉ. सलिल जैन, डॉ. जोगेन्द छाबड़ा ने अपनी सेवाएँ दीं। इस चिकित्सा शिविर को सफल बनाने में गौरव नागर सुपुत्र चेतन वंदना नागर, यू.एस.ए. अमेरिका से भरत मेहता, ललित नागर, देवेन्द्र मेहता, अवनिश नागर, शिवप्रसाद राय, लक्की राय, मनोज बंसल का सराहनीय सहयोग रहा एवं आयुर्वेद महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

हाटकेश्वर मंदिर पर अन्नकूट महोत्सव संपन्न

नागर ब्राम्हण समाज जिला **मंदसौर** के तत्वाधान में रविवार को मंदसौर स्थित भगवान हाटकेश्वर मंदिर पर अन्नकूट व दिवाली मिलन समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे।

प्राप्त जानकारी के अनुसार सर्वप्रथम पं. सुनिल नागर व पं. मुरली नागर के आचार्यत्व में लोकेश पत्नि नेहा नागर के द्वारा भगवान हाटकेश्वर का अभिषेक पूजन संपन्न हुआ। तत्पश्चात उपस्थित सभी समाजजनो ने आरती में भाग लिया। इसी कड़ी में सामूहिक अन्नकूट महाप्रसादी का कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्यरूप से गोविंद नागर, प्रभाशंकर मेहता, कमल मेहता, सुनिल मेहता कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व पूर्व अध्यक्ष बाबूलाल नागर एवं महिलाशक्ती में श्रीमती मधुबाला मेहता, अलका नागर, निर्मला नागर, संगीता नागर, कलावती नागर। युवा परिषद में विष्णु नागर, मोहन नागर, योगेन्द्र नागर, हनुमान नागर, संतोष नागर, ज्ञानसागर नागर, ओमप्रकाश नागर, प्रवीण मेहता आदि का सराहनीय सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन सचिव सतीष नागर ने किया। आभार अध्यक्ष जयेश नागर ने माना।

धनवन्तरी जयंती पर कार्यक्रम सम्पन्न

शा.धनवन्तरी आयुर्वेदिक कॉलेज के पूर्व मेडिकल ऑफिसर लब्ध स्वर्णपदक, विदेश परावृत स्व.डॉ.पं.अम्बाशंकरजी शास्त्री द्वारा संस्थापित प्रतिष्ठान केण्डिड फार्मास्यूटिकल्स में संस्था के संचालक तकनिकी वैद्य महेश त्रिवेदी द्वारा भगवान श्री धनवन्तरीजी की पूजा अर्चना कर वसुदेव कुटुम्बकम् हेतु स्वयं की मौलिक रचना द्वारा स्तुती की गई-

श्री धनवन्तरी वन्दना
पीयुष पाणीं वन्दे
पीयुष पाणीं वन्दे
बोध सम, विषम विभेद
देकर तज्ञ करें
पीयुष वाणीं वन्दे।
आदि अनादि अनन्त वेद है,
आयुर्वेद यह अमृत रूप सम
जन-जन में निहित व्याधि को,
मूल-समूल हरे
पीयुष पाणीं वन्दे
यो विधाता पुरतो वैद्याय स्मर
तस्मै नमन करे सुत अम्बाशङ्कर
आद्य चिकित्सा प्रथम ध्यान कर
यश को प्राप्त करें
पीयुष पाणीं वन्दे

-तकनिकी वैद्य महेश त्रिवेदी
ए-10/12, एम.आम.जी.
महानन्दा नगर, उज्जैन

बेटा- पापा मुझे 180 सीसी पल्सर बाईक ही लेनी हैं!

बाप- बेटा तू 180 सीसी पल्सर ले या 350 सीसी की बुलट... पीछा तूने 100 सीसी की स्कूटी का ही करना हैं!

स्व. रमाकांत नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार 2015 श्री अभिजीत व्यास को

शिक्षा के क्षेत्र में समर्पित सेवा, उत्कृष्ट योगदान और असाधारण उपलब्धियों के लिए हर साल दिया जाने वाला 'स्व. रमाकांत नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार 2015' इस बार हिमालय इंटरनेशनल स्कूल धामनोद में हिंदी और संस्कृत के शिक्षक श्री अभिजीत व्यास को दिया जाएगा। उन्हें ये पुरस्कार उज्जैन में 25 दिसम्बर को म.प्र. नागर ब्राह्मण प्रतिभा प्रोत्साहन समिति के राज्य स्तरीय वार्षिक सम्मान समारोह में प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार के रूप में सम्मान निधि, स्मृति चिन्ह और प्रशस्तिपत्र भेंट किया जाता है। यह पुरस्कार देवास के पूर्व सहायक शाला निरीक्षक स्व. रमाकांत नागर की स्मृति में उनकी बेटी एवं व्याख्याता श्रीमती संगीता विनोद नागर ने स्थापित किया है। इससे पूर्व यह पुरस्कार नागर ब्राह्मण समाज के सर्वश्री हेमंत दुबे (शाजापुर), शीलाबेन व्यास (उज्जैन), दिलीप मेहता (देवास), महेश नागर (शाजापुर), मोहन नागर (उज्जैन), कमल नागर (राजगढ़), संजय त्रिवेदी (उज्जैन), मोहनलाल नागर (राजगढ़) व मुकेश मेहता (शिवपुरी) को प्रदान किया जा चुका है।

31 मई 1973 को जन्मे श्री अभिजीत व्यास इन्दौर में नागर समाज के वरिष्ठ समर्पित सेवाभावी सदस्य एवं सेवानिवृत्त शिक्षक श्री विश्वनाथ व्यास (बाबू काका) के सुपुत्र तथा उज्जैन के श्री शांतिलाल नागर (बेरछा वाले) के दामाद हैं।

तीन विषय- हिंदी, संस्कृत व समाजशास्त्र में एम.ए. तथा बी.एड. की शैक्षणिक योग्यता लिए श्री अभिजीत व्यास 1997 से निजी शिक्षण संस्थानों में उच्च श्रेणी शिक्षक के रूप में अध्यापन कार्य कर रहे हैं। वे इन्दौर के जॉय हाईस्कूल, गुजराती गर्ल्स हायरसेकण्ड्री स्कूल, चोईथराम स्कूल, तथा आदिवासी बहुल धार जिले के कुक्षी में संकल्प इंटरनेशनल स्कूल में अपनी सेवाएँ दे चुके हैं। स्मार्ट क्लास शिक्षण पद्धति में रूचि रखने वाले श्री अभिजीत व्यास बेस्ट टीचर अवार्ड से सम्मानित हो चुके हैं।

-श्रीमती संगीता विनोद नागर 'संयोजक'
स्व. रमाकांत नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार

जय हाटकेश वाणी प्रोत्साहन योजना में सहयोगी बनें

समस्त नागर ब्राह्मण समाज की मासिक पत्रिका जय हाटकेश वाणी की आकर्षक साजसज्जा एवं बहुरंगी छपाई के लिए योजना बनाई गई है, जिसमें 3000 रु. अग्रिम जमा करवाकर वर्षभर के 12 अंकों में जब चाहे जन्मदिन, शुभकामना स्मृतिविशेष के विज्ञापन डेढ़ पेज के प्रकाशित करवा सकते हैं। चाहे तो एक और आधा, तीन आधे या छः चौथाई पृष्ठ के विज्ञापन आप छपवा सकते हैं। इसके लिए आवेदन पत्र पिछले अंकों में प्रकाशित है आप आवेदन में जब भी विज्ञापन प्रकाशित करवाना हो, उसका विवरण भर कर भेज सकते हैं।

जय हाटकेश वाणी की आकर्षक साज-सज्जा एवं बहुरंगी छपाई के सहयोगी है-

श्री पुरुषोत्तमलाल (परेश) नागर, मुम्बई
नागर सांस्कृतिक संस्था, मुम्बई
श्री आनन्द रमेशचन्द्र शर्मा, राऊ, इन्दौर

प्रमुख समाचार पत्र में छा गए प्रबल शर्मा

स्मृति शेष श्री शिवप्रसादजी शर्मा-श्रीमती प्रभादेवी शर्मा के पौत्र एवं नागर ब्राह्मण समाज के अग्रणी कार्यकर्ता श्री पवन-सौ.दूर्गा शर्मा के सुपुत्र चि.प्रबल शर्मा को इन्दौर के प्रमुख समाचार पत्र में युवा फिल्म मेकर के रूप में विशेष स्थान मिला है।

समाचार पत्र में 'शहर के फिल्म मेकर की फिल्म सिनेशाट्र्स काम्पीटिशन में शीर्षक से प्रमुखता एवं फोटो सहित समाचार प्रकाशित हुआ है। ज्ञातव्य है कि उपरोक्त फिल्म की कहानी एवं निर्देशन प्रबल शर्मा का है। यह खबर निम्नानुसार प्रकाशित हुई है-

शहर के फिल्ममेकर की फिल्म सिनेशॉट्र्स कॉम्पीटिशन में

एक फौजी के युद्ध में अपाहिज होने की कहानी है 'आखिरी तक'

YOUNG FILMMAKER

सिटी रिपोर्टर • शहर के युवा फिल्ममेकर प्रबल शर्मा ने एक युवा फौजी पर शॉर्ट फिल्म बनाई है। आखरी तक शीर्षक से बनाई गई यह फिल्म 5 मिनट की है। उन्होंने यह फिल्म सिनेशॉर्ट्स् फिल्म कॉम्पीटिशन के लिए बनाई है। वे इसे एक दिसंबर को यूट्यूब पर लॉन्च करेंगे। इसकी कहानी और निर्देशन प्रबल शर्मा ने किया है। म्यूजिक कम्पोज किया है अर्पित जोशी ने और सिनेमैटोग्राफी शकील खान ने की है। इसकी शूटिंग एमओजी लाइंस और एक फ्लैट में की गई है। इसमें फौजी का किरदार प्रबल और फौजी की पत्नी की किरदार ऐश्वर्या पुराणिक ने निभाया है।

आखरी तक साथ देने का अटूट वादा

सिटी भास्कर से बातचीत में वे कहते हैं कि यह एक रोमांटिक ड्रामा फिल्म है। यह एक ऐसे युवा फौजी की कहानी है जो युद्ध में अपाहिज हो चुका है। वह घर लौट चुका है और अपने पत्नी से बेहद मोहब्बत करता है। लेकिन अपाहिज होने का उसका दुःख इतना अहसनीय है कि वह दुःख मोहब्बत पर हावी है। उसके रात-दिन का चैन छिन चुका है और वह हमेशा आत्महत्या करने की सोचता है। उसकी पत्नी उसकी हिम्मत बढ़ाती है लेकिन वह पूरी तरह टूट चुका है। अंततः फौजी का आखरी तक साथ देने का वादा करने वाली पत्नी भी उसके साथ आत्महत्या कर लेती है।

एक फौजी का दर्द जानिए

वे कहते हैं कि मैंने यह फिल्म इस विचार से बनाई कि हमें देशभक्ति और देशप्रेम के बारे में तो बहुत बातें करते हैं कि लेकिन एक फौजी के परिवार, उसके दुःख-दर्द को बहुत कम जानते हैं। मैं इस फिल्म को अपने फ्रेंड्स को दिखा रहा हूं और फिर अपने नजदीकी लोगों को घर-घर जाकर दिखाऊंगा।

नवेन्दु जोशी ने एल.एल.एम. परीक्षा उच्चअंकों से उत्तीर्ण की

डॉ.संदीप जोशी, (प्रोफेसर, म.प्र. सामाजिक विज्ञान शोध संस्थान, उज्जैन) के सुपुत्र नवेन्दु जोशी ने एल.एल.एम. की परीक्षा निरमा विश्व-विद्यालय, अहमदाबाद से उच्च अंकों के साथ उत्तीर्ण कर समाज का गौरव बढ़ाया हैं। श्री नवेन्दु जोशी, उच्च न्यायालय इन्दौर में अभिभाषक के रूप में सेवाएं देंगे। उल्लेखनीय है कि श्री नवेन्दु जोशी के दादाजी स्व.श्री डी.आर.जोशी को बर्कतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल का विधि संकाय का प्रथम स्वर्णपदक प्राप्त हुआ था। श्री नवेन्दु जोशी को उनकी इस उपलब्धि पर परिजनों एवं मित्रों ने बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

टी.सी.एस. हेतु चयनित हुए यश मेहता

सौ.सुशीला देवी श्री उपेन्द्र नारायण मेहता सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक के पौत्र तथा सौ.गरिमा देवी यतेन्द्र मेहता (जनरल मैनेजर कुबेर लाईटिंग) देवास के सुपुत्र चि.यश मेहता बी.ई. अध्ययनरत का चयन भारत की नम्बर एक साफ्टवेयर कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेस में हो गया है। कंपनी ने केम्पस सिलेक्शन में चि.यश को बी.ई. फायनल करने के पश्चात् अगले वर्ष सेवा में लेने का लिखित वचन दिया है। उनके चयन पर समस्त परिवार एवं रिश्तेदारों ने बधाई प्रेषित की है।

-हरिनारायण नागर, वरिष्ठ पत्रकार, देवास

अभिषेक नागर को सुयश

शिक्षाविद् प्रो. बी.एल. नागर के पौत्र एवं रेणुका मोहन नागर उज्जैन के सुपुत्र अभिषेक नागर ने एम.बी.ए. की डिग्री नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी तिरुचिरापल्ली (NIT-TRICHI) तमिलनाडु से प्रथम श्रेणी में उच्च अंकों से प्राप्त की। दिनांक 22 अगस्त 2015 को सम्पन्न हुए कान्वोकेशन के गरिमामय एवं आकर्षक कार्यक्रम में उक्त डिग्री प्राप्त कर सुयश प्राप्त किया तथा समाज एवं परिवार को गौरवान्वित किया। इनका प्लेसमेंट प्रसिद्ध कम्पनी रेम्को सिस्टम चैन्नई में हुआ है तथा वे वहाँ कार्यरत है। बधाई।

प्रेषक- डॉ.राजेन्द्र नागर
मो. 9424553060

विभोर याज्ञनिक का सुयश

भारत विकास परिषद् शाखा सुभाष के तत्वावधान में अ.भा. संगीत प्रतियोगिता 15-10-15 को श्री विभोर याज्ञनिक कक्षा 8वीं ने डीएवी पब्लिक स्कूल तलवंडी कोटा से द्वितीय स्थान प्राप्त किया। श्रीमती वन्दना याज्ञिक टीजीटी (हिन्दी) सी.बी.एस.ई. परीक्षा 2015 में विद्यार्थियों के सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त किए जाने के फलस्वरूप ब्रिगेडियर जे.एस. मंगट ने प्रमाण पत्र द्वारा सम्मानित किया तथा मानव संसाधन मंत्री स्मृति ईरानी ने पत्र द्वारा श्रीमती वंदना याज्ञिक की प्रशंसा एवं सम्मान किया।

-डॉ.आर.एन. नागर
कोटा (राज.) मो.9414933810

विजय रावल कोच नियुक्त

म.ल.बा. शा. कन्या स्कूल रतलाम के व्यायाम निर्देशक श्री विजय रावल को राष्ट्रीय हैण्ड बॉल प्रतियोगिता हेतु सीनियर बालक टीम का कोच नियुक्त किया गया । श्री रावल 10 से 14 अक्टूबर तक शिवपुरी में प्रि नेशनल कैंप में मध्यप्रदेश टीम को कोचिग देने के बाद 16से 20 अक्टूबर 2015 तक वारगल (तेलंगाना) में 61 वीं राष्ट्रीय हैण्ड बॉल प्रतियोगिता में उत्कृष्ट योगदान पर विद्यालय एवम् समाज का नाम गौरान्वित किया।श्री रावल की इस उपलब्धि पर विद्यालय प्राचार्य श्री बी.के. भट्ट , जिला क्रीड़ा अधिकारी श्री आर. सी. तिवारी, श्री अमर सिंह राजपूत एवं समाज के प्रबुद्धजनो ने बधाई दी हैं।

प्रियंका शर्मा को सुयश

कु प्रियंका पुत्री श्रीमती माया-अशोक शर्मा शाजापुर ने बी एस सी (सीएस) फाईनल में 74.6: अंक प्राप्त कर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इस अवसर पर समस्त नागर परिवार ने हार्दिक बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की।

अशोक शर्मा, 75/26 आदर्श नवीन नगर, शाजापुर मो.926836591

योगिता पंड्या

10 दिसम्बर 2007
शुभाकांक्षी- पंड्या एवं व्यास परिवार
अहमदाबाद, उज्जैन,
इन्दौर फोन 0734-2517824

हिमानी शालीन दवे

9 दिसम्बर (मो. 08238048666)
मंजू प्रमोदराय झा
3 दिसम्बर (मो.09413947938)

-अभिलाषा अमित त्रिवेदी
अहमदाबाद (गुज.)

प्रथम जन्मदिन की बधाई

चि.विनय शर्मा (चिंटू)

सुपुत्र-सौ.अलका-नीरज शर्मा
6 दिसम्बर
शुभाकांक्षी- समस्त शर्मा, दुबे, डोसी परिवार, कुरावर, जामोनिया, ब्यावरा, भोपाल

कु. पूनम नागर
सुपुत्री- सौ.शीतल-बालकृष्ण नागर, मक्सी
3-12-1999

अंकुश कमलेश त्रिवेदी

9-12-15
शुभाकांक्षी- समस्त त्रिवेदी परिवार
उज्जैन मो. 9977891389

चि.अंचल रावल

(सुपुत्र- सौ.उमा-अजय कुमार रावल)
14 दिसम्बर 2004
शुभाकांक्षी- समस्त रावल परिवार, बड़ावदा, रतलाम
मो.9630013158, 9826052773

कु.भारती मेहता, कु. उमा मेहता

को जन्मदिन की बधाई
शुभाकांक्षी- नागर परिवार लसुड़िया गौरी मेहता परिवार कुंकड़ी छड़ावद
मो. 9977105628

69वाँ जन्मदिन

श्री ओमप्रकाश एस.नागर
1 दिसम्बर
शुभाकांक्षी- जितेन्द्र नागर एवं परिवार, देवास

विनोद-तरुणा नागर

10 अक्टूबर
एवं पुत्र
रत्न प्राप्ति
1-11-15
की बधाई शुभकामनाएँ
मो. 9977777531, 7566607906

विवाह वर्षगांठ

राहुल नागर एवं रुचि नागर को विवाह की तीसरी वर्षगांठ की बधाई

शुभाकांक्षी - माताजी श्रीमती ममता नागर, भाई-रोहित नागर एवं पुत्री त्रिशा नागर

द्वितीय वर्षगांठ

प्रीति धीरज रावल
25-11-2013
शुभाकांक्षी- अजय शर्मा, नामली

कन्याजन्म पर बधाई

श्री नरेन्द्र-सौ.मंजुला शर्मा के सुपुत्र चि.अतुल शर्मा-सौ.रीना सुपुत्री-श्री मदन पंडित खंडवा के यहाँ कन्या लक्ष्मीरूप में आई है, जिसका नामकरण पूर्णिमा किया गया।

-जितेन्द्र ओमप्रकाश नागर
देवास, मो.9827678692

मुंडन संस्कार

काशीपुर निवासी चि.विश्वांश नागर (सुपुत्र- श्रीमती गरिमा नागर एवं श्री अभिषेक नागर एवं सुपौत्र-श्रीमती रीता नागर एवं श्री राघवेन्द्र नागर का मुंडन संस्कार। नवम्बर 2015 काशीपुर (उत्तराखंड) में सम्पन्न हुआ।

मुहब्बत ही मुहब्बत है...

वो आशिकों के लिए मर मिटा है क्यूँ?
दिलों को क्या हो गया है जमाने में?
मैं तो चलता रहा हूँ संभलकर यहाँ
फिर आग कैसे लगी मेरे आशियाने में?
बहुत समझाया था मैंने उसे भी यारों
वो तो उलझा रहा किसी फसाने में
अब तो इबादत कर तू खुदा की बंदे
हो सके वो मिले तुझे कहीं अनजाने में
मुहब्बत ही मुहब्बत है गर सोचे,
भारती मजा आता है, गज़ल सुनाने में।

यही जिंदगी है..

दर्द है प्यार है, यही जिंदगी है
आँसू है दुलार है, यही जिंदगी है,
यहाँ कौन किसके साथ चलता है,
पतझड़ है, बहार है, यही जिंदगी है,
वो हर बार रुठकर क्यूँ जाता है?
मतलब है, संसार है, यही जिंदगी है
किस नशे में जी रहा है ये आदमी?
वक्त है, खुमार है यही जिंदगी है।
होश होते हुए भी क्यूँ, बेहोश हो रहा,
गुबार है, बेशुमार है, यही जिंदगी है।
भारती क्या करुँ, क्या-क्या न करुँ?
दर्द हजारो-हजार है, यही जिंदगी है।

-सुभाष नागर 'भारती'
अकलेरा

वैवाहिक युवक

मयंक अनिल ठाकोर
जन्मदि. 17-2-1983
10.15 पी.एम.(जयपुर)
शिक्षा-बी.एस.सी. (मॉस कम्युनिकेशन)
कार्यरत- प्रोड्यूसर (ई 24) नईदिल्ली
सम्पर्क- जयपुर
मो. 09166866890, 09871045905

गौरव लोकेन्द्र रावल
जन्मदि. 14-1-1989
4.35 रात्रि, बडनगर, उज्जैन
शिक्षा- बी.कॉम., एम.बी.ए. अध्ययनरत, कद- 5'8"
कार्यरत- आयडिया सेल्यूलर लिमिटेड
सम्पर्क- उज्जैन
मो. 9425987234, 9424014742

अमित राजेन्द्र नागर
जन्मदि.25-8-1986
11.12 ए.एम.(नरसिंहगढ़ जिला राजगढ़)
कद- 5'7"
शिक्षा- एम.बी.ए. फायनेंस
कार्यरत- संस्थापक ए.आर.डी. फायनेंशियल
सम्पर्क- मो.09303002335, 08817996879

नकुल दिलीप मेहता
जन्मदि. 11-9-1986
समय-12.33 ए.एम. (इन्दौर)
कद- 5'10" वजन- 72
शिक्षा- बी.एस.इन फायनेंस (यु.एस.ए.), एम.बी.ए. (यु.एस.ए.)
कार्यरत- फिलाडेल्फिया (यु.एस.ए.)
सम्पर्क- इन्दौर घर 0731-2550799, मो. 9893312034 (4 पीएम टू 10 पीएम)
(चि.नकुल 18 दिसम्बर से 8 जनवरी 2016 तक इन्दौर में उपलब्ध रहेंगे।

अतुल राजेन्द्र व्यास
जन्मदि. 6-8-1988
रात्रि 3.43, मड़ावदा (खाचरोद)
शिक्षा- एम.ए.
कार्यरत- फोटोग्राफी, फोटो स्टुडियो, मोबाइल पाईंट एल्बम डिजाईनर
सम्पर्क- मो.9752676965

लोकेश शरद नागर
जन्मदि. 8-5-1986,
प्रातः 5.30, मक्सी जि. शाजापुर
गोत्र- भारद्वाज, ऊँचाई- 5'8"
शिक्षा- बी.एस.सी. एवं एम.बी.ए.
कार्यरत- राष्ट्रीयकृत बैंक में
सम्पर्क- मो.9826485952, 0734-2524052

शशांक नवीन शंकर नागर
जन्मदि. 30-11-1981
12.35 ए.एम., कोलकाता, कद- 5'8"
शिक्षा- बेचलर इन कामर्स
कार्यरत- डिप्टी मैनेजर एच.डी.एफ.सी.बैंक गुवाहाटी (असम), सम्पर्क- हावड़ा पं.बंगाल
मो.09433672267, 09830582158

गौरव स्व.विजय कुमार नागर
जन्मदि. 22-9-1983
10.10 पी.एम. (लखनऊ)
शिक्षा- बी.बी.ए., एम.बी.ए.
कद- 6'
सम्पर्क- मो.09005605506

प्रवीण जगदीश नागर
जन्मदि. 24-12-1975
समय- 2.17 दोप. जबलपुर
शिक्षा- हायर सैकण्डरी
कार्यरत- प्रायवेट नौकरी
गौत्र- कश्यप, कद- 5'9"
सम्पर्क- इन्दौर मो.9926514790
(नोट- तलाकशुदा मान्य)

वैवाहिक युवती

कु. मेघा अनिल ठाकोर
जन्म दि. 16-8-1981
11.15 रात्रि (ग्वालियर)
शिक्षा- एम.एस.सी. (मॉस कम्युनिकेशन), कद- 5'6"
कार्यरत- प्रोड्यूसर समाचार प्लस नई दिल्ली
सम्पर्क- जयपुर
मो. 09166866890, 09717089349

कु.आयुषी-राजेन्द्र कुमार शर्मा

जन्मदि.17-6-1993
समय- 1.50 ए.एम., शाजापुर
शिक्षा- एम.एस.सी. अध्ययनरत
कार्यरत- प्रा. स्कूल में शिक्षिका
सम्पर्क- मोहन बड़ोदिया
मो.098932-78461, 9074730881

कु.भार्गवी लक्ष्मीलाल दशोरा
जन्मदि. 7-8-1987
शिक्षा- एम.बी.ए. (एच.आर.एंड मार्केटिंग)
कार्यरत- डेवलपमेंट (अनुभव 5 वर्ष), कद- 5'3"
वार्षिक आय- 4.5 लाख प्लस
सम्पर्क- मो.07359464946

कु.नीति विपीन कुमार त्रिवेदी

जन्मदि.16-9-1986
समय- 12.20 पी.एम. (नून)
बूंदी (राज.)
कद- 5'
शिक्षा- पीएचडी, युजीसी नेट
कार्यरत- असि.प्रोफेसर (गांधीनगर, गुजरात)
गृहनगर बांसवाड़ा सम्पर्क- 09012387178

कु.पूजा विजय कुमार जी नागर
जन्मदि.22-5-1983
(गौत्र- डालव्य)
3.40 पी.एम., स्थान- उदयपुर
(स्ट्रक्चर डिजाईन इंजीनियर)
कार्यरत- ह्यूस्टन (टेक्सास) यु.एस.
सम्पर्क- विजय कुमार नागर, मुम्बई
मो. 09987079846

विचार क्रांति की जरूरत क्यों ?

मनुष्य जैसा सोचता है, वह वैसा ही बन जाता है, अर्थात् हम भविष्य में क्या करना चाहते हैं, उसका निर्धारण या विचार आज करना जरुरी है। इसी प्रकार हम अपने समाज को कैसा बनाना चाहते हैं उसके बारे में भी विचार मंथन किया जा कर सर्वमान्य हल निकालकर उसका तुरन्त क्रियान्वयन शुरु किया जाना चाहिए। मनुष्य जीवन में आधुनिकता के चलते जो बदलाव आए हैं, उन्होंने सभी तरह से प्रभावित किया है और भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मनुष्य इतना व्यस्त हो गया है कि वह परिवार एवं समाज दोनों की उपेक्षा कर रहा है, इन बातों को लेकर चिंता तो हर जगह देखी जाती है, परन्तु सुधार के प्रयास कहीं नहीं है।

परिवार एवं समाज एक ही सिक्के के दो पहलू हैं जब परिवार सुव्यवस्थित होगा तो वह समाज को भी समुन्नत बना सकता है। प्रत्येक स्थान पर परिवारों को अलग-अलग तरह की समस्याएँ हैं कुरीतियां हैं। कुरीतियां खत्म कर परिवार को सुसंस्कारवान बनाने की आवश्यकता है, इसी विषय को लेकर हम समाज के अनेक परिवारों के सभी सदस्यों से मिले तथा उनके विचार जाने कि कैसे संगठन उन्हें आकर्षित करेगा? युवा वर्ग समाज से क्या चाहता है? ऐसे अनेक ज्वलंत प्रश्न इस विचार क्रांति में उठे है। उन सभी विषयों को अलग-अलग प्रस्तुत कर उनके बारे में विस्तृत चर्चा एवं उसका निष्कर्ष यहाँ प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

समाज के प्रबुद्धजनों से विचार विमर्श के दौरान प्रथम दृष्टया जो समस्या-समाधान सामने आए हैं, उसमें ऐसा प्रतीत होता है कि जिस प्रकार परिवार में पीढ़ियों के अंतर से जो समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं, वहीं पीढ़ी के अंतर से समाज में भी विभिन्न समस्याएं उठ खड़ी हुई है, समाज का जो वरिष्ठ तबका या नेतृत्व जिन परम्पराओं और आयोजनों को जारी किए हुए हैं, वे युवा पीढ़ी की समझ से परे हैं, इसमें तभी सुधार होगा जब उनमें आपसी तालमेल या सामंजस्य होगा। वरिष्ठ नेतृत्व युवाओं की बात को समझें, सुनें।

इसी प्रकार जो कुरीतियां हैं उनके बारे में भी जनमत तैयार किया जाए। हम सोचें कि उसमें बहुत जल्दी बदलाव हो जाएगा तो यह संभव नहीं है, परन्तु बदलाव की शुरुआत कर सोच एवं मानसिकता में परिवर्तन से यह जरुर संभव हो सकेगा। बहुत सारी बातें है उनके गुण-दोष समझे जाकर विचार-विमर्श का दौर चले। समाज को संगठित, समृद्ध बनाने का प्रयास जारी रहे, इसलिए विचार क्रांति की जरूरत है। प्रत्येक समाजजन अपने विचार इसमें प्रस्तुत करें। सही बात का सब मिलकर समर्थन करें और कोई बात गलत लगे तो उसका विरोध भी करें।

-सम्पादक

विशिष्टता से बनती है समाज की पहचान

आज हम इक्कीसवीं सदी की ओर जा रहे हैं तथा युग की जो गति-प्रगति है, उससे हमें कदमताल करना पड़ेगा, हमारे समाज में आज जो कुछ चल रहा है, या हो रहा है वे अच्छे संकेत नहीं है। समाज के लोग आज पूरे देश में फैले हुए हैं, परन्तु ब्राह्मणत्व का जो महत्वपूर्ण अवगुण कि स्वयं को श्रेष्ठ समझना, यह अवगुण न तो सम्पूर्ण ब्राह्मण समाज को जुड़ने दे रहा है, न हमारे समाज को, जबकि आज का युग संगठन का है। जो भी समाज संगठित है उन्हें सारे शासकीय-अशासकीय लाभ मिलते हैं।

जनप्रतिनिधि चयन में भी संगठित समाजों को प्राथमिकता दी जाती है, जबकि असंगठित समाजों को कोई लाभ नहीं मिलता। हालांकि हम अयाचक ब्राह्मण है किसी से कुछ नहीं मांगते, अपनी बुद्धिमत्ता एवं योग्यता से ही सब कुछ पाते हैं, भले ही शासन या प्रशासन से हमें कोई अपेक्षा न हो, परन्तु हम संगठित होकर इतने शक्तिशाली तो अवश्य रहें कि हमें नजर अंदाज भी न किया जा सके। हम जय हाटकेश वाणी के प्रचार-प्रसार के सिलसिले में पूरे देश में भ्रमण करते हैं तथा समाजजनों की व्यथा कथा से रुबरु होते हैं। कईं जगह समाजजनों में यह व्यथा है कि हमारी नागर ब्राह्मण के रूप में क्या पहचान है?

नागर उपनाम तो वैश्य, क्षत्रिय एवं शुद्र भी लगाते हैं, यह भी तर्क दिया जाता है कि नागर ब्राह्मण अपने उपनाम में शर्मा, जोशी, रावल, त्रिवेदी आदि का उपयोग क्यों करते हैं, इसमें हमारी पहचान कहाँ है? जबकि राजस्थान के मूल निवासी उपनाम में केवल नागर शब्द का इस्तेमाल करते हैं। आप सोचिये कि कैसे हम सब नागरजन राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना सकते हैं? ऐसा माना जाता है कि मुस्लिम शासकों के अत्याचार से तंग होकर जब नागर ब्राह्मण विभिन्न स्थानों पर पहुँचे तो उन्होंने स्थानीय रीति रिवाज तो अपनाएं तथा वहां की परिपाटी के अनुसार काम के हिसाब से उपनाम अपना लिए।

जैसे पंडिताई एवं शिक्षा का काम करने वाले, शर्मा, मुनीम गिरी या लिखा-पढ़ी करने वालों ने मेहता, भंडार का काम देखने वालों ने भंडारी उपनाम अपना लिया, उपनाम के माध्यम से संगठन या पहचान बनाने का तरीका समझ से परे इसलिए है कि आज सबसे संगठित जैन समाज में भी पाटोदी, मेहता, पोखरना आदि उपनाम लगाए जाते हैं। उसी प्रकार सम्पूर्ण ब्राह्मण समाज में प्रयुक्त किए जा रहे उपनामों के साथ हम कोष्टक में नागर लिखकर अपनी पहचान बना सकते हैं, बरसों से दादा-परदादा के जमाने से विरासत में मिले उपनामों से ही आज हमारी पहचान है, लेकिन अनेक लोग अपनी पृथक पहचान हेतु उपनाम के आगे एक ओर उपनाम लिखते हैं उसी प्रकार हम भी 'नागर' लिखें।

सवाल यह भी है कि केवल उपनाम में नागर आ जाने से हमारी पहचान बन जाएगी तो मैं 'ना' ही कहूंगी, क्योंकि हमारी वास्तविक पहचान नाम से नहीं काम से हो पाएगी और वह काम ऐसे करने पड़ेंगे जो वर्तमान समय के साथ अपील भी करें तथा अन्य समाजों का पथ-प्रदर्शन कर सके, प्रेरणा बन सकें। जैसे जैन समाज की पहचान है जगह-जगह बने उनके मंदिर और धर्मशालाएं, पाटीदार समाज ने कई रचनात्मक कार्य कर अपनी पहचान बनाई है।

बोहरा समाज, सिख समाज की क्यों पहचान है, इन समाजों के लोग यदा-कदा ही नौकरी में दिखाई पड़ते हैं। ज्यादातर लोग व्यवसाय, उद्योग में है तथा इसी क्षेत्र में अपने समाजजनों को सहयोग कर स्थापित होने में मदद करते हैं। मुस्लिम समाज की पहचान एकता एवं भाईचारा है। हमारे देश में अनेक समाज है तथा उनकी कार्यप्रणाली से उनकी पहचान है, हमें भी ऐसा ही कुछ करना पड़ेगा, सबसे पहले तो हम सब नागरजन एक हो, भले ही वे वडनगरा हो, दशोरा हो, या श्रीनगरा।

नागर ब्राह्मण यदि हैं तो एक ही जाजम पर आना पड़ेगा, क्यों हम शाखाओं में विभाजित है। यदि हम सब एक हो जाएं तो आज अंतरजातीय विवाह की जो समस्या हमारे सामने मुंह बाएं खड़ी है, वह कुछ हद तक हल हो सकती है। इसके बाद यह देखें कि जितने भी समाज समृद्ध हैं, वे व्यवसाय या उद्योग की वजह से हैं। वैश्य, जैन, माहेश्वरी, सिंधी, बोहरा, सिख ये सब व्यवसाय से ही जुड़े हैं, इनकी आय परिवार और समाज दोनों को समृद्ध बनाती है।

आज का युग पैसे का युग है और हमें भी अपनी समृद्धि के लिए व्यवसाय की ओर ही जाना पड़ेगा। इस बहस में आगे इस बारे में ओर चर्चा की जाएगी, समाज के प्रबुद्ध जनों ने भी अपने विचार दिए हैं वे भी प्रकाशित किए जा रहे हैं। इसके अलावा समाज में जो कुरीतियां चल रही है वे भी समाज की उन्नति में बाधक है। हमारे समाज की अलग-अलग शाखाओं में भिन्न प्रकार की कुरीतियां है। म.प्र. के ग्रामीण क्षेत्रों से लेकर शहर तक फैले नागर समाज में मृत्यु के पश्चात् त्रयोदशा

एवं मृत्युभोज की प्रथा बड़ी समस्या है, समाज के लोग उधार पैसे लेकर यह परम्पराएं अपनाएं हुए हैं तो श्रीनगरा ब्राह्मण समाज में साटा प्रथा और घूंघट प्रथा जैसी कुरीतियां मुंह बाएं खड़ी है।

विवाह समारोह में फिजुलखर्ची करना एवं सामुहिक विवाह समारोहों को समाज के असम्पन्न लोगों हेतु मानना भी बड़ी गड़बड़ी है। कुरीतियों को खत्म करना ही पड़ेगा, उसकी शुरुआत जल्दी से होना चाहिए। साथ ही युवा पीढ़ी को भी समाज से जोड़ना पड़ेगा। यह बहुत बड़ा चिंता का विषय है सब घर में बैठकर सोच रहे हैं आखिर युवा समाज से क्यों नहीं जुड़ रहे हैं, लेकिन क्या यह कभी सोचा गया कि समाज युवाओं के लिए क्या कर रहा है? समाज के वरिष्ठ लोग युवाओं को समाज से जुड़ने के लिए प्रेरित क्यों नहीं कर रहे हैं। घर में बैठकर चिंता करने से समाज का भला नहीं होगा, उसके लिए मैदानी कार्य करना पड़ेंगे। तभी हमारी पहचान बनी रहेगी, समाज बना रहेगा... अन्यथा अभी तो आसार अच्छे नहीं दिखते।

समाज का संगठन अखिल भारतीय बनें

ज्यादातर नागरजनों से चर्चा के दौरान समाज की पहचान का सबसे बड़ा सूत्र एकता का ही उभर कर आया। वर्तमान में राष्ट्रीय स्तर पर दो नागर संगठन कार्यरत हैं, एक गुजरात से तथा दूसरा दिल्ली से। ये संगठन समाज को राष्ट्रीय स्तर पर जोड़ नहीं पा रहे हैं, इनकी गतिविधियां स्थान विशेष तक ही सीमित होकर रह गई है, जबकि इस उद्देश्य के लिए मैदानी कार्य जरुरी हैं।

अ.भा. संगठन के पदाधिकारी देश की इच्छा, सुझाव का सम्मान करते हुए विभिन्न नागर बहुल इलाकों में शाखाएँ खोलें तथा समाज जनों के हित के कार्य शुरु करें। कोई भी संगठन तभी सफल हो पाएगा जब वो दो स्तरों पर कार्य करें। समाजजनों की रायशुमारी तथा संगठन कर्ताओं की क्षमता के आधार पर कार्य की शुरुआत की जानी चाहिए। वर्तमान में जो भी राष्ट्रीय, प्रादेशिक संगठन कार्य कर रहे हैं वे भी अपनी गतिविधियों एवं कार्यप्रणाली की समीक्षा करें एवं सुधार करें। ऐसे कार्य हाथ में लिए जाएं जो समाज की स्थायी पहचान बना सकें।

इस संबंध में मुंबई निवासी **श्री शंकरलालजी नागर** ने कहा कि समाज की बैठक में आपसी विचार-विमर्श करें तथा भविष्य की योजनाएँ आपस में मिलजुल कर बनाएं तभी वे कारगर हो पाएगी।

मुम्बई निवासी **श्री राजेश किशनलालजी नागर** का कहना है कि समाजोत्थान में टांग-खिचाई सबसे बड़ी बाधा है, सहयोगात्मक रवैया नहीं है तथा वरिष्ठ समाजजनों तथा युवा वर्ग के विचारों में अंतर है।

जबकि **श्री किशनलाल रुपचंदजी नागर**, मुम्बई का कहना है कि समाजोत्थान की जो भी योजनाएं बनें उसमें वरिष्ठ युवा सबको सम्मिलित किया जाए। रुढ़ीवादी कुरीतियां बंद की जावे एवं मानसिकता में बदलाव आना चाहिए।

मुम्बई की नागर सांस्कृतिक संस्था के सचिव **श्री रश्मिकांत त्रिवेदी** का मानना है कि समाज की गतिविधियां निर्बाधि रुप से चलाने के लिए फंड की व्यवस्था बाहरी स्त्रोतों से करना चाहिए, अर्थात् समाज के जो प्रभावशाली लोग हैं जो उच्च पदों पर विराजमान हैं वे अपने प्रभाव से समाज के बाहर के लोगों से फंड एकत्र करें।

श्रीमती पल्लवी रोहित मेहता का मानना है कि समाज की उन्नति हेतु सकारात्मक सोच एवं निःस्वार्थ भावना की जरुरत है। सभी शिक्षित हो, क्योंकि सभी समान रूप से शिक्षित एवं योग्य होंगे तो असमानता खत्म की जा सकेगी। समाज में भौतिकवाद के बढ़ावे पर अंकुश लगना चाहिए।

श्री ललित नागर, मुंबई (मो. 9322509288) का मत है कि पढ़े-लिखे और स्थापित लोग एक साथ मिलकर

समाजोत्थान का कार्य करें। शिक्षा एवं रोजगार में एक-दूसरे को सहयोग करना चाहिए। समाज में जो लोग व्यापार से जुड़े हैं। वे अपने भाइयों की बात आ जाए तो वहां पद के मद को त्याग दें, एक-दूसरे के प्रति आदर भाव हो तथा मेलजोल हो।

मयूर ललित नागर मुंबई का कहना है कि समाज को संगठित करने के लिए सोशल मीडिया की मदद लेना चाहिए। समाज की बैठकों में जो मतभेद होता है, उसे दूर करना चाहिए। समाज की गतिविधियों से सबको सरोकार रखना चाहिए।

कु.राजश्री ललित नागर का मानना है कि सामाजिक कार्यक्रमों में सभी आयु वर्ग के सदस्यों को जोड़ना चाहिए, समाज की बैठकों में युवाओं को भी बुलाया जाए।

श्री रमेश कुमारजी चेन्नई (मो.09444088300) का कहना है कि समाज में मार्गदर्शक का अभाव है, कोई दिशा-निर्देश नहीं है। व्यवसाय में रत समाजजन चिकित्सा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कोष बनाएं। शिक्षा हेतु जरुरतमंदों को आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाए। रोजगार प्रशिक्षण दिया जाए।

श्री गोविन्द नागर चेन्नई मो.9840153816 का मानना है कि सामाजिक संगठनों को अपने आय-व्यय के हिसाब में पारदर्शिता रखनी चाहिए, कुछ समाज तो आजकल अपनी आर्थिक गतिविधियों को इंटरनेट पर प्रस्तुत कर देते हैं, ताकि कोई भी समाज जन चाहे जब उसे देख सके।

श्री नरेश कुमार (नैनमल) नागर, चेन्नई मो.9600068087 ने कहा कि आज नागर समाज की शाखाओं को जड़ की तलाश है। सभी शाखाएं अपनी जड़ से जुड़ें तथा हम ऐसे समाज की स्थापना करें कि आने वाली पीढ़ी गर्व से कह सकें कि हम नागर हैं।

श्री मुरलीधर नागर चैन्नई का मत है कि सामाजिक विकास के लिए शिक्षा सबसे ज्यादा जरुरी है। ग्रामीण एवं छोटे नगरों के युवा बाहर निकलकर महानगरों की तरफ रुख करें शहरों में समाजजनों की संख्या बढ़ना शक्ति का प्रतीक है।

श्री जयंतीलाल नागर बैंगलोर ने कहा कि संगठन से ही समाज का भला होगा। पूराने ख्याल के लोग आधुनिक विचारों को अपनाएं तथा नए युग के साथ चलें।

श्री हितेश नागर, बैंगलोर मो.09480071000 ने कहा कि एकता और आपसी सहयोग से ही तरक्की संभव है। सहयोग पैसे से, प्रभाव से या भावनात्मक रूप से दिया जा सकता है।

श्री दशरथ नागर, बैंगलोर का मानना है कि राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलन हो तथा सभी समाजजन आपस में जुड़ें। वे जब एकत्र होंगे तो अवश्य ही समाज कल्याण की योजना बनेगी।

श्रीमती गीतादेवी नागर (गृहिणी) बैंगलोर का मत है कि वरिष्ठ समाजसेवियों को चाहिए कि वे युवाओं की गतिविधियों में अड़चन न डालें। गाँव-नगर में गरीबी होने से बच्चों को छोटी उम्र में काम पर लगा दिया जाता है, यह गलत है। कन्या शिक्षा पर भी जोर देना चाहिए। सम्पन्न परिवार हवन आदि में अपव्यय करने के बजाय वह राशि जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा हेतु दें। कम उम्र में सगाई करना भी गलत है।

देवीचंद भूरमलजी नागर (चित्रदुर्गा) ने कहा कि सामाजिक एकता के उद्देश्य से अंतरराज्यीय सम्मेलन होना चाहिए। समाज की पहचान राष्ट्रीय स्तर पर होना चाहिए।

श्री हुकुमीचंद नागर चित्रदुर्गा मो.08088256385 ने कहा कि समाज की एकता के लिए जय हाटकेश वाणी पत्रिका का प्रयास प्रशंसनीय है।

श्री सावलचन्द्र नागर चित्रदुर्गा मो.07760844782 का मानना है कि युवाओं को एकत्र कर उनके साथ समाज सुधार संबंधि मंथन करना चाहिए।

राजेन्द्र कुमार नागर चित्रदुर्गा मो.09972477542 का कहना है कि समाज में जो लोग जुड़ते नहीं है, उनके न आने का कारण पता करना चाहिए एवं उसी अनुसार गतिविधियों में सुधार करना चाहिए।

श्री छगनलाल नागर चित्रदुर्गा ने कहा कि समाज के किसी भी आयोजन या निर्माण के लिए पहले से बजट बनना चाहिए तथा यह कार्य अनुभवी लोगों को सुपुर्द करना चाहिए ताकि वे निर्धारित अवधि में कार्य को पूर्ण कर सकें।

श्री पुखराज नागर चित्रदुर्गा मो.09901402049 ने कहा कि ग्रामीण बच्चों की शिक्षा के लिए शहरों में ठहरने हेतु होस्टल की व्यवस्था होना चाहिए।

श्री मोहनलाल नागर चित्रदुर्गा ने कहा कि जय हाटकेश वाणी पत्रिका समाज को जोड़ने का कार्य कर रही है। पाश्चात्य संस्कृति को भूलना नहीं चाहिए। अंतरराज्यीय स्नेह मिलन एवं सामूहिक विवाह होना चाहिए, जिससे अंतरजातीय विवाह की समस्या हल होगी।

श्री बाबूलालजी नागर चित्रदुर्गा (मो.09449973910) समाज सुधार हेतु सकारात्मक सोच बहुत जरुरी है। समाज को देने की मानसिकता होनी चाहिए। अच्छी भावना के साथ व्यापक संगठन बनें तथा सबको जोड़कर आपसी सहयोग से ही समाज आगे बढ़ेगा।

महेन्द्र कुमार नागर, चित्रदुर्गा ने कहा कि समाज की बैठक में सबको अपने विचार व्यक्त करना चाहिए।

श्री रमेशचन्द्र नागर बैंगलोर मो. 09342529736 ने कहा कि परस्पर सहयोग होना चाहिए तथा समाज में अच्छे कार्यों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

श्री शांतिलालजी नागर गोरेगांव मुंबई मो.09869151826 ने कहा कि सबका साथ होगा तभी समाज आगे बढ़ेगा। छोटे बड़े साथ मिलकर चलें एवं साटा प्रथा बंद होना चाहिए, बहु के इंतजार में बेटियों की उम्र बढ़ाते जाना उचित नहीं है। कन्यादान सही समय पर हो जाना चाहिए।

श्री संजय नागर (वसई) मुंबई मो.09923441360 ने कहा कि शिक्षा के लिए स्कालर शिप शुरु करना चाहिए। मध्यमवर्गीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के परिवारों के बच्चों को शिक्षण में विशेष सुविधा समाज द्वारा देना चाहिए।

रतीलाल गुलाबचन्दजी नागर वसई ने कहा कि समाज बिखरा हुआ है, इसे जोड़ने की कोशिश होनी चाहिए।

उम्मेदमल मूलचंदजी नागर, विरार मो.09321480091 ने कहा कि सभी समाजों में लड़कियों की कमी हो गई है। यदि नागर समाज की विभिन्न शाखाएं अपने रीति-रिवाजों में तालमेल बैठाएं तो आपस में रिश्ते-सम्बंध बढ़ेंगे तथा इससे अंतरजातीय विवाह की समस्या खत्म होगी।

अशोक आसुलालजी नागर विरार (मो.09561646174) ने कहा कि समाज में व्यापार से ही उन्नति संभव है। युवा भले ही छोटे-मोटे धंधों से अपना करियर शुरु करें धीरे-धीरे उन्नति हो जाएगी। समाज तभी सशक्त बनेगा जब समाजजनों का रुझान व्यवसाय की ओर बढ़ेगा।

हरीश नागर विरार ने कहा कि शिक्षा उच्चस्तरीय प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए, यदि उच्च पदों पर नागरजन बैठेंगे तो उसका लाभ अंततः समाज को ही मिलेगा।

जयंतीलाल नागर, मुंबई (07875016704) ने कहा कि शिक्षा सबसे ज्यादा जरुरी है, पूर्णतः मानसिक विकास के पश्चात् करियर का चुनाव करें। युवाओं को स्वरोजगार हेतु समाज कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध करवाएं।

श्री पुरुषोत्तमलाल (परेश) नागर अध्यक्ष श्री भगवती मंडल ने कहा कि समाज सुधार की शुरुआत नींव से की जानी चाहिए। समय के साथ बदलाव जरुरी है। नींव यदि अच्छी होगी तो उस पर भवन अच्छा बनेगा। जिनके पास सम्पन्नता है वे समाज को उन्नत बनाने के लिए आगे आएं। अहमदाबाद में घरेलू उद्योग महिलाओं के लिए शुरु करने की योजना है, शहरभर में फरसाण के थोक एवं खेरची विक्रेताओं को जहां से माल सप्लाय किया जा सके। गौत्र के हवन फिजुलखर्ची है, यह धन शिक्षा एवं चिकित्सा हेतु उपयोग किया जाना चाहिए।

श्री नैनमलजी नागर, मुम्बई मो. 09323287681 ने नागर ब्राह्मण समाज को उन्नत बनाने के लिए सुझाव देते हुए कहा कि युवाओं को पढ़ाई के बाद नौकरी करने के बजाय स्वव्यवसाय अपनाना चाहिए। यह कटु सत्य है कि हमारे संस्कार जैसे सत्यवादी होना, ईमानदारी, साहस की कमी हमें व्यवसाय क्षेत्र में पूर्ण सफलता में बाधक बनती है। हम अपने संस्कार न छोड़े, किन्तु साहस में वृद्धि करें तो जरुर सफलता मिलेगी। अपने स्थान का मोह छोड़कर अन्य स्थानों पर जाकर भाग्य आजमाना चाहिए। आमतौर से देखा जाता है कि जो लोग

अपने गृहक्षेत्र से बाहर निकले हैं वे आज अपेक्षाकृत ज्यादा सफल हैं। शाश्वत सत्य है कि यदि परिवार समृद्ध होंगे तो समाज अपने आप उन्नत हो जाएगा।

श्री विनोद नागर, बैंगलोर ने कहा कि जब समाज के लोग समय के साथ बदलेंगे तो वे जरुर उन्नति करेंगे। आज की जरूरत है कि लड़कियों को उनकी इच्छानुसार पढ़ने देना चाहिए। वरिष्ठ लोग उन्हें रोक-टोक नहीं करें।

श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद ने कहा कि समाज के काम में सभी समाजजनों को सहयोग करना चाहिए। जो भी समाजजन जहां रह रहे हैं वे अपने जातिबंधुओं से अवश्य जुड़े रहें। सामाजिक संबंधों से ही समाज में उन्नति होगी। युवाओं को समाज में आगे बढ़ाना चाहिए। माता-पिता पहल करें कि यदि उनके बच्चे कहीं बाहर नौकरी कर रहे हैं तो वे वहां के समाजजनों को खोजकर उनसे सम्बंध बनाए रखें। सभी नागरबंधुओं को गुजराती समाज का सदस्य बनना चाहिए। महानगरों में गुजराती ब्राह्मण समाज में नागर बंधुओं के जुड़े रहने से उनका रिकार्ड रजिस्टर्ड रहता है तथा बड़े शहरों की भीड़भाड़ में भी उनकी खोज आसानी से हो जाती है।

श्री धनराज भाई व्यास हैदराबाद ने कहा कि समाज में अहम की बहुतायत एवं विश्वास की कमी है। समाजजन यह प्रतिज्ञा लें कि समाज बंधुओं की बात हो तो उन पर आँख बंदकर विश्वास करें। चूंकि हैदराबाद में नागर समाज के गिनती के परिवार है अतः वे गुजराती ब्राह्मण समाज के सदस्य बन गए हैं तथा इस प्रकार के यहाँ 450 परिवार है। ये मिलकर नवरात्रि, दीपावली मिलन, रक्षाबंधन पर हेमाद्री जैसे त्यौहार साथ मनाते हैं तथा समाजोत्थान हेतु कई गतिविधियां चलाते हैं।

अभिषेक नवरत्न व्यास ने कहा कि समाज में शिक्षा एवं व्यवसाय हेतु पृथक से प्रकोष्ठ बनें, जिसके पदाधिकारी देशभर में आवश्यकतानुसार सेवा एवं मार्गदर्शन दे सके। शिक्षा एवं रोजगार से ही समाज में अनुशासन एवं समृद्धि बढ़ेगी।

श्री महेन्द्र भाई नागर, बैंगलोर का मानना है कि बड़े छोटे का भेद छोड़कर सभी शहरों में नागरजन आपस में जुड़े रहें। वे सामाजिक कार्यक्रमों में तो एक-दूसरे से मिलते हैं, परन्तु समय-समय पर एक-दूसरे के घर जाकर मिलते रहे, इससे प्रगाढ़ता बढ़ती है। जरूरत पड़ने पर एक-दूसरे के काम भी आ सकते हैं। श्री नागर का कहना है कि समाज में कोई मार्गदर्शक अवश्यक होना चाहिए, जो दिशा-निर्देश देकर समाजजनों को सही राह पर आगे बढ़ा सके।

श्रीमती राजुल राजेन्द्र व्यास ने कहा कि समाज में संकुचित सोच है, जबकि व्यापक सोच होना चाहिए, बदले समय एवं परिस्थितियों के अनुसार प्रथाओं एवं रीति-रिवाजों में बदलाव किया जाना चाहिए। बच्चों को संस्कारवान बनाना पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

समाजसेवा-एक शैक्षिक एवं व्यावसायिक विधा

समाज कार्य या समाजसेवा एक शैक्षिक एवं व्यावसायिक विधा है जो अनुसंधान, नीति, सामुदायिक सगठन एवं अन्य विधियों द्वारा लोगों एवं समूहों के जीवन-स्तर को उन्नत बनाने का प्रयत्न करता है। सामाजिक कार्य का अर्थ है सकारात्मक, सुचिंतित और सक्रिय हस्तक्षेप के माध्यम से लोगों और उनके सामाजिक माहौल बीच अन्त:क्रिया प्रोत्साहित करके व्यक्तियों की क्षमताओं को बेहतर करना ताकि वे अपनी ज़िंदगी की ज़रूरतें पूरी करते हुए अपनी तकलीफ़ों को कम कर सकें। इस प्रक्रिया में समाज-कार्य लोगों की आकांक्षाओं की पूर्ति करने और उन्हें अपने ही मूल्यों की कसौटी पर खरे उतरने में सहायक होता है। समाजसेवा वैयक्तिक आधार पर, समूह अथवा समुदाय में व्यक्तियों की सहायता करने की एक प्रक्रिया है, जिससे व्यक्ति अपनी सहायता स्वयं कर सके। इसके माध्यम से सेवार्थी वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में उत्पन्न अपनी कतिपय समस्याओं को स्वयं सुलझाने में सक्षम होता है। अत- हम समाजसेवा को एक समर्थकारी प्रक्रिया कह सकते हैं। यह अन्य सभी व्यवसायों से सर्वथा भिन्न होती है, क्योंकि समाज सेवा उन सभी सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों का निरूपण कर उसके परिप्रेक्ष्य में क्रियान्वित होती है, जो व्यक्ति एवं उसके पर्यावरण-परिवार, समुदाय तथा समाज को प्रभावित करते हैं। सामाजिक कार्यकर्ता पर्यावरण की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक शक्तियों के बाद व्यक्तिगत जैविकीय, भावात्मक तथा मनोवैज्ञानिक तत्वों को गतिशील अंतर्क्रिया को दृष्टिगत कर ही सेवार्थी की सेवा प्रदान करता है।

कुरीतियों के विरुद्ध एकजुटता जरुरी

नागर ब्राह्मण समाज की अलग-अलग शाखाओं में भिन्न प्रकार की कुरीतियां है। मध्यप्रदेश के मालवा प्रांत में गुजरात से आकर बसे नागर जन परिजनों की मृत्यु के बाद आज भी अनावश्यक एवं महंगी परम्पराएं निभा रहे हैं, अब समय बदल चुका है एवं परिस्थितियां भी। पुराने समय में मृत्युभोज में परिवार रिश्तेदारों के साथ पूरे गांव को आमंत्रित करने की जो रीति थी वह कई जगह आज भी जारी है। इसमें भारी खर्च होता है।

शहरी क्षेत्रों में तो यह प्रथा कम हो गई है, परन्तु ग्रामीण क्षेत्र में आज भी जारी है। मृत्युभोज के साथ पात्रदान करने की प्रथा भी बहुत गलत है। इन परम्पराओं में जो धन का अपव्यय किया जा रहा है वह धन समाजोत्थान के कार्य में खर्च होना चाहिए। इसी प्रकार श्रीनगरा नागर ब्राह्मणों में घूंघट एवं साटा प्रथा बंद होना चाहिए। राजस्थान में घूंघट प्रथा का बड़ा जोर है, गांव तक तो ठीक है, परन्तु जो समाजजन गांव से निकलकर शहरों तक पहुँच गए हैं, वे भी आज तक घूंघट प्रथा को अपनाएं हुए हैं, जबकि हम इक्कीसवी सदी में जाने का दावा करते हैं।

अपवाद स्वरूप कुछ परिवारों ने शहर में जाकर घूंघट प्रथा खत्म कर दी है, परन्तु समाज के वरिष्ठजन एकमत होकर इस गैर जरुरी प्रथा को खत्म करने का प्रयास करें। इसी शाखा में साटा प्रथा भी है। जिसमें लड़का-लड़की की विवाह हेतु अदला-बदली की जाती है। एक परिवार की लड़की जिस परिवार में दी जाती है उस परिवार की लड़की बहु के रूप में अपने लड़के हेतु स्वीकार की जाती है। आज के बदले जमाने में यह परम्पराएं कहां ठीक बैठती है, यह प्रथा बदली जानी चाहिए, क्योंकि वर्तमान स्थिति में इसके दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं।

आज के जमाने में लड़कियां अपने पसंद के लड़के से शादी करना चाहती है, थोपे हुए रिश्ते वे परिवार के दबाव में भले ही मंजूर कर लें, परन्तु इसमें अनेक कठिनाइयां हैं। इस प्रथा की वजह से समाज का विस्तार भी नहीं हो पा रहा है। आपस-आपस में रिश्ते की वजह से सम्बंधों का फैलाव नहीं हो पा रहा है। अतः यह साटा प्रथा भी समाज के वरिष्ठजन मिलकर खत्म करें तथा नागर समाज की सम्पूर्ण शाखाओं में रिश्तेदारी करना शुरु करें, माना कि शुरुआती दौर में अपनी प्रथाओं एवं रीति रिवाजों से बाहर निकलना कष्ट प्रद रहेगा, परन्तु धीरे-धीरे सुधार होगा तथा हम अच्छी विरासत आने वाली पीढ़ी को दे सकेंगे।

आज की युवा पीढ़ी समाज की साटा प्रथा के खिलाफ मुखर हो गई हैं, उस सम्बंध में अनेक युवाओं से हमने चर्चा की-

कु. अनामिका नागर, चित्रदुर्गा ने इस सम्बंध में कहा कि साटा सम्बंधों के मामले में लड़कियों की राय नहीं लिया जाना गलत है। परिवार में संस्कार का काम वरिष्ठ ही कर सकते हैं, यदि घर के बड़े अपने बड़े बुजुर्गों का सम्मान करते हैं तो बच्चे भी उनका अनुसरण करते हैं। नारी शिक्षा आज बहुत जरुरी है।

कु. मेघा विनोद नागर बैंगलोर का कहना है कि घूंघट प्रथा खत्म होनी चाहिए तथा युवतियों को समानता का दर्जा मिलना चाहिए।

कु.धर्मिष्ठा नागर ने कहा कि समाज को अपनी मानसिकता बदली चाहिए। लड़कियां यदि अपनी पढ़ाई के साथ-साथ पिता को उनके व्यवसाय में सहयोग करें तो उन्हें प्रशंसा मिलनी चाहिए। साटा प्रथा खत्म होना चाहिए।

कु.साक्षी नागर ने कहा कि विवाह के बाद यदि लड़कियां पढ़ना चाहे तो उन्हें पढ़ने की सुविधा मिलनी चाहिए।

श्रीमती उषा नवरत्न व्यास हैदराबाद ने कहा कि समय के अनुसार रीति-रिवाज बदले जाने चाहिए। नागर ब्राह्मण समाज में कई ऐसी प्रथाएं हैं, जिनका वर्तमान समय में मतलब नहीं रह गया है, परन्तु परम्परानुसार जो तीज-त्यौहार मनाएं जाते हैं, उन पर अवश्य ध्यान दिया जाए। प्रत्येक त्यौहार को मनाने की नागर समाज में विशिष्ट विधियां हैं, उसी विधिनुसार त्यौहार मनाएं जाने से पूर्णतः लाभ प्राप्त होता है। खासकर गृहिणियां घर में शांति एवं समृद्धि की स्थापना हेतु परम्परागत तीज-त्यौहार अवश्य मनाएं।

तकदीर के लिखे पर कभी शिकवा न कर
तू अभी इतना समझदार नही हुआ
कि रब के इरादे समझ सके !

समाजोत्थान हेतु महिला सदस्यों का नजरिया

नागर ब्राह्मण समाज में आमतौर से महिलाओं के प्रति समानता के नजरिए में अन्य समाजों की तरह बदलाव आया है, परन्तु अभी भी अनेक खामियां हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में नारी शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता, आम धारणा रहती है कि लड़की पढ़कर क्या करेगी, ससुराल जाकर उसे घर के काम ही तो करना है। परन्तु यह नहीं सोचा जाता कि पढ़ी-लिखी एवं सुसंस्कृत लड़की होगी तो वह दो परिवारों की तारणहार होती है, नारी के संस्कार एवं शिक्षा उसकी संतानों में भी दृष्टिगोचर होगी।

दरअसल समय के साथ बदलाव न आना कई समस्याओं की जड़ है। नागर समाज के जो लोग पैसा कमाने के उद्देश्य से गांवों से शहर में गए उनकी मानसिकता आज भी नहीं बदली। वे आज समृद्ध होने के बावजूद पैसा कमाने की होड़ में लगे हैं तथा निश्चित रूप से इस वजह से परिवार खासकर नारी की उपेक्षा हो रही है। न तो महत्वपूर्ण मामलों में उनकी राय ली जाती है, न ही उनकी भावना, मनोरंजन का ध्यान रखा जाता है। नारी के प्रति सोच को बदलने की जरूरत है, उन्हें बराबरी का महत्व मिलना चाहिए। इस सम्बंध में समाज की महिला सदस्य बेबाक है।

सौ.मंजूला परेश नागर, मुंबई का कहना है कि पहले घर में एकता हो, फिर समाज में एकता की बात करना उचित है। परिवार को सुसंगठित करने के लिए मुखिया को सहनशील होना जरुरी है। सभी सदस्यों की बात सुनना चाहिए तथा सबकी बातों को महत्व देना चाहिए, ताकि एक-दूसरे के प्रति समर्पण और प्रेम बना रहे। महिलाएं सिर ढंकें, लेकिन घूंघट अनिवार्य न हो। नारी शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि उसकी समझदारी से परिवार में खुशहाली आएगी।

सौ.नीलम नागर मुंबई ने कहा कि महिलाएं शिक्षा के अलावा भी जिस क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहें उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें घर की चहार-दीवारी में कैद नहीं किया जाए। ससुराल में बहू और बेटी के बीच अंतर नहीं किया जाए, हालांकि इस बारे में दोनों पक्षों को कोशिश करनी पड़ेगी। बहुएं भी अपने माता-पिता की तरह सास-श्वसुर को मान दें, तभी बात बनेगी।

सौ.अपेक्षा नागर मुंबई ने कहा कि आजकल बहुत से परिवारों में केवल लड़कियां ही रहती है, अतः जरुरत पड़ने पर उन्हें अपने माता-पिता की सेवा करने का अवसर भी मिलना चाहिए, ताकि वे एक पुत्र की तरह अपने कर्त्तव्य पूर्ण कर सकें। घूंघट प्रथा खत्म होनी चाहिए।

सौ.आकांक्षा जगदीश नागर, नई दिल्ली ने कहा कि लड़कियों को पढ़ाने का उद्देश्य केवल उन्हें संस्कारवान बनाना नहीं वे विवाह के बाद जॉब भी कर सकें एवं परिवार में समानता का दर्जा पा सकें यह होना चाहिए। जो लड़कियां विवाह के बाद पढ़ना या जॉब करना चाहें तो सास-श्वसुर एवं परिवार इस तरह का वातावरण परिवार में बनाएँ।

श्रीमती नीरू विनोद नागर, बैंगलोर ने कहा कि आज भी कई परिवारों में लड़कों को पढ़ाई के बजाय काम पर लगा दिया जाता है, तथा लड़कियों को इसलिए नहीं पढ़ाया जाता कि उन्हें दूसरे घर में जाना है। सकारात्मक सोच का अभाव है। महिलाओं की बातों को सम्मान नहीं दिया जाता, समानता के मामले में कथनी और करनी में अन्तर है।

सौ.ममता अभिषेक व्यास हैदराबाद ने कहा कि युवक-युवतियों को समाज से जोड़ने के लिए विभिन्न रुचिपूर्ण गतिविधियां, बच्चों के कार्यक्रम एवं खेलकूद होना चाहिए।

सौ.अभिग्ना मनीष व्यास हैदराबाद ने कहा कि व्यंजन प्रतियोगिताएँ हो, सोशल मीडिया फेसबुक में पेज बनाकर ज्यादा-से-ज्यादा समाजजनों को उससे जोड़ा जाए। सामाजिक कार्यक्रमों की जानकारी फेसबुक के माध्यम से भी प्रचारित की जाएं।

सौ.सलोनी दर्शन व्यास, हैदराबाद ने कहा कि समाज में ब्लड डोनेशन केम्प आयोजित किए जाएं, महिलाएं घरेलू व्यवसाय में सहयोग करें। शिक्षण कार्य में भी हाथ बटाएं।

युवाओं को समाज से जोड़ने के उपाय

आज की आम चिंता है कि युवा समाज से नहीं जुड़ रहे हैं, उनका सामाजिक गतिविधियों के प्रति मोह भंग हो गया है। यदि यही स्थिति बनी रही तो भविष्य में समाज का नेतृत्व कौन करेगा? वहीं समाज के युवाओं का मत है कि समाज में जो गतिविधियां है, उनके प्रति उन्हें कोई रुचि नहीं है। वरिष्ठ नेतृत्व जो कार्यक्रम करते हैं वह उन्हें पसंद नहीं है। हमारे रुचि के कार्यक्रम हो, शिक्षा एवं करियर के बारे में चर्चा हो, मनोरंजन हो तो युवा अवश्य ही सामाजिक गतिविधियों से जुड़ेंगे। समाज यदि युवाओं के हित में कार्य करेगा, तो अवश्य ही समाज के प्रति वे अपनी प्रतिबद्धता बताएंगे। इस संबंध में युवाओं ने अपने विचार बेबाकी से रखे-

चि. हर्षद नागर, चित्र दुर्गा ने कहा कि समाज में प्रतिवर्ष युवा सम्मेलन आयोजित करना चाहिए। युवाओं के जुड़ने से समाज में उन्नति होगी।

चि. प्रीतम नागर चित्रदुर्गा ने कहा कि मनोरंजक एवं स्पोर्ट्स गतिविधियां आयोजित की जावे तो समाज में युवाओं की रुचि बढ़ेगी।

भावेश नागर, तरुण नागर, पवन नागर चित्रदुर्गा ने भी यही कहा कि समाज का नेतृत्व यदि युवा हित की बात सोचेगा तो युवा समाज से अवश्य जुड़ेंगे।

डॉ.वैभव महेन्द्र नागर बैंगलोर ने कहा कि युवा अपने पिता के बनाएं हुए बेस पर बिल्डिंग बनाने का यत्न करें नए आयडिया के साथ पिछली पीढ़ी के अनुभव एवं आधुनिक साधनों का सामंजस्य कर नया इतिहास रचें। यदि प्रोत्साहन मिलेगा तो युवा समाज कार्य में आगे आएंगे। युवा किसी भी क्षेत्र में उपलब्धि प्राप्त करें उनका सम्मान कर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।

देवांग परेश नागर, मुंबई ने कहा कि शिक्षा सबसे ज्यादा जरुरी है। जिस प्रकार समाज के लोग यज्ञ-हवन के लिए अधिकाधिक धन देते हैं उसी प्रकार शिक्षा के लिए भी दिल खोलकर दान देना चाहिए। युवा वर्ग को शिक्षा एवं करियर के लिए प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। समाज जब युवाओं के लिए कुछ करेगा तो युवा समाज से अवश्य जुड़ेगा।

विनीत परेश नागर, मुंबई ने कहा कि स्पोर्ट्स के माध्यम से युवाओं को जोड़ा जा सकता है। महिलाओं एवं युवतियों की समाज के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए कुकिंग काम्पिटिशन, मनोरंजन मेले का आयोजन किया जाए।

जगदीश नागर नईदिल्ली ने कहा कि समाजोत्थान की गतिविधियों हेतु महिलाएं सक्रिय होकर समाज को संगठित करने का काम कर सकती है। महिलाओं के माध्यम से बच्चे भी समाज कार्य में रुचि लेंगे।

रघुवीर (राज) नागर बैंगलोर ने कहा कि कन्या शिक्षा को महत्व देकर उन्हें कारोबार में भी बढ़ावा दिया जाए। पुरुष-महिलाओं को समानता का दर्जा मिलना चाहिए।

दर्शन राजेन्द्र व्यास, हैदराबाद ने कहा कि सामाजिक गतिविधियों के दौरान युवाओं के लिए अलग से कार्यक्रम हो, जिनमें वे आपस में मिल-जुल सके। भारतभर के नागर भले ही वे गुजराती भाषी हो या हिन्दी भाषी उन्हें आपस में जुड़ना चाहिए, ताकि संगठन भव्य एवं मजबूत बन सके।

नागर ब्राह्मण समाज को सुसंगठित, समृद्ध एवं विशेष बनाने के उद्देश्य से क्या होना चाहिए। यह बहस जारी रहेगी आगामी अंकों में भी। विचार ही भविष्य में क्रियान्वित होते हैं। विचार क्रांति से ही समाज का विकास होगा, उत्थान होगा। आप भी अपने विचार फोटो सहित भेजते रहें। उन्हें प्रकाशित किया जाएगा, प्रकाशित विचारों के बारे में भी अपनी सहमति-असहमति व्यक्त करते रहें।

-सम्पादक

विचार मंथन का सिलसिला चलता रहेगा आगामी अंकों में भी....

स्थान विशेष का नागर ब्राह्मण समाज पर प्रभाव

गुजरात से देशभर में फैले नागर ब्राह्मण समाज पर स्थान विशेष का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। आम मान्यता है कि मध्यप्रदेश में नागर समाज संगठित है तथा शिक्षा क्षेत्र में अग्रणी है, जबकि आज भी गुजरात में सबसे ज्यादा नागर परिवार है। राजस्थान का नम्बर नागर आबादी के मान से तीसरे स्थान पर हैं, परन्तु वहां संगठन न होने से पर्याप्त पहचान का अभाव है। वैसे उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, दक्षिण भारत एवं महाराष्ट्र में भी नागर परिवार निवासरत है, परन्तु वे स्थान विशेष के पूरे-पूरे प्रभाव में है।

हाल ही में समाजजनों से गहन चर्चा के दौरान यह बात उभर कर आई कि अहमदाबाद में बहुत सारे ऐसे परिवार थे जो अत्यंत समृद्ध एवं प्रतिष्ठित थे, परन्तु एक या दो पीढ़ी के बाद वे असमृद्ध हो गए या उनकी प्रतिष्ठा धूमिल हो गई, चर्चा करने वाले इस गिरावट के मूल में अलग-अलग कारण खोजते हैं, परन्तु सतही तौर पर एक ही कारण प्रमुख रूप से सामने आता है कि 'देने' की प्रवृत्ति न होना अवनति का एक मूल कारण होता है। आम तौर से गुजरात में स्वयं पर खर्च करने की प्रवृत्ति ज्यादा होती है, समाज कार्य में हाथ खींचकर धन दिया जाता है।

गुजरात में सबसे ज्यादा नागर परिवार है। इनमें नौकरी पेशा एवं व्यवसायी दोनों तरह के लोग हैं, परन्तु समाज की प्रतिष्ठा अपेक्षाकृत कम है। इसके विपरित मध्यप्रदेश में अन्य समृद्ध समाजों की गतिविधियाँ तथा समृद्धि देखकर उसी तरह की प्रवृत्ति नागर ब्राह्मण समाज में भी है, यहाँ सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों हेतु समाजजन यथाशक्ति दान करते हैं और इसी वजह से अधिक प्रतिष्ठित एवं सम्पन्न है। एक और कारण है कि गुजरात एवं महाराष्ट्र खासकर मुंबई में समाज के अनेक संगठन कार्यरत है वे अपनी गतिविधियों का प्रचार भी व्यापक स्तर पर नहीं कर पाते हैं, जबकि मध्यप्रदेश में संगठन कम है तथा वे अपनी गतिविधियों का प्रचार करने के प्रति गंभीर हैं, वर्तमान दौर प्रचार एवं प्रोपोगंडा का है, समाज को संगठित रूप से गतिविधियां करना चाहिए तथा उनका प्रचार भी करना चाहिए इसी से समाज की प्रतिष्ठा बढ़ेगी और हाँ समृद्धि को कायम रखने के लिए 'देने' की आदत डालना चाहिए, इससे पीढ़ी दर पीढ़ी विकास होता है, अन्यथा जलाशय में जमा पानी भी सडांध मारने लगता है।

स्थान विशेष का प्रभाव प्रत्येक समाज एवं व्यक्ति पर पड़ता है, परन्तु सकारात्मक विचार एवं सत्य से सरोकार रखते हुए समाज का सर्वांगीण विकास ही पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

इसी लेख के संबंध में अपने विचार 20 दिसम्बर तक हमारे पास अवश्य भिजवा देवें। आगामी अंक में इन्हें प्रकाशित किया जाएगा।

-सम्पादक

गाँव से ही सब शहर में गए हैं...

विगत अंक में सम्पादिका महोदया ने जो विषय गाँव के बारे में दिया था, उसमें प्रकाशित बातें जैसे मेरे मन की ही बातें थी। मेरे मन में यह प्रश्न कई बार उठता है कि गाँव में रहने वाले स्वजातीय नागर बंधुओं की कोई सुध लेने वाला नहीं है। ये सब को ज्ञात रहे कि गाँव से ही आकर समाजजन शहर में बसे हैं। पूर्वकाल में पंडिताई एवं कृषिकार्य के द्वारा ही गाँव में बसे समाजजन जीविकोपार्जन किया करते थे।

धीरे-धीरे पढ़ाई एवं रोजगार के लिए वे शहरों की तरफ गए, लेकिन आज गाँव एवं शहर के लोगों के बीच एक गहरी खाई दिखाई देती है, गाँव के लोग किसी शहरी को अपना परिचय देने में संकोच महूसस करता है। शहर में बस गए लोगों को आज ग्रामीण क्षेत्र के समाजजनों को भी साथ रखना चाहिए। उन्हें शिक्षा एवं रोजगार में आगे बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए। उनकी समस्याओं को हल करना चाहिए।

-पाराशर पं.दिलीप मेहता
छड़ावद तह. तराना
जिला उज्जैन

दान से ही चित्त शुद्ध होता है

कुछ देना ही दान नहीं है इसके पीछे भावना क्या है- यही प्रमुख है। निष्काम, निष्कपट, निःस्वार्थ व निर्मल भाव से कुछ देने की क्रिया वास्तविक दान है। दान शब्द ही अपने आप में महत्वपूर्ण है- जैसे एक छोटी चिंगारी भी बड़े से बड़ा महल जला कर भस्म करने की कूबत रखती है। वैसे ही छोटे से छोटा दान भी महान हो सकता है। इस संबंध में एक प्रसंग इस प्रकार है-

दान का अर्थ है हम किसी की किसी प्रकार की सहायता करें, कुछ दें पर उसका हिसाब न रखें व बदले में कुछ न चाहें।

गुजरात की प्रसिद्ध राजमाता मीनल देवी सवा करोड़ स्वर्ण मुद्रा लेकर सोमनाथजी के मंदिर में दान करने गई। इससे उनके मन में दान का अभिमान आ गया, रात्रि में भगवान सोमनाथ ने स्वप्न में उन्हें कहा- मेरे मंदिर में एक बहुत गरीब महिला आयी थी। उसके दान के सामने तुम्हारा दान तुच्छ है।

अगले ही दिन राजमाता ने उस गरीब ब्राह्मणी से मुलाकात की और पूछा तुमने ऐसा क्या दान किया?

ब्राह्मणी बोली- मैं भिक्षा माँगते हुए तथा तीर्थ उपवास करते हुए यहाँ पहुँची, मैंने संचित धन में से आधे से भगवान सोमेश्वर की पूजा की शेष आधे में से आधा भाग एक निराश्रित अतिथी को 'दान' कर दिया व बचे हिस्से से स्वयं मैंने अपनी पारणा की।

भला आपके दान के सामने मेरा दान कहां लगा। इस पर राजमाता के आग्रह करने पर ब्राह्मणी फिर बोली- बहुत धन होने पर भी नियमों का पालन करना, अधिक शक्ति होने पर भी सहनशील बने रहना और दरिद्र होने पर भी कुछ दान करना- ये बातें थोड़ी होने पर भी अधिक पुण्यदायक होती है।

ब्राह्मणी की बातों से अभिमानी राजमाता छोटे से छोटे दान का महत्व भली भांति समझ गई।

दान का मूल अर्थ तो इस श्लोक में स्पष्ट दिया गया है-

दान पूजा तपश्चैव,
तीर्थ सेवा श्रुतं तथा।
सर्वमेव वृथा तस्य,
यस्य शुद्धं न मानसम् ।।

उस व्यक्ति द्वारा किया गया दान, पूजा, तप, तीर्थ-सेवन, शास्त्र पाठ आदि सभी वथा होते हैं, जिसका चित शुद्ध नहीं है, क्योंकि इन सभी कर्मों का मूल उद्देश्य तो चित्त की शुद्धि ही है। इस कथन हेतु एक उदाहरण इस प्रकार है-

संत फ्रांसिस युवावस्था से ही सेवा व परोपकार (दान) को अपना धर्म मानते थे- वे तन-मन-धन से अनाथों, रोगियों व यहाँ तक कि पशु-पक्षियों की भी सेवा में तत्पर रहते थे। इनके पिता कपड़े के बड़े व्यापारी थे। संत फ्रांसिस के सेवाभाव की खबर जब उनको लगी तो वे बहुत नाराज हुए व अपनी संपत्ति से फ्रांसिस को वंचित करने की घोषणा कर दी।

इस पर संत फ्रांसिस ने यह कहते हुए गृह त्याग दिया कि मैं ऐसी सम्पत्ति का मालिक बनकर क्या करुंगा जो परोपकार व सेवा हेतु काम न आ सके। दान से ही तो चित्त शुद्ध होता है। दान बहुतेरे होते हैं जैसे- भू-दान, गो-दान, अभयदान, प्राण-दान, अंगदान, नेत्रदान, कन्यादान, विद्यादान, ज्ञानदान, तुलादान, श्रमदान, मतदान और प्रेमदान इत्यादि।

मतदान तो प्रजातन्त्र की नींव का पत्थर है।

इन सभी दानों में उत्तम दान तो कन्यादान को कहा गया है, जो एक पारम्परिक भजन की इन पंक्तियों में स्पष्ट कहा गया है-

जिनके हृदय श्रीराम बसे,
उन और को नाम लियो ना लियो।
कोई पुण्य करे कोई दान करें,
कोई दान का रोज बखान करें,
जिन कन्याधन को दान कियो,
उन और को दान कियो ना कियो।
जिनके हृदय श्रीराम बसे....

वह दान भी सर्वोत्तम होता है, जब दान करने वाला व्यक्ति सबके हित में ही अपना हित मानता है और वह "सर्वभूत हिते रताः" बन जाता है तथा वह अपने द्वारा किये गये दान के फल के साथ कोई संबंध नहीं रखता। यह व्यक्ति अपने नाम के लिये दान देने की भावना से दूर, दान को महज अपना कर्त्तव्य (धर्म) मानता है। ऐसा व्यक्ति उन लोगों की पहचान भी करता है जिन्हें दान दिया जाना चाहिए तथा शीघ्र दान भी कर देता है, क्योंकि समय पर किया गया कार्य ही उत्तम होता है। ऐसा व्यक्ति गुप्तदान देना श्रेयष्कर समझता है।

इसके विपरीत दान देने वाले कई लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने नाम या यश के लिये दान देते हैं। ये लोग सिर्फ इसलिये दान देते हैं कि अगले दिन अखबारों में दानदाताओं की फेहरिस्त में उनका नाम भी छपे या फिर किसी धर्मशाला के निर्माण में दान देने पर एक शिलालेख पर दानदाताओं के नामों में उनका भी नाम लिखा हो।

कुछ दानदाता ऐसे भी सुने जा सकते हैं जो किसी प्राचीन जीर्ण-मंदिर या धर्मशाला की मरम्मत या जीर्णोद्धार करवा कर पूर्व में लगे शिलालेख को ही बदलवा देते हैं। इसे हम दुराग्रह ही कह सकते हैं। ये कैसा दान!

दान के बारे में कहा गया है-

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन।
दानेन पाणिर्नतु कंगणेन।।

अर्थात् कानों की शोभा शास्त्र का श्रवण करने से होती है, कुण्डल पहनने से नहीं तथा हाथों की शोभा दान देने से होती है, कंगन पहनने से नहीं।

गुरु को पिता से भी गुरुत्तर इस लिये माना गया है कि पिता के दान (हमारा शरीर) से गुरु द्वारा दिया गया दान (ज्ञान) श्रेष्ठ होता है, जो विद्या दान के साथ-साथ 'आत्मतत्व ज्ञान' भी देता है।

इसलिये कहते हैं- जन्मदाता पिता और ब्रह्मदाता गुरु।

दान को संसार में अक्षय कहा गया है- दान कभी नष्ट नहीं होता और

सब जाय अभी पर मान रहे।
मरणोत्तर गुंजित गान रहे।।

-मोरेश्वर मंडलोई
खंडवा

सेवा की भावना सबसे बड़ा दान

ये कैसा दान? दान शब्द बना है संस्कृत में द् धातु से वहीं यह शब्द व्यंञ्जन की वर्णमाला में त वर्ग का तीसरा शब्द है और न, नासिक्य शब्द एक ही वर्ण के दोनों शब्दों का अर्थ दान - देना, अपने प्राप्त किये गये संस्कारों से अन्य का पोषण करना, सींचना, संस्कार देना, ज्ञान, धर्म, दया, कर्म, विनम्रता धैर्य, सांत्वना और आत्म विश्वास बंधाना, देना दान की उच्च श्रेणी है।

इसलिये दया भाव अर्थात् लोगों की सेवा सबसे बड़ा दान कहलाता है। वर्तमान भारतीय परिवेश में निरत लोग दानधर्म में निवेश करते हैं और उस निवेश से मिलने वाले लाभ में भागी बनना चाहते हैं, यश चाहते हैं। जबकि दान की देसी परिभाषा को मान्यता प्राप्त है। कहते भी है 'नेकी कर कुएं में डाल' यानि दान देकर भूल जा। और दान का वास्तविक अर्थ यही सच है। अन्यथा दान का संचयालाभ मरने के बाद मिलता है। सो उससे परिचय तो प्राप्त कर लें। गीता में भी दान की महत्ता कर्म में नियत है दान न चाहते हुए भी लोग दान करते है।

परिस्थिति अनुसार दधीचि की अस्थियाँ इन्द्र ने माँग ली थी और भारतीय परिवेश में जन्मा रावण उपदेश तो फ्री में देता था पर उपदेश कुशल बहुतेरे। हर व्यक्ति यह कोशिश करता है उसका हर सपना, ख्वाब पूरा हो। अपना अपने परिवार तथा माता-पिता, भाई-बहन के बंधन में बंधा हर व्यक्ति पुरुषार्थ के सभी चरण (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) अपने जीवन छूता सा प्रतीत होता है। धर्म यानि शिक्षा व्यवसाय अर्थ का मतलब कार्य आर्थिक संरचना काम का मतलब सम्पूर्ण सुख-भोग तथा मोक्ष सुख-दुख, हारि बिमारी से छुटकारा। वहीं वह व्यक्ति अपने जीवन में चरितार्थ करते हुए दान-धर्म की श्रद्धा से जुड़ जाता है। लेकिन दान की सच्चाई से अनभिज्ञ। वैष्णव व स्मार्त के मतानुसार व्यक्ति को अपनी सालाना मासिक कमाई का 60 प्रतिशत दान करना चाहिए। इसी परम्परा के अनुसार भारतीय जन 'वसुधैव कुटुम्बकम्' महत्व वाक्य को विश्वभर में प्रचलित माना गया है।

विश्व में बदलते परिवेश की छाया भारत में गिरी और परिवार टुकड़ो में बट गया और कुछ समय पूर्व कमाई के साधन सीमित हो गये थे दान तो दूर दो जून की व्यवस्था मुश्किल हो गई थी, वक्त ने करवट बदली तो समाज उत्थान की ओर अग्रसर होने लगा। हम भी अन्य समाजों के साथ अपने समाज में अनेक संस्कार ढूंढने लगे और वर्तमान आगाज ने हमें आगे बढ़ समाज को इकट्ठा करना तथा मेल-मिलाप से अपने-अपने को पुरुषार्थी जीवन जीये स्वागत है। परन्तु पुरुषार्थ के पन्नों को जीवन की वास्तविकता से जोड़े तो दान की महत्ता स्पष्ट हो जाएगी, जीवन पर्यन्त तथा मरणोपरान्त और अगले जन्म के भोग तक अगर दान नहीं किया तो मरने के बाद भगवान को क्या मुंह दिखाओगे? इस खरी सच्चाई को मजाक में कह भी देते हैं और दानियों के नाम आप जानते हैं अंगराज कर्ण-दानवीर कर्ण कहलाये, दधीचि नचिकेता और गुरु नानकदेव साहब प्रमुख है।

-आशा रमेश शर्मा
विजय नगर, इन्दौर
मो. 9302833835

जय हाटकेश वाणी का अगला अंक फरवरी 2015 में मेलापक के रूप में निकलेगा।

धर्म, धर्मान्धता और परमात्मा

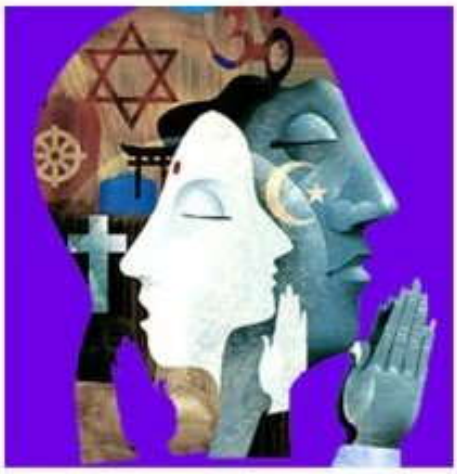

धर्म, भारतीय संस्कृति और दर्शन की प्रमुख संकल्पना है। साधारण शब्दों में धर्म के बहुत से अर्थ है जैसे- कर्तव्य, अहिंसा, न्याय, सदाचरण, सतगुण इत्यादि। परिभाषिक रूप में धर्म या मजहब किसी एक या अधिक परलौकिक शक्ति में विश्वास और उसके साथ जुड़ी रीति-रिवाज, परम्परा, पूजा-पद्धति तथा दर्शन का समूह है।

जो अपने अनुकूल न हो वैसा व्यवहार दूसरे के साथ न करना यह धर्म की कसौटी है। आज धर्म के जिस रूप को प्रचारित, प्रसारित या व्याख्यायित किया जा रहा है। उससे बचने की जरूरत है। वास्तव में धर्म सम्प्रदाय नहीं वरन जीवन में जो धारण करना चाहिये, वही धर्म है। नैतिक मूल्यों का आचरण ही धर्म है। यह वह पवित्र अनुष्ठान है, जिससे चेतना का शुद्धिकरण कर व्यक्ति अपने आचरण से जीवन को चरितार्थ कर सकता है। आज के इस युग में मनुष्य ने सारी अपनी महत्वाकांक्षा का कारण भाग्य अथवा ईश्वर की मर्जी को मान लिया है। इस कारण धर्म के ठेकेदारों ने अपनी महत्वाकांक्षा एवं प्रभुत्व के कारण धर्म के सही स्वरूप पर पर्दा डाल कर उसका राजनीतिकरण कर दिया है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि विकास का रास्ता हमें स्वयं बनाना है। किसी समाज या देश की समस्याओं का समाधान कर्म-कौशल, व्यवस्था परिवर्तन, वैज्ञानिक/तकनीकि विकास, परिश्रम तथा निष्ठा से संभव है। आज मनुष्य की रूचि अपने भविष्य से ज्यादा वर्तमान जीवन को संवारने में अधिक है तथा जीवन की ऊहा-पौह में वह धर्म के मर्म को समझ नहीं पाया है। विश्व के तीन प्रमुख धर्मों- ईसाई (33 प्र.श.) इस्लाम (21) हिन्दू (14) में हिन्दू धर्म (सनातन) सबसे पुराने धर्म है। यह अपने अन्दर कई अलग-अलग उपासना, पद्धतियाँ, मत, सम्प्रदाय और दर्शन समेटे हुए हैं।

हिन्दू धर्म के ज्यादातर उपासक भारत में है। इसमें कई देवी-देवताओं की पूजा की जाती हैं, लेकिन वास्तव में यह एकेश्वरवादी धर्म है। 'हिन्दू केवल धर्म या समुदाय ही नहीं है। अपितु जीवन जीने की एक पद्धति है।' कहा गया है 'हिन्सायाम दूयते या सा हिन्दू' अर्थात जो मन, वचन, कर्म से हिंसा से दूर रहें, वह हिन्दू है। धर्म के मौलिक स्वरूप की स्थापना प्रत्येक घर में होना आवश्यक है फिर चाहे वह हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई इत्यादि किसी भी धर्म से संबंधित हो ताकि व्यक्ति संस्कारवान, सुसंस्कृत बन अपना, परिवार का, समाज का तथा देश का भविष्य उज्जवल बना सके। सही अर्थों में धर्म मानव के आत्मकल्याण का पथ हैं उसका पालन कर गर्व की अनुभूति होना चाहिए न कि प्रदर्शन कर शर्म की।

वर्तमान में धर्म का जो स्वरूप परिलक्षित हो रहा है। वह भारत की प्रगति एवं उन्नति में अवरोधक का कार्य कर रहा है। आज धर्म ने अपने मूल स्वरूप से हटकर धर्मान्धता का रूप ले लिया है। धर्मान्धता मन की अवस्था है, जिसमें व्यक्ति हठपूर्वक, युक्तिपूर्वक, असहनशीलता दिखाते हुए अन्य धर्म के व्यक्तियों को ना पसन्द करता हैं या उनके धर्म से अपने धर्म को श्रेष्ठ मानता है।

इसी कारण धर्म के आध्यात्मिक स्वरूप पर राजनैतिक, लौकिक स्वरूप ने अतिक्रमण कर आम जनमानस को दिग्भ्रमित कर दिया है। वह अपनी मौलिक कर्मशीलता को छोड़कर अपनी आस्था, भीड़, जूलुस, यात्रा इत्यादि रूप में प्रदर्शित कर आनन्द की अनुभूति कर रहा है। अधिकांश व्यक्ति या संस्था विभिन्न आयोजन आयोजित

विश्व के तीन प्रमुख धर्म

ईसाई (33 प्र.श.)
इस्लाम (21)
हिन्दू (14) में हिन्दू धर्म (सनातन) सबसे पुराने धर्म है। यह अपने अन्दर कई अलग-अलग उपासना, पद्धतियाँ, मत, सम्प्रदाय और दर्शन समेटे हुए हैं।

कर जैसे- 'कावड़ यात्रा', 'चुनरी यात्रा', 'प्रकाश पर्व' अथवा 'संथारा'/संलेखना से संबंधित प्रदर्शन कर अपने राजनैतिक या अन्य स्वार्थों की पूर्ति करते हैं। आम जन जीवन को होने वाली कठिनाइयों से उनको कोई फर्क नहीं पड़ता।

श्रीमद् भगवदगीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है- 'यदि आप धर्म करोगे तो भगवान से आपको मांगना पड़ेगा, परन्तु यदि आप कर्म करोगे तो भगवान को आपको देना पड़ेगा'। धर्मान्धता का सबसे बड़ा दुर्गुण यह है कि इसका बढ़ता प्रचलन अतिवाद को जन्म देता है तथा अतिवाद से संघर्ष की भावना आती है, जो कि किसी भी सभ्य समाज या प्रगतिशील देश के लिये घातक सिद्ध होती है। इसी धर्मान्धता के कारण एक ओर आज हमारा देश गरीबी, भूखमरी, बेरोजगारी जैसी समस्याओं से जूझ रहा है तथा दूसरी ओर हमारे धर्मस्थलों में हजारों टन सोना तथा अरबों रुपयों की सम्पत्ति छिपी पड़ी है।

एक बार एक सम्राट (राजा) का संवाद किसी ज्ञानी संत से हो गया। राजा ने संत से पूछा- क्या आप भगवान के प्रतिनिधि है! संत ने उत्तर दिया- मैं भगवान का प्रतिनिधि नहीं उपासक हूँ। राजा ने जिज्ञासावश पूछा क्या आप मेरे तीन प्रश्नों का उत्तर दे सकते हो! संत ने कहा- आपके प्रश्न क्या है! तब राजा एवं संत के बीच हुआ संवाद इस प्रकार है-

राजा- मेरा पहला प्रश्न- भगवान कहाँ रहता है। दूसरा प्रश्न- वह कैसे मिलता है! तथा तीसरा प्रश्न- वह करता क्या है! संत ने कहा- इन प्रश्नों के उत्तर हेतु मुझे चार वस्तुओं- एक गिलास दूध, एक प्याला दही, एक चुटकी, शक्कर तथा एक मथनी की आवश्यकता होगी। राजा ने तुरन्त चारों वस्तुएँ उपलब्ध करा दी। तब संत ने राजा को दूध चखने को कहा; राजा ने दूध चखकर कहा- यह तो फीका है संत ने तुरन्त शक्कर दूध में डाल उसे हिलाकर राजा को पीने को कहा। राजा ने कहा- अब यह मीठा है। तब संत ने कहा- राजन तुम्हें दूध में शक्कर दिखाई दे रही है राजा ने उत्तर दिया- नहीं। बिल्कुल नहीं। तब संत ने कहा- जिस प्रकार शक्कर दूध में रहते हुए दिखाई नहीं पड़ती है। उसी प्रकार मनुष्य एवं भगवान दो वस्तुएँ हैं हर मनुष्य में परमात्मा रहता हैं जो कि दिखाई नहीं पड़ता है, परन्तु उसकी उपस्थिति को केवल अनुभव किया जा सकता है। यह आपके पहले प्रश्न का उत्तर है। इसके पश्चात् संत ने राजा को दही का प्याला सामने रख चखने को कहा। राजा ने दही चखकर कहा- यह तो खट्टा है तब संत ने दही को मथनी से मथना आरम्भ किया कुछ ही देर में मक्खन तैरकर उपर आ गया तब संत ने कहा- जिस प्रकार दही को मथने पर उसमें विद्यमान मक्खन ऊपर आ जाता है। उसी प्रकार मनुष्य सात्विक भाव से, ज्ञानबुद्धि, कर्मबुद्धि, श्रद्धा एवं समर्पण रूपी मथनी से स्वयं को मथता है तो उसे ईश्वरत्व प्राप्त हो जाता है। यह आपके दूसरे प्रश्न का उत्तर है। तत्पश्चात् संत ने राजा से कहा- यदि इन दोनों प्रश्नों के उत्तर से आप संतुष्ट है तो कुछ समय के लिये मुझे आप अपना गुरु मान लीजिये तथा आप शिष्य बन मुझे आपके आसन पर बैठा दीजिये। राजा ने तुरन्त उठकर संत को अपने राजसिंहासन पर बैठा दिया तथा स्वयं उनके चरणों के समीप खड़ा हो गया। संत ने कहा- राजन! यह आपके तीसरे प्रश्न का उत्तर है कि परमात्मा यही करता है जिसे चाहे उसे संत से सम्राट बना देता है तथा जिसे चाहे उसे राजा से रंक बना देता है। यह सुन राजा विस्मित भाव से भावविभोर हो, संत के चरणों में गिर पड़ा।

संत कबीर ने भी कहा है-

माला फेरत जुग गया,
गया न मन का फेर।
मणका मणका छोड़ के,
मन का मन का फेर।।
सो सांई तन में बसै,
भृम्यौं न जाणे तास।
कस्तूरी के मृग ज्यूँ,
फिरि फिरि सूंघे घास।

फाईल फोटो

मन दिया कछु और ही,
तन साधुन के संग।
कहे कबीर कारी दरी,
कैसे लागे रंग।।

और अंत में-

बिल गेट्स ने कभी लक्ष्मी पूजा नहीं की, परन्तु वह दुनिया का सबसे बड़ा धनवान व्यक्ति बना।

अल्बर्ट आइन्सटीन ने कभी सरस्वती की पूजा नहीं की, परन्तु वे दुनिया के सबसे बुद्धिमान व्यक्ति कहलाए, इसलिये धर्म में नहीं, कर्म में विश्वास कीजिए।

-प्रो. राजेन्द्र नागर (मुमुक्षु)
बी-40 चन्द्रनगर,
(एम.आर.9), इन्दौर

किसी ने भगवान को पुछा
" जहर क्या होता है ? "
भगवान ने बहुत सुन्दर जबाब दिया,
" हर वो चीज जो जिन्दगी मे
आवश्यकता से अत्यधिक होती है,
वही जहर होती है !

मौत का डर, जिंदगी के डर से ही आता है।
जो शख्स भरपूर जिंदगी जीता है
वह किसी भी वक्त मौत को
गले लगाने के लिए तैयार रहता है।

अपने आप को परिस्थितियों का
गुलाम कभी मत समझो

तुम खुद अपने भाग्य के
विधाता हो ।

कैकेयी से कद्रू तक सौत ईर्ष्या का दुष्परिणाम-2

ईर्ष्या स्वयं के साथ समाज को भी जला देती है...

एक कथा में यह वर्णित है कि विनता ने उसकी बहिन व सौत कद्रू बहुत द्वेष रखती थी। सूर्य के रथ में जूते हुए घोड़े को देखकर वे आपस में वर्तालाप करने लगी। उस घोड़े को देखकर कद्रू ने विनता से कहा - हे कल्याणि ! यह घोड़ा किस रंग का है ? विनता बोली - यह अश्व सफेद रंग का है। हे शुभे ! तुम इसे किस रंग का मानती हो ? तुम भी इसका रंग बता दो। तब हम आपस में इस बात पर शर्त लगाये। कद्रू ने कहा कि मैं तो इस इस घोड़े को कृष्ण वर्ण का समझती हूँ। आओ मेरे साथ शर्त लगाओं कि जो हारेगी वह दूसरे की दासी बनना स्वीकार करेंगी।

कद्रू ने अपने सभी आज्ञाकारी पुत्रो से कहा तुम सभी लिपटकर उस घोड़े के शरीर में जितने बाल है उन्हे काला कर दो। उनमें से कुछ सर्पो ने कहा कि हम ऐसा नहीं करेगें। उन सर्पो को जो कि उनके ही पुत्र थे शाप दे दिया कि तुम लोग जनमेजय के यज्ञ मे हवन की अग्नि में गिरोगे। अन्य आज्ञाकारी सर्प पुत्रों ने माता को प्रसन्न करने की कामना से उस घोड़े की पूँछ में लिपटकर अपने विभिन्न रंगो से श्वेत घोड़े को चितकबरा बना दिया। तदन्तर विनता एवं कद्रू ने साथ -साथ जाकर घोड़े को देखा। उस घोडे को चितकबरा देखकर विनता बहुत दुखी हुई। विनता को कद्रू की दासी बनना पड़ा। उसी समय सर्पो का आहार करने वाले महाबली विनता पुत्र गरूड जी वहां आ गये। उन्होंने अपनी दुःखी माता से दुःख का कारण पूछा। गरूड ने कहा कि हे माता मैं आपको दुःख से मुक्त करना चाहता हूँ। विनता ने कहा कि जिस समय में कद्रू को मुँहमाँगी वस्तु दे दूँगी, उसी समय दासीभाव से मेरी मुक्ति हो सकती है, गरूड़ ने कहा कि हे माता शीघ्र ही उसके पास जाकर पूछते है कि वह मुँहमाँगी वस्तु क्या चाहती है। दुखी विनता ने कद्रू से कहा -हे कल्याणि तुम अपनी अभीष्ट वस्तु बताओ जिसे मैं देकर इस दासभाव से छुटकारा प्राप्त कर सकूं। यह सुनकर दुष्ट ने कहा '' मुझे अमृत लाकर दे दो '' विनता ने कहा हे तात् कद्रू को अमृत चाहिए। गरूड ने कहा कि तुम उदास न हो मैं अवश्य ही अमृत ले आउगाँ। गरूड़ श्रीविष्णु की भक्ति से प्राप्त वरदान में अजर -अमर व उसके वाहन बनने

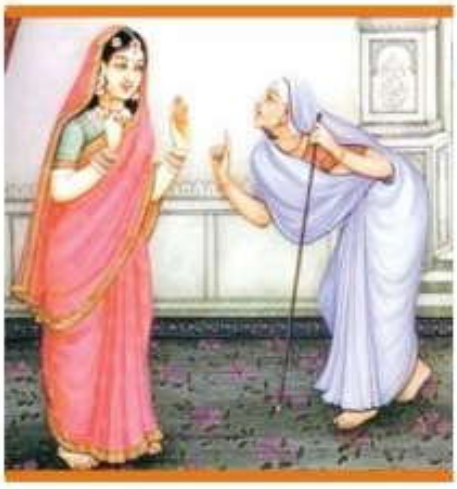

का सौभाग्य प्राप्त कर चुके थे।

गरूड़ इतना कहकर बडे वेग से सागर जल अपनी चोंच में भरकर आकाश मार्ग से चल पड़े। उनके शक्तिशाली पंखों के वेग से हवा में बहुत सी धूल भी उनके साथ-साथ उड़ी। वह धूल राशि के साथ अपनी चोंच में रखे जल सहित अग्निमय परकोटे को बुझा दिया अमृत की रक्षा में इन्द्र व देवताओं से युद्ध कर अमृत कलश ले चले। इन्द्र ने गरूड़ से कहा ''निष्पाप गरूड़'' यदि तुम नागमाता कद्रू को यह अमृत दे दोगे तो सारे नाग-सर्प अमर हो जाएंगे। यदि तुम्हारी अनुमति हो तो मैं इस अमृत को वहां से हर लाऊगाँ। गरूड़ ने कहा कि मेरी माता कद्रू की दासीभाव से मुक्त हो जाने के पश्चात यह अमृत हर ले जाना। गरूड़ ने माता विनता को अमृत लाकर दिया। विनता ने कद्रू को अमृत दे दिया तथा दासीभाव से मुक्त हो गई। इन्द्र ने भी अमृत का घड़ा चुराकर उसके स्थान पर विष का पात्र रख दिया। अमृत के घट के पास कुश बिछे हुए थे जिन्हे सर्प अपनी जीभ से चाटने लगे तब कुश के अग्रभाग के स्पर्शमात्र से वे दो जीभ वाले हो गये।

इस कहानी से मंथरा ने कैकेयी को कौसल्या के विरूद्ध राम के युवराज पद प्राप्त होने पर दासी बन जाने का भय विष की भांति भरा। कथा चाहे मंथरा, कैकयी या कौसल्या की हो विनता-कद्रू की ईर्ष्या की हो। ईर्ष्या राग द्वेष सौतो के जीवन को ही नहीं अपितु पति परमेश्वर सहित परिवार को समूल नष्ट कर देती है। कैकेयी के नारी हठ ने रघुकुल में दशरथ जी की मृत्यु का कारण, श्री सीताराम का वनवास तथा रामभक्त भरत जैसे भाई को भी 14 वर्षो तक श्रृंगबेरपुर में रहकर वनवासी सा जीवन व्यतीत करना पड़ा। डाह- ईर्ष्या स्वयं को ही नहीं अपितु समाज को भी जलाकर राख कर देती है।

जीवन बांसुरी की तरह है। जिसमें बाधाओं रुपी कितने भी छेद क्यों न हो, लेकिन जिसको उसे बजाना आ गया उसे जीवन जीना आ गया।

-संकलनकर्ता
जितेन्द्र नागर, देवास

SALEM STEEL AGENCIES

DEARLERS IN:

FERROUS & NON FERROUS METALS

NEW.No.392 (OLD.No.177) WALL TAX ROAD OPP, TO RASAPPA CHETTY STREET,
CHENNAI - 600 003. CONTACT NO: 044-23468290 EMAIL ID: ssametal@gmail.com
CONTACT PERSON : BHUPEND'RA.NAGAR (9840419285) RAHUL (9841254260)

MAHENDRA METAL CORPORATION

STAINLESS STEEL *IMPORTERS*STOCKIST & SUPPLIER

NO.347, WALL TAX ROAD, (RICE MILL COMPOUND), (NEAR PADMANABHA THEATER), CHENNAI-600 079.
CONTACT PERSON : MURLIDHAR NAGAR (9381025810) CONTACT NO: 044-23463589,3590,3591
EMAIL ID: salemsteel@airtelmail.in /Salemsteell984@gmail.com/WEBSITE: www.mahendrametalcorporation.com

SHRI SIDHI VINAYAK METALS

DEALERS IN : STAINLESS STEEL SHEET, COILS, CIRCLES, WIRES, RODS, PIPES, SCRAPS ETC.,

NO. 10, PONNAPPA CHETTY STREET, CHENNAI-600 003.
CONTACT PERSON : NARESH NAGAR 9840069694
CONTACT NO: 044 - 23468361

MARUTHI IMPEX

DEALERS IN :
TAILORING MATERIAL & PACKING MATERIAL SUPPLIERS

G.K. TEMPLE STREET, CHICKPET CROSS,BANGALORE-600 053.
CONTACT PERSON : : MANGILAL NAGAR,
MAHESH CONTACT NO: 9590137236, 9019143354.

सात्विक विचारों से ही आदर्श जीवन का निर्माण

अधर्म ही पाप है। लोक मान्यता के वितरित व धर्म विरुद्ध आचरण ही पाप है। छिपकर अर्थात् समाज की निगाह बचाकर करें व करने के बाद पछताना पड़े, यही पाप है। जिसे बार-बार करने का मन हो वह पाप है। अविवेकपूर्ण कृत्य कार्य ही पाप है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है जो नीति सम्मत नहीं है वह पाप है। वेद व्यासजी कहते हैं परोपकार पुण्य है, दूसरों को सताना पाप है। तुलसीदासजी के अनुसार 'पर पीड़ा सम नहीं अधमाई'। सत्य बराबर तप नहीं और झूठ बराबर पाप। शास्त्रों के अनुसार पुरुष क्रतुमय है अर्थात् 'सत्क्रतुर्भवति तत्कर्म कुरुते, तत्कर्म कुरुते तदभिनिष्पद्यते।' व्यक्ति जैसा सोचने लगता है वैसा ही कर्म करता है। वैसा ही बन जाता है। विचार से कर्म बनता है। अतः हमारे विचार सात्विक होना चाहिए पापमय नहीं।

सत्कर्म से कमाई खीर में पाप रुपी छाछ न डाले जीवन खराब हो जायेगा। ध्यान देना- जहाँ पर्दा है वहाँ गर्दा है, जहाँ ओट है वहाँ खोट है, जहाँ पट है, वहाँ कपट है, जहाँ आड़ है वहाँ राड है। आँख बन्द हो तो भी इत्र की खुशबू आयेगी ही। आड़ में, अंधेरे में किया गया पाप एक दिन उजागर होकर रहेगा। पाप व पारा (एक धातु) बाहर आये बगैर रह ही नहीं सकते, फूटेंगे ही। आँख व कान से सावधान रहे, ये पाप के द्वार है, इन्हीं द्वारों से पाप मन में प्रवेश करता है।

जहर गलती से पी लें, पाप गलती से हो, असर हो कर रहेगा। आग जान बूझकर पकड़ो या अनजाने में, फफोले पड़ेंगे ही। कर्म की गति गहन है, कर्मफल से बचना असम्भव है। हमारी प्रत्येक क्रिया का असर पूरे ब्रह्माण्ड पर पड़ता है। होशपूर्वक रहें तो पाप हो ही नहीं सकता। सबसे बड़ा रोग, क्या कहेंगे लोग। पाप से बचें होश में जिए। गफलत में न पड़े रहें। पाप करते समय यह न समझना कि कोई देख नहीं रहा है परमात्मा अन्तर्यामी है, सब देखता व जानता है। श्रीमद् भागवत् में कर्म के तेरह गवाह बताये हैं यथा सूर्य, चन्द्र, वायु अग्नि, अन्तरिक्ष, पृथ्वी, जल, हृदय, यमराज, दिन, रात, संध्या व धर्म। अब बताओ कहाँ बचोगे। अतः पुण्य कार्य शीघ्र करें, पाप सभी मिलकर करते हैं। पाप कभी भी, मुहुर्त नहीं देखते, कहीं भी, अधिकतर अकेले में ही करते हैं। पुण्य उजाले में, पाप अंधेरे में, पुण्य खुल्ले धाड़े, पाप आड़ में। पुण्य निडर होकर, पाप डरते डरते। पुण्य कार्य हेतु व्यवस्था जुटाना

फाईल फोटो

पड़ती है, पाप हेतु कोई इन्तजाम की जरूरत नहीं पड़ती है। पुण्य सभी मिलकर करते हैं। लाभ भी सभी उठाते हैं। पाप अकेले करते हैं और फल भी अकेले ही भोगते हैं। पाप के बीज बोते समय नहीं फसल काटते समय दुःख देते हैं। पाप पीछा नहीं छोड़ता, जैसा करोगे वैसा भरोगे, करनी वैसा फल। जैसा बीज बोओगे, वही फसल तो काटोगे।

पापी परले जात है, भरता अपने पाप।
कोई न मारे पापी को, मरता अपने आप।।

पाप मन से वचन से व कर्म से होते हैं। पाप के अनेक प्रकार है, किन्तु महापाप चार हैं। ब्रह्महत्या, मद्यपान, गुरु पत्नी से व्यभिचार व स्वर्ण की चोरी। इन चार पापों का शमन नहीं होता। पाप का परिणाम रोग हैं पाप से ही रोग होते हैं। पाप से लक्ष्मी घटती है। पापी को सुख नहीं, चैन नहीं, पापी अल्पायु होता है, पाप से दैन्यता, दुःख शोक उत्पन्न होता है, पापी स्वयं अपने पाप से मारा जाता है। कहा है-

पाप किए तीनों गये धन देह और वंश।
यकीन न हो तो देख लो, रावण कौरव कंस।।

पाप से रूप, क्रान्ति, आयु धर्म और शरीर का नाश हो जाता है। पाप से विपत्ति खड़ी होती है। पुण्य से धर्म की रक्षा होती है। पुण्य विपत्ति को नष्ट कर देता है। पाप छोटा बड़ा नहीं होता, पाप पाप होता है। रोग ऋण पाप शत्रु एवं आग छोटा बड़ा नहीं होता। पाप से कमाया धन, पाप कर्म में खर्च होता है। पापी का धन सन्तान को भी पापी, आलसी, व्यसनी व्यभिचारी व चरित्रहीन बना देता है। महात्मा बुद्ध ने कहा है पापी इस लोक व परलोक में भी दुःखी रहता है। अतः पुण्य शीघ्र करें, पाप को टालें।

पाप की कोड़ी पुण्य का भण्डार नष्ट कर देती है। प्राकृतिक विपदाएँ भूकम्प, अकाल, महामारी पाप के कारण ही है, पापी का भार सहन नहीं कर पाती। धरती माँ पाप के भार से सहर जाती है। काँप-काँप उठती है। जैसी करनी वैसी भरनी। पाप का फल आज नहीं तो कल। पापी भय, व्याधि व मरण का शिकार हो जाता है। पाप का फल स्वयं, सन्तान व पूर्वज सभी भोगते हैं।

श्रीमद् भागवत् में पापी धुंधकारी का व्याख्यान पाप से होने वाली दुर्दशा का बड़ा सटीक उदाहरण है। हम सोचने को मजबूर

हो जाते हैं कि पाप से बचें। भाइयों, पाप का पोटला न बांधे, पुण्य की पोटली काफी है। पाप का घड़ा नहीं भरें, पुण्य की मटकी काफी है। पाप का घड़ा फूटते ही सब कुछ नष्ट हो जाता है। पाप भूमि से भी वजनी है, गौ हत्यारा जन्म से अन्धा पैदा होता है। हम हरि के हस्ताक्षर हैं पापी कहलाने के लिए नहीं। आप संशय न करें।

पापी खावे धापी ने,
धरमी के उपास।
सौदा पिछला लेन देन का,
काहे होत उदास।।

नाम जप से कलयुग में पाप कट जाते हैं। शरीर से पाप होता है, तो शरीर से ही कटेगा। देह भगवान की खेती का औजार है देह साधन है पुण्य कमाने का, पाप पैदा करने का हथियार नहीं है, जीभ से भजन करें। भजन व सत्संग से पाप कटेंगे, पाप घटेंगे। देव दर्शन, तीर्थ व तीर्थस्नान, कथा सत्संग स्वाध्याय, परोपकार, गो सेवा, यज्ञ, चीटी को भोजन ये पाप शमन के साधन है। स्वर्ग की सीढ़ी के पायदान है। भक्ति बढ़ेगी तो पाप घटेगा। दूसरों के पाप व अपने पुण्य का बखान न करें। सत्संग के ताप से पाप की सिकाई हो जाती है। पाप भुन जाता है। सिकाई से पाप के आगे उगने की क्षमता समाप्त हो जाती है। गऊ, गंगा, गीता, गायत्री व गुरु ये पाप हरने के साधन है। अपने गुरु के सामने मन ही मन पापों का स्मरण कर लेने से पाप का शमन हो जाता है। गुरु वन्दना गुरु दर्शन, स्पर्श, चरण छूना, उनकी दृष्टि हमें पाप से मुक्त कर देती है। अर्थववेद के अनुसार अतिथि जिसके घर का अन्न खाते हैं उसके पाप धूल जाते हैं। गुप्त पाप मरते समय चुभते हैं। पापी व अज्ञानी ही मरने से डरते हैं।

मनुष्य जनम अनमोल है यह मन तरने की नौका है, कंचन काया कहते हैं। देवता भी मनुष्य देह के लिए तरसते हैं मानव बनाकर परमात्मा ने अवसर प्रदान किया है। मौका है मोक्ष प्राप्त करने का। हीरे को कीचड़ में मत फेंकना। किन्तु बड़ा खेद का विषय है आज की पीढ़ी अपने को आधुनिक एडवांस, सभ्य व विकसित मानती है। पाप से नहीं डरती। पाप पुण्य से बेखबर मौज मस्ती में जीवन बर्बाद कर रही है। शराब मांस व्यभिचार, बेईमानी, धोखा, फरेब, झूठ छल कपट, चोरी, निंदा, हिंसा, कुकामना, कुवासना दुर्व्यसन दुर्गुणों में रत है, व्यस्त व मस्त है।

हीन रास्तों, कुमार्ग पर चलकर आधुनिक होने का दम भरते हैं। धिक्कार है ऐसे जीवन को, लानत है। माँ बाप को लजा दिया। ध्रुव प्रहलाद बन कर शौर्य दिखाओ तो जाने। मेरा करबृद्ध व्यक्तिगत निवेदन है कि कुकर्मों से बचें। मानवता की सार्थक पहल करें, अपनी 21 पीढ़ी के उद्धारक बने, पाप से बचें। गुरुदेव हम सभी पर कृपा करें। पूज्य पाद श्री 1008 श्री पं.कमलकिशोरजी नागर मेरे आराध्य मेरा यह निवेदन स्वीकार करें।

गुरुवर तेरी शरण में,
आये लेकर आस।
वरद् हस्त हो तेरा हम पर,
गोलोक देना वास।।

-रमेश रावल
डेलची (माकड़ोन) मो.8085851920

शाजापुर में संस्कार ग्रुप परिवार के पदाधिकारी तथा दैनिक अवन्तिका ब्यूरो श्री राजेश नागर का समता साहित्य समाज विकास समिति के तत्वावधान में शाजापुर विधायक श्री अरुण भीमावद, प्रभारी कलेक्टर श्रीमति मीनाक्षी सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री महेन्द्र तारणेकर की उपस्थिति में शासन प्रशासन के तथा जनहित में समाचार प्रकाशित करने पर सम्मानित किया गया ।

तीन बातें सदैव ध्यान रखने योग्य है

(1) तीन बातें याद रखना अनिवार्य है 'तीन चीजें' सच्चाई, कर्त्तव्य, मृत्यु।

(2) तीन चीजें किसी की प्रतिक्षा नहीं करती- समय, मृत्यु, ग्राहक

(3) तीन चीजें भाई-भाई को दुश्न बना देती है- जर, जोरु, जमीन

(4) तीन चीजें कोई दूसरा चुरा नहीं सकता- अक्ल, चरित्र, हुनर

(5) तीन चीजे जीवन में एक बार ही मिलती है- माँ, बाप, जवानी

(6) तीन चीजें निकलकर वापस नहीं आती- तीर कमान से, बात जबान से, प्राण शरीर से

(7) तीन चीजें पर्दे योग्य है- धन, स्त्री, भोजन

(8) इन तीनों का सम्मान करो- माता, पिता, गुरु।

-कु.भारती पाराशर पं.दिलीप मेहता
तथास्तु कर्मकाण्ड कार्यालय, छड़ावद

प्रकृति का जश्न हैलोवीन

भारत एक ऐसा देश है जहां अनेक सम्प्रदाय, धर्म, तथा जातियों के लोग रहते हैं। इसी कारण यहां साल के हर महीने में किसी न किसी उत्सव या त्योहार के रंग-रूप और उमंग के रसों में डूबकर आनन्द लेने का अवसर प्राप्त होता रहता है। रीति-रिवाज, उत्सव, परम्पराओं को मनाने के अलग-अलग ढंग होते हैं, और इनके लिये हमारे देश में समय-समय पर विभिन्न प्रकार के आयोजन होते रहते हैं-अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण भारत प्रसिद्ध रहा है। किन्तु जब अन्य देशों की बारी आती है तो वहाँ की संस्कृति सभ्यता के बारे में तो अक्सर बहुत सी बातें सुनते हैं किन्तु त्योहारों के नाम पर गिने-चुने नाम ही याद आते हैं। जैसे यूरोप में क्रिसमस और गुड फ्राइडे, जो कि भारत में भी मनाये जाते हैं।

सितम्बर से नवम्बर 1997 के बीच मुझे अमेरिका जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ जाकर वहाँ के लोगों से वहाँ की संस्कृति, सभ्यता के बारे में बात करने की, तथा वहाँ की शिक्षा प्रणाली, वहाँ के कालेज-स्कूल देखने की जिज्ञासा भी हुई। नज़दीकी से वहाँ के लोगों का जीवन देखने पर पाया कि मानव प्रकृति सभी जगहों में समान होती है। चाहे रहन-सहन, खान-पान, पहनावे आदि में कितनी ही भिन्नता क्यों न हो किन्तु वहीं संवेदनशीलता, मां-बाप की ममता, आवश्यकता पड़ने पर जाने-अनजाने सभी व्यक्तियों की सहायता करना, उनके साथ गहरे रिश्ते बनाना--हर मानव के भीतर पैठी ऐसी सहज प्रकृति से ही पूरी दुनिया एक कुटुम्ब बनती है।

हांलांकि अंग्रेजी मेरी भाषा कभी नहीं रही, लेकिन जब भी मैंने अंग्रेजी में बात करने की कोशिश की, मेरी भाषा को लेकर कभी किसी ने मजाक नहीं बनाया-बल्कि हमेशा मेरी भावाभिव्यक्ति को हमेशा बड़े ही धैर्य, शांति से समझने की कोशिश की। मेरी भारतीय वेश-भूषा पोशाक आदि की प्रशंसा भी की और कभी-कभी तो उसे पहनने की इच्छा भी जाहिर की।

मिनिसोटा और इन्डियाना वे दो प्रान्त थे जहां मैंने अपना काफ़ी समय छात्रों तथा शिक्षकों के साथ बिताया। दोनों ही जगहों में मैंने पाया कि अध्यापक-विद्यार्थी का संबंध बहुत ही घनिष्ठ व मित्रतापूर्ण होता है।

वहां के मौसम ने मेरा मन लुभा लिया। सितम्बर में हरियाली, फिर अक्टूबर में फूलों का रंग-बिरंगा होना। यानि जैसे-जैसे गर्मी

के दिन ठंडक के दिनों में बदलने लगे, वैसे-वैसे हरे पत्ते नारंगी, पीले, बसंती, और लाल सुर्ख रंगों में परिवर्तित होने लगे थे। पेड़ों की शोभा निराली थी। पेड़ ही जैसे विशालकाय रंग-बिरंगे फूल बन गये हों। फिर पतझड़--सारे पत्ते, झड़ते हुए। तमाम रंगों के पत्ते धरती पर बिखरे ऐसे लगते मानो एक कभी न ख़त्म होने वाली कालीन पर रंग बिरंगे फूल किसी खास प्रियजन के स्वागत में बिखेर दिये हों। उसके बाद केवल पत्ते विहीन टहनियां, मानो हरियाली और रंग लुप्त हो जाने के कारण उदासी में डूबी हों और बसंन्त के आने का इंतजार कर रही हों। किन्तु अभी कहाँ ? अभी तो इन्हे बर्फीली हवाओं और बर्फ़ की तूफ़ानी बौछारों को भी सहना है। मिनिसोटा जैसे ठन्डे प्रान्त में अक्टूबर के अंत तक अथवा नवम्बर के प्रारम्भ में स्नो फाल यानि बर्फ का गिरना प्रारम्भ हो जाता है।

स्नो फाल सुनने-देखने में तो बहुत ही अच्छा लगता है किन्तु बाहर निकलने पर उसका आनन्द लेने के लिए 15-20 मिनट पूरी तैयारी करने में लग जाते हैं। पहले कोट-टोप, मफलर-दस्ताने, मोजे-जूते आदि पहनो। तब कहीं बाहर का नजारा देखो और उसका आनन्द उठाओ। हल्का स्नो-फाल जब होता है तो देखने में बहुत अच्छा लगता है, मानो महीन-महीन बर्फ का बुरादा जैसा हर जगह समा गया हो। जैसे, रुई को धुनते समय उसके रेशे उड़-उड़ कर बिखर रहे हों। जैसे पेड़ अपने बाहों पर जमी हुई बर्फ लादे सफेद चांदनी के बड़े-बड़े फूलों में बदल गये हों। जैसे, ज़मीन पर सफ़ेद रुई की पर्त बिछ गयी हो जिस पर कहीं एक दाग भी नहीं--बिल्कुल निर्मल, निष्कलंक--बेदाग। प्रकृति का निर्मल स्वरूप, आनन्द स्वरूप। परमानंद के दर्शन जैसा आभास होता है।

किन्तु जब इसी पवित्र निर्मल बर्फ से आच्छादित पृथ्वी पर मानव का पैर पड़ता है और कारें आदि चलती है तो वह बेदाग धरती दाग-धब्बेदार मटमैली और फिसलन भरी हो जाती है। कहीं बच्चे बर्फ के गोले बनाकर उन्हें उछालते फिरते हैं तो कहीं स्नोमैन बनाने में पूरा का पूरा परिवार लग जाता है। जब लोगों को अपने मनोरंजन के लिये बर्फ़ पर स्केटिंग करते देखती थी तो बर्फ की सिल्लियों को देखकर लगता था कि वही रूई की निर्मल पर्त मानो मानव मन के राग-द्वेष के कारण असुंदर व कठोर बनकर है। जैसे प्रकृति इन्सान को सचेत कर रही हो बार-बार संभल-संभल कर चलने के लिये। जहां लापरवाही की कि गये काम से।

खैर ये तो हुई प्रकृति के नियम, समय, चक्र तथा सौन्दर्य छटा की बात।

चूंकि अमरीका में अपनी बेटियों के घर में थी और कार्यभार अधिक था नहीं सो मैं रोज़ ही घूमने निकल जाती थी। अक्टूबर के आते आते एक-दो बार देखा कि बाज़ार में बड़ी-बड़ी दूकानों में बड़े-बड़े नारंगी रंग के कद्दू बिक रहे हैं। उसके बाद तो प्राय: रोज ही अधिकांश जगह-जगह छोटे बड़े आकार के कद्दू ही कद्दू दिखायी देने लगे। अक्टूबर के अन्त तक तो प्राय: सभी घरों के आगे बड़े-बड़े कद्दू दीख रहे थे। और ऐसे-वैसे कद्दू नहीं। कद्दूयों में काटकर बनाये गये चेहरे होते थे जिनमें तरह-तरह की आँखें, नाक, मुंह देखने वालों को रिझाते या डराते थे। तब मेरी बेटी त्रह्मा ने बताया कि ये सब हेलोवीन के त्योहार की तैयारी है। 31 अक्टूबर को हेलोवीन त्योहार अमरीका भर में मनाया जाता है।

हेलोवीन शब्द मेरे लिये नया था। न तो इसका पहले कभी नाम ही सुना था और न ही कहीं इसके बारे में कुछ देखा-सुना था। अत: इसके बारे में जानने की जिज्ञासा हुई । तब मुझे अपनी दूसरी पुत्री सौ. दीक्षा, जो कि फोकलोर की विशेषज्ञ है, से इसके बारे में और जानकारी मिली। इस सर्वाधिक लोकप्रिय त्योहार की उत्पत्ति के बारे में कहा जाता है कि यू0एस0ए0 में यह त्योहार आयरिश लोग लाये हैं। किन्तु ऐतिहासिक मान्यता है कि हेलोवीन परम्परागत त्यौहार है--कुछ विद्वानों के मतानुसार इसका अर्थ है समस्त संतों का दिवस। 1 नवम्बर है । All Hallows or All Saints Day. और इसकी पूर्व संध्या जब 31 अक्टूबर को मनायी जाने लगी तब इस त्योहार का नाम हैलोवीन पड़ा। वास्तव में, Hallow + Evening इन दो शब्दों को मिलाकर Halloween शब्द बना है। अब प्रश्न यह उठता है कि यह नाम क्यों और कैसे पड़ा।

कुछ विद्वानों का मत है कि आयरलैंड में 1840 में भयंकर आलू का अकाल हुआ तब उस वीभत्स अकाल से त्रस्त आयरलैण्ड निवासी अटलांटिक महासागर पार करके अमेरिका आने को विवश हुए। जब आयरिश लोग अमेरिका आये तो वे अपनी संस्कृति व परम्परायें लेकर आये और उनके बसने के साथ-ही-साथ उनका ये प्रसिद्ध त्योहार अमेरिका में भी मनाया जाने लगा और इस तरह हेलोवीन अमेरिका में सर्वाधिक लोकप्रिय हो गया।

हैलोवीन के परम्परागत आयोजन में जिन क्रियाओं एवं कार्यकलापों ने उसकी विशिष्ट पहचान बनायी है उनमें प्रमुख हैं- कद्दूओं पर नक्काशी, खिड़कियों की सजावट, चेहरे पर मुखौटे लगाकर और तरह-तरह की पोशाकें पहनकर घूमना, घासफूस और फटे-पुराने कपड़े पहनकर स्वांग करना, बहुरूपियों की पार्टियों में शिरकत करना, शोर शराबा मचाना और मिठाइयां खाना। बच्चे मनचीता रूप धरकर शाम को मोहल्ले के हर घर के दरवाज़े पर दस्तक देकर कहते हैं--ट्रिक ऑर ट्रीट! अर्थात, या तो हमारा टॉफी-चाकलेट से सत्कार करो वरना हम तुम्हें अपने नये नये रूप धर के परेशान करेंगे। कोई आश्चर्य नहीं कि हजारों मीलो की दूरी के बावजूद मिनिसोटा की हैलोवीन मुझे बार-बार अपने अवध और ब्रज की होली की याद दिला गई।

विभा नागर
अमृत-प्रतिभा
5/530 विकासनगर, लखनऊ

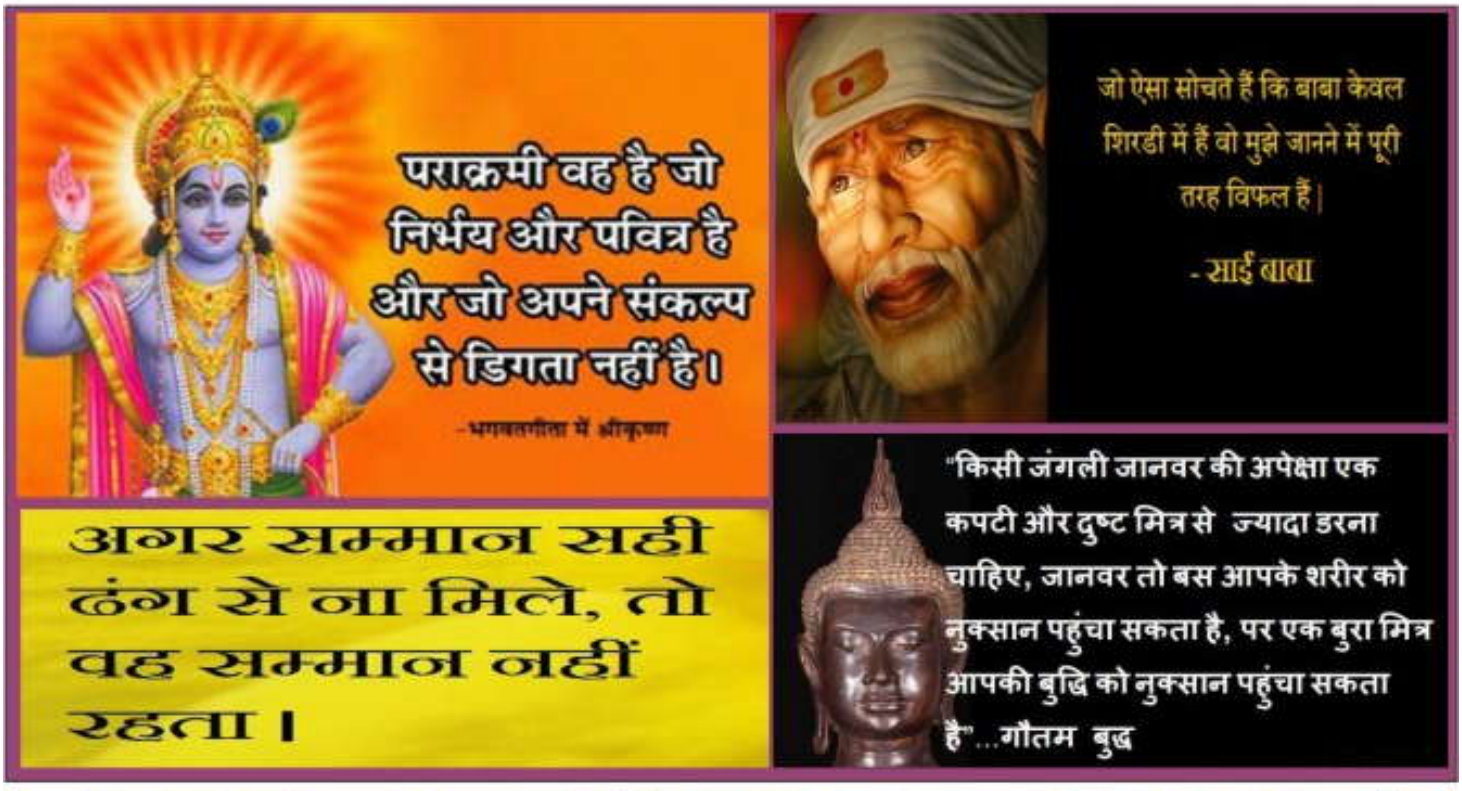

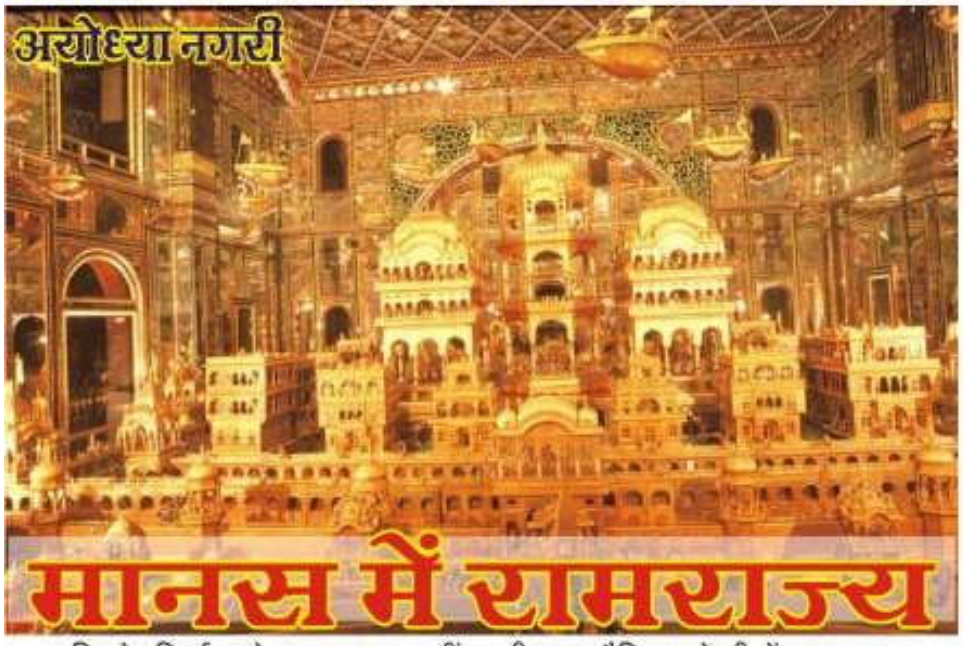

मानस में रामराज्य

सृष्टि के निर्माण से आज तक न हीं श्रीराम राज्य के समान कोई राज्य हुआ है और न हीं कोई राजा तथा भविष्य में भी कोई ऐसा राज्य संभव नहीं है। तुलसीदासजी ने मानस में इस काल का बडा सुंदर वर्णन किया है।

जैसे रामराज्य बैठे त्रिलोका। हरषित भए गए सब शोका।।

बयरू न कर काहू सन काई। राम प्रताप विषमता खोई।।

इस प्रकार श्रीराम के राज्य सिंहासन पर आरूढ होते ही प्रजाजन अत्यधिक हर्षित हो गये। श्रेष्ठ राजा के प्रभाव से सब के शोक जाते रहे। कोई किसी से बैर नहीं करता। सभी भेदभाव,ऊंचनीच का भाव जाता रहा।

सभी लोग अपने-अपने वर्ण और आश्रम के अनुसार धर्म में तत्पर हो गए थे। सभी वैदिक मार्ग पर चलते थे और सुख पाते थे। उस समय लोगों में नहीं किसी बात का भय था ना शोक था। सभी रोगमुक्त पूर्ण स्वस्थ्य थे। तुलसीदासजी कहते हैं कि

दैहिक-दैविक भौतिक तापा राम राज्य नहीं काहु न व्यापा।

सब नर करहि परस पर प्रीति चलहि सुधर्म निरतः श्रुति नीती।।

संसार में तीन प्रकार के ताप दुःख होते हैं। पहला दैहिक,दूसरा दैविक और तीसरा भौतिक। ये तीनों ताप राम राज्य में किसी को छू भी नहीं सकते थे । सभी मनुष्य परस्पर प्रेमपूर्वक रहते थे और वेदों की बताई गई नीतियों का पालन करते थे।

धर्म के चार चरण कहे गए हैं- सत्य, शौच, दया और दान।

ये रामराज्य में परिपूर्ण छाया हुआ था। स्वप्न में भी कोई पाप नहीं करता था। सभी स्त्री-पुरुष रामभक्ति में परायण और मोक्ष के अधिकारी थे। कम उम्र में किसी की मृत्यु नहीं होती थी और न ही कोई रोग,पीडा से दुःखी था। सभी लोग शरीर से सुंदर, पूर्ण स्वस्थ्य थे। रामराज्य में कोई भी व्यक्ति दरिद्र नहीं था। न कोई दुःखी था न दीन था। सभी शिक्षित,गुणज्ञ,शुभ लक्षणों से युक्त थे, कोई मुर्ख देखने में नहीं आता था। सभी कृतज्ञ और कपट रहित थे।

पूरे भूमंडल पर श्रीराम का एक छत्र राज्य था। जिनके रोम-रोम में अनेक ब्रह्मांड हैं। यह प्रभुता अधिक नहीं।

भगवान राम के राज्य में कोई अपराधी नहीं होता था। दंड, कानून की आवश्यकता नहीं पडती थी। केवल मात्र-

दंड जतिन्ह कर भेद जह, नर्तक नृत्य समाज।।

जीतहु मनहि अस सुनिअ जग रामचंद्र के राज।।

श्रीराम के राज्य में दंड केवल संन्यासियों के हाथ में रहता था। नाचने गाने वालों में स्वर के भेद होते थे। जीतने का शब्द केवल मन को केवल मन को जीतने के लिए ही सुनाई देता था। इस प्रकार दंड,भेद ये शब्द रामराज्य में पृथक ही थे।

रामराज्य में परिवार नियोजन एवं परिवार कल्याण का भी महत्व था। सभी पुरुष एक पत्नीवृत धर्म का पालन करने वाले थे। इसी प्रकार स्त्रियां भी मन,वचन,कर्म से पति का ही हित चाहती थीं । यहां तक कि भगवान श्रीराम के दो पुत्र,लक्ष्मण,भरत के भी दो-दो पुत्र थे।

दोई सुत सुंदर सीता जाये लव कुश वेद पुराण न गाये ।।

दुई दुई सुत सब भ्रातन केरे भये रुप गुण शील घनेरे।।

इस प्रकार राजा के भांति प्रजा ने भी उनका अनुकरण किया। भगवान श्रीराम की प्रभुता ऐसी थी कि समुद्र अपनी मर्यादा में रहता था तथा लहरों के द्वारा तट पर अनेक रत्न डाल देता था। नदियों में शीतल,स्वास्थ्यवर्धक जल बहता था।

श्रीराम के राज्य में चंद्रमा अपनी अमृतमयी किरणों से पृथ्वी को रस से पूर्ण कर देता था तथा सूर्य उतना ही तपता था,जितनी आवश्यकता होती थी। बादलों से जितना मांगों उतनी वर्षा कर देते थे।

- लता विटप मांगे मधु चवहि।
मन भावतों धेनु पय सवहि

अर्थात लता,बेल और वृक्ष मांगने से ही मधु (शहद) प्रदान कर देते थे। गायें मन की इच्छा के अनुसार जितना मांगों उतना दूध दे देती थीं। संपूर्ण पृथ्वी खेतों से हरीभरी रहती थीं। त्रेता में सतयुग के सब प्रभाव आ गए थे।

सुंदर-सुंदर सभी के घर मानो इंद्र नगरी आ गई हो । आंगन,गली,चौराहे व घर की सपूंर्ण भूमि शीशे एवं मणियों से बनी थी । सभी द्वार स्वर्ण के बने होते थे जिनमे हीरे की कीले जुडी होती थी । घर घर अनेक चित्रशाला बनी हुई थी एवं उनके सन्मुख फुलवारियां बनी होती थी

।नगर में स्वर्ण और रत्नों से बनी हुई सुंदर अटारियां मणी और रत्नों के सुंदर भवन बने हुए थे । नगर के चारों और दिव्य शोभायमान परकोटा बना हुआ था । जिसमें रंग बिरंगे कंगूरे बने होते थे । आकाश को चुमता हुआ उज्जवल महल और महलों पर दिव्य कलश जो सूर्य और चंद्रमा को भी लज्जित कर देता था और सुंदर मणियों से सुशोभित होते थे । घर घर मणियों के द्वीप शोभा पाते थे । चारो और सुंदर पक्षियों का कलरव मुनियों के मन को भी मोह लेता था । बाजार की शोभा वरणी नहीं जाती थी । कुबेर के समान सभी साहुकार अनेक उत्तम वस्तुएं लेकर बैठे रहते थे । आवश्यक वस्तुऐं जरुरतमंदों को बिना मूल्य के प्रदान कर दी जाती थी जहां साक्षात रमा निवास (लक्ष्मीपति) राजा हो उनकी संपदा का क्या कोई वर्णन कर सकता है ।

रमानाथ जहां राजा सो पुर वरणी न जाये

अणि माणिक सुख संपदा रही अवधपुर छाय

श्रीराम के राज्य में सुख-संपदा का वर्णन मां सरस्वती तथा शेषनाग अपने सहस्त्र मुखों से भी नहीं कर सकते हैं।

-डॉ.ओ.पी.नागर
श्री रामांक,08 गोपालपुरा
उज्जैन फोन-0734-2526252

अवध में आए श्रीराम

तर्ज दिल के अरमां आसुओं में बह गए

अवध में आए श्रीराम बधाई बाज रही, आ गये लक्ष्मण राम शहनाई बाज रही। कैसी मंगल शुभ घड़ी सखी आ गई-2, अवध में आवे सियाराम बधाई बाज रही। अवध..

माता-कौशल्या चंदन अंगना लिपा रही-2,
मोतियन चौक ये माता सुमित्रा पुरा रही।
माता कैकयी शरम के मारे मर रही-2
अपना मुंह में कैसे दिखाऊं लाल री-2
कैसी मंगल शुभ घड़ी सखी आ गयी-2
अवध...
काऊ सखी तो बांधे बन्दनवार री ओऽऽऽ-2
काऊ सखी मंगल कलश सजवाय री।
काऊ सखी कंचन को थाल सजाय री,
राम मात लाला की उतारे आरती-2।
कैसी मंगल शुभ घड़ी सखी आ गई।
अवध..
माता कौशल्या हीरे मोती लुटा रही ओऽऽऽ-2
अपने लाल को देख-देख सुख पा रही।
माता मन में फूली नहीं समा रही,
बार-बार माँ लेत बलैयां लाल की-2
कैसी मंगल शुभ घड़ी आ गई।
अवध..
काउ सखी चंदन चौकी ले आओ री-2
काऊ सखी सरयू जल से अन्हवाओ री।
काऊ सखी पीताम्बर भी पहिरा ओ री,
काऊ सखी आभूषण भी पहिराओरी।
काऊ सखी केसर को तिलक लगाओ री,
काऊ गले फूल न को हार पहिनाओरी।
अवध...
देव गगन से पुष्प सखी बरसा रहे ओऽऽऽ-2,
अपने प्रभु को देख-देख सुख पा रहे।
बार-बार पुष्पों की झड़ी लगा रहे,
जय-जय-जय-जय की ध्वनी सुना रहे।
सियाराम को देख हरषाय री,
राम लखन को देख-देख हरषाय री।
कैसी मंगल शुभ घड़ी सखी आ गई।
अवध...
सिंहासन पर बैठे सीताराम री ओऽऽऽ-2,
राज तिलक गुरुवर ने किन्हों आज री।
धन्य घड़ी सखी धन्य हमारो भाग्य री,
राम राज सखी रहे हजारों साल री।
नागर नाचो गाओ उतारो आरती,
फिर से आज नजर नहीं लग जाय री।
कैसी मंगल शुभ घड़ी सखी आ गई,
हो गये पूरण काम बधाई बाज रही
अवध...

-सौ.सुमनलता नागर
मोहन बड़ोदिया, जिला शाजापुर

With Best Compliments

M. RUPCHAND & CO.

NON - FERROUS METAL MERCHANTS & COMMISSION AGENTS.

10, "Shree Bhuvan" 4th Khetwadi Lane, Mumbai - 400 004
Phone (Office) 2382 5241 / 6639 4312, Tele/Fax : 2382 2095

स्व.पूज्य पिताश्री पुनमचन्दजी प्रागाजी

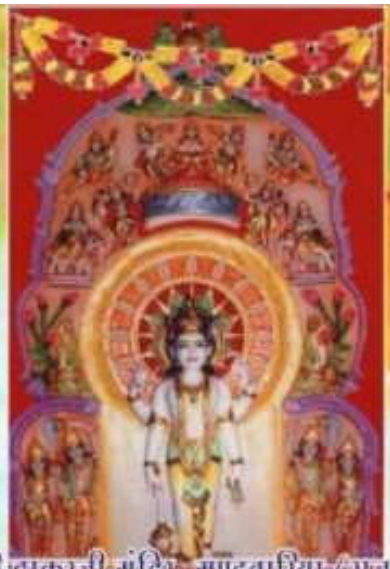

श्री ठाकुरजी मंदिर, मण्डवारिया-(राज.)

स्व.पूज्य माताश्री लहरीबाई पुनमचन्दजी

Ph. : 08194-223553
Keerthi : 94491-77053
Mahendra : 94481-23074

Shandilya Distributors

Wholesale Dealers:
Surat Sarees,
Banaras,
Calcutta,
Mumbai
all types of Sarees &
Dress Materials

Ph. : 08194-223051
Vishnu : 94489-48607
Babulal Nagar : 94499-73910

Hari Handlooms

Wholesale Dealers:
Mill Goods,
Handlooms &
all Hosiery Items

MKV Plaza, Fort Road, CHITRADURGA-577 501

Dhanraj 9483990766
Lalith 9036519447

HARIKRUPA Distributors

Wholesale Dealers in
Kolkatta, Delhi,
Ludhiyana, Bombay
& All Types Readymade
Garments

HARI DARSHAN
Wholesale
Shuting Sharting

Sairam Complex, M.G. Circle, CHITRADURGA-577 501

25वीं पुण्यतिथि पर सादर श्रद्धांजलि

स्व. रुपचन्दजी मोतीजी नागर

स्वर्गवास : 2047 पौष वदी - दशम दि. 22-12-1980

: नतमस्तक संपूर्ण परिवार :

पुत्र : देवीचंद, बाबूलाल, किशनलाल, स्व.दशरथलाल, शंकरलाल ।

पौत्र : नेनमल, रमणलाल, जगदीश, मणीलाल, भंवरलाल, राजेश गिरीष, राजेश, रसिक, दीपक, दिलीप, प्रविण, राहुल

प्रपौत्र : नीरज, योगेश, हिमांशु, चंदन, मुकेश, सतीश, मनीष, जिगर सोहन, मेहुल, हर्षिल, यश, द्रोण, वंश, कविश

प्रप्रपौत्र : हित, वरुण, अक्ष

पुरे पुत्र – पौत्र परिवार की तरफ से भावभरी श्रद्धांजलि एवम् ईश्वर से प्रार्थना करते है कि हमें उनके बताए हुए सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दें। एवम् शक्ति दें।

जनापुर जिला सिरोही (राज.)

हमारे प्रेरणा स्त्रोत - दादाजी

हमारे दादाजी का पूरा नाम रूपचन्द मोतीजी था एवं दादीजी का नाम गंगा देवी था। दादाजी की पच्चीसवीं पूण्यतिथि पर उनके गुणों को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि के रूप में लेख समर्पित कर रहा हूँ। वैसे तो दादाजी में बहुत सारे गुण एवं अच्छाई थी, परन्तु खास गुणों का वर्णन इस उद्देश्य से कि और भी लोग उनसे प्रेरणा ले सके।

ज्ञानवान- हमारे दादाजी सदैव धर्म एवं ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें पढ़ते रहते थे। रामायण-महाभारत धार्मिक पत्रिकाएं कल्याण आदि पढ़ते थे। उनके पास सलाह लेने के लिए बहुत से लोग आते थे। दादाजी उन्हें धर्मग्रंथों में लिखी हुई बातों के आधार पर दृष्टांत देते हुए उनकी समस्याओं का समाधान किया करते थे। वे साधु-संतों का बहुत आदर-सम्मान करते थे। उन्हें घर बुलाकर भोजन करवा कर यथायोग्य दान दक्षिणा देते थे। उनके साथ धर्म एवं ज्ञान संबंधि बातें किया करते थे। उनकी ज्ञान पिपासा इतनी अधिक थी कि सारे धर्मग्रंथ पढ़लेने के बाद पिताजी को बुलाकर कहा कि अब मुझे शिव पुराण पढ़ने की इच्छा है, तब पिताजी ने उन्हें शिवपुराण लाकर दिया तथा बहुत कम समय में उन्होंने इसे पढ़लिया।

व्यवहार कुशलता- दादाजी बहुत ही व्यवहार कुशल थे। वे परिवार के साथ-साथ गांव एवं समाज में भी व्यवहार कुशलता के लिए मशहुर थे। दूर-दूर के लोग उनसे व्यवहार (रीति रिवाज) जानने के लिए आते थे। वे उन्हें कथा एवं लघुकथा के माध्यम से पारिवारिक रिश्तों का महत्व तथा उन्हें कैसे निभाया जाता है, यह समझाया करते थे। परिवार, समाज या गांव में कैसे मिल-जुलकर रहना चाहिए, वे बताते थे।

दूरदृष्टा- हमारे दादाजी बहुत दूर दृष्टि वाले थे। हमारा एक कुआ था, जहाँ वे रोज जाया करते थे। लोग उनसे पूछते थे कि इस उम्र में आप रोज कुए पर क्यों जाया करते हैं तब उन्होंने एक इक्का (एक बैल वाली गाड़ी) खरीद ली तथा उस पर जाने लगे। वे साथ में चीकू, आम तथा अन्य फलों के बीज ले जाते तथा कुए पर एक बगीचा तैयार कर लिया उसकी देखरेख करते तथा पानी सींचते थे। लोग जब उनसे पूछते कि इस उम्र में आप आम बो रहे हैं, इन्हें खाएगा कौन? तब उनका जवाब होता कि मेरे पोते खाएंगे। आज जब मैं कुए पर जाता हूँ और फलों से लदे पेड़ देखता हूँ तो दादाजी की याद में खो जाता हूँ। जीवन के अंतिम दिनों में जब दादाजी की उम्र 95 वर्ष की थी, वे थोड़ा बीमार रहने लगे। मैं और मेरे चाचाजी (किशनलालजी) जब उनसे मिलने गाँव गए तब चाचाजी ने दादाजी को डॉक्टर को दिखाने दवाखाने ले जाने की बात कही।

दादाजी ने कहा कि अब मुझे किसी डॉक्टर के पास नहीं जाना, मैं आज तक किसी डॉक्टर के पास नहीं गया। मेरी उम्र अब पूरी हो गई है। बहुत मान-मनोव्वल के बाद वे वैद्य के यहाँ जाने को तैयार हुए। उन्हें वैद्य को दिखाकर दवाई दिलवाने के बाद मैं और चाचाजी मुंबई लौटते समय उनसे आशीर्वाद लेने गए तब उन्होंने सीख देते हुए कहा कि शांति से और मिलजुल कर रहना। ये सीख हमारे लिए उनके द्वारा दी गई अन्तिम सीख थी। क्योंकि कुछ दिनों बाद ही उनका देहावसान हो गया था।

कर्त्तव्य पराणय- वे अपने परिवार के प्रति पूर्ण कर्त्तव्य परायण रहे। समयानुसार खेती की। दुकानदारी चलाई, बच्चों को पढ़ाया-लिखाया। कभी धन की कमी नहीं आने दी। हमारे घर में चार-पाँच दूधारु गाय भैंस हमेशा रहती थी, वो कहते थे कि बच्चों को गाय भैंस का दूध हमेशा मिलना चाहिए, ताकि वो हृष्ट पुष्ट रह सके। कई बार वो घर वालों को किसी व्यक्ति या परिवार का नाम लेकर बताते थे कि देखो उनके पास गाय भैंस नहीं है तो उनके बच्चे कैसे दुबले-पतले (कमजोर) हैं। गांव और समाज के प्रति भी उनकी कर्त्तव्य परायणता देखने को मिलती थी।

गांव में त्यौहार, मंदिर या स्कूल में कोई आयोजन होता तो उसमें तन-मन-धन से सहयोग करते थे। हमें भी समझाते थे कि गांव या समाज में कोई कार्यक्रम हो तो उसमें यथा शक्ति आर्थिक सहयोग अवश्य करना चाहिए। गांव में स्कूल भवन के निर्माण एवं धर्मशाला में सहयोग की प्रेरणा उन्हीं से मिली। वे देश दुनिया के घटनाक्रम पर भी ध्यान रखते थे। दादाजी को याद करते समय दादीजी को भी याद करना बहुत जरुरी है। हमारी दादीजी का नाम गंगादेवी था। यथा नाम तथा गुण, जिस प्रकार गंगा नदी दयावान है उसी प्रकार वे भी थी। दया उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। कई बार तो लोग झूठ बोलकर भी कुछ-न-कुछ मांगते और वे सहर्ष दे देती थी। इसका उदाहरण है कि उस समय हमारे यहाँ चार-पाँच दूधारु गाय-भैंस थी। उनके दूध से दही बनाकर बलौना करते थे। (दही में से मक्खन निकालने की प्रक्रिया को बलौना कहते हैं)

बलौने के दिन हमारे यहाँ छाछ लेने वालों की लाईन लग जाती थी। सबको छाछ मुफ्त में बांटते थे। थोड़ी छाछ बर्तन में अलग से निकाल ली जाती थी। जो घर में खाने के लिए काम में आती थी। कभी-कभी तो वे अलग बर्तन में रखी हुई छाछ भी लोगों में बांट देती थी। दादाजी जब खाने के समय पूछते कि छाछ कहां है तो बोलती कि कोई मांगने वाला आया, उसे पूरी की पूरी दे दी। ऐसी थी हमारी दादी। मेरी शिक्षा एवं पालन पोषण दादाजी के सानिध्य में हुआ मुझे (पौत्र) दादाजी-दादीजी का भरपूर वात्सल्य मिला। यह सब लिखते-लिखते भावुक हो गया हूँ तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे दादा-दादी सबको मिले। हमें अपने दादाजी से जो शिक्षा एवं पथप्रदर्शन मिला वैसा सबको मिले।

-नैनमल बी.नागर
मुम्बई मो.9323287681

श्री आपेश्वर महादेवजी

स्व.भूरमलजी पिता पूनमचंदजी

POONAM DRESS LAND

All Types of Readymade Garments Show Room

opp. Upadhyay Hotel, B.D. Road, CHITRADURGA-577 501
Ph. (O) 08194-225794 ® 08194-222726, Mo. 9481417266

Devichand Bhoormal ji Mandwariya Dist.Sirohi (Raj.)

स्व. प्रतापचंदजी हंसाजी

कंकूदेवी प्रतापचंदजी, कालंद्री

PRADEEP DISTRIBUTORS

Pradeep Naagar
93425-33174

Ashwin Naagar
97311-63164

Dealers :

VAMA CREAM (INDORE) & Pharmaceulticals, Generics, Cosmetics, Surgical and General Items

Stockist For :

BERTOLLI OLIVE OIL & FIGARO EXTA VIRGIN OLIVE OIL

"SRI MANJUNATHA KRUPA", No. 48/4, 1st Floor, Raghavendra Colony, 5th Main Road, Chamarajpet, BANGALORE-560-018

उनकी 'लीला' निराली थी

बड़वाह निवासी स्व.श्री किशोरीलालजी त्रिवेदी की धर्मपत्नी श्रीमती लीलावती त्रिवेदी का 29 सितम्बर 2015 को देवलोक गमन हो गया।

श्रीमती लीलावती त्रिवेदी के बारे में कुछ वर्षों पहले जय हाटकेश वाणी में ही लेख प्रकाशित हुआ था कि वे 100 वर्ष के आसपास उम्र के होने के बावजूद अपना सारा काम स्वयं के हाथों से करती थी। भगवान ने उन्हें 105 वर्ष की उम्र दी, परन्तु आखिरी तक वे बच्चे-बुढ़े सबको पहचान लेती थी। परिवार एवं रिश्तेदारों के सम्पर्क में रहने तथा बेहद प्रेमी स्वभाव के थे। उनका सहज एवं खुले विचार का होना सभी सम्बंधियों को बार-बार स्मरण हो रहा है। मासिक जय हाटकेश वाणी परिवार समस्त नागर समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

दिल के राजा थे श्री शंकर नागर

राऊ के प्रतिष्ठित परिवार के श्री जानकीलालजी नागर के प्रथम पुत्र स्व.राजारामजी नागर के ज्येष्ठ पुत्र श्री शंकरलाल नागर का अल्पायु में 22 नवम्बर 2015 को देहावसान हो गया।

सदैव प्रसन्न एवं मिलनसार श्री शंकरलालजी ने पढ़ाई के बाद स्वव्यवसाय राऊ में गांधी चौक पर किराना एवं जनरल स्टोर्स का प्रारंभ किया। श्री नागर समाजकार्य में सदैव अग्रणी रहते थे, एवं दिल के राजा थे तथा उनके पुण्यात्मा होने का प्रमाण है कि देव प्रबोधिनी एकादशी के दिन ब्रह्ममुहुर्त में उन्होंने अंतिम बिदाई ली। वे अपने पीछे पत्नी, एक पुत्री शिखा एवं दो पुत्र पुनित एवं सुमित को छोड़ गए हैं। दुःख की इस घड़ी में ढांढस बंधाने एवं संबल देने के लिए माताजी श्रीमती श्यामा बाई नागर, अंकल श्री रमेशचन्द्र, श्री रमाकांत, श्री गिरिजाशंकर ने रिश्तेदारों, समाजजनों एवं ग्रामीणजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की है। जय हाटकेश वाणी परिवार श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

ओ जाने वाले हो सके तो लौट के आना

मधुबन खुशबू देता है, सागर सावन देता है।
जीना उसका जीना है, जो ओरों को जीवन देता है।।

उपरोक्त पंक्तियाँ प्यारे भैया श्री रविन्द्र (आयकर) याज्ञिक पर बिल्कुल खरी उतरती है। 29 अक्टूबर 2015 में मुम्बई में उनका स्वर्गवास हो गया। वे 64 वर्ष के थे।

अपने विद्यार्थी काल में उन्हें काफी आर्थिक संकटों से गुजरना पड़ा। जीवन की हर चुनौती को हँसते हुए स्वीकार करने के उनके स्वभाव ने उन्हें सफलता की मंजिल तक पहुँचाया। आर्थिक परिस्थिति अच्छी होते ही उन्होंने अपने भाई, बहन, भतीजे, भाँजी सभी को पढ़ाई और शादी के लिए दिल खोलकर आर्थिक सहायता की। यहाँ तक कि उनकी 25 साल पुरानी नौकरानी की बेटी भी उनकी वजह से अपनी पढ़ाई पूरी करके आत्म निर्भर हो सकी। उनके जन्म के समय हमारे परिवार में 'आयकर' संबंधी कुछ समस्या चल रही थी। इसीलिए उनका नाम 'आयकर' रखा गया। उनके हंसी-मजाक करने के अंदाज ने उन्हें लोकप्रिय बना दिया। परिवार के हर फंक्शन में उनकी हाजिरी माहौल को हलका-फुलका बनाए रखती। उनके स्वर्गवास पर लोगों के सांत्वना भरे फोन और संदेश आए। विदेश में बसे भाई और भांजी भी शोकाकुल परिवार के दुख में शामिल हुए। उनकी कमी हम हमेशा महसूस करेंगे, इतना ही कह सकते हैं 'ओ जाने वाले हो सके तो लौट के आना'। अश्रु पुरित श्रद्धांजलि सहित...

-उषा ठाकोर, मुम्बई

आत्मा के संतोष का ही दूसरा नाम स्वर्ग है।

खुशी के लिये काम करोगे तो...
खुशी नहीं मिलेगी.....
लेकिन खुश होकर काम करोगे तो...
खुशी जरूर मिलेगी.

क्रोध से भ्रम पैदा होता है. भ्रम से बुद्धि व्यग्र होती है. जब बुद्धि व्यग्र होती है तब तर्क नष्ट हो जाता है. जब तर्क नष्ट होता है तब व्यक्ति का पतन हो जाता है।

श्रीमद्भगवद्गीता

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

पूज्य पिताश्री स्व. जोईतारामजी

ओउम् भूर्भुवः स्वः
तत्स वितुर्वरेण्यम
भर्गो देवस्य धीमहिः
धियोयोनः प्रचोदयात्

पूज्य मातुश्री स्व. पार्वती देवी

Sri Radhe International

Wholesale Dealers in :
Self Adhesive Tapes Foam Tapes & Office Stationery

891, "Nanda Gokula Complex" (Jatka Stend),
Nagarthpet Main Road, BENGALURU-560 002
Ph. 080-22225035, 40971926, Mo.09480071000 / 09480073000 (Hitesh)
Email : sriradhe3333@gmail.com

Shubham Fashions

A House Of Designer Saree Chundi & Westerns Wears

O.B.S. Road, Gangavathi-583227 (KA)
Mo. 88674 06351 (Nitesh)

स्व. पार्वतीदेवी स्व. जोईतारामजी नागर परिवार उम्मेदाबाद (जालोर) राजस्थान

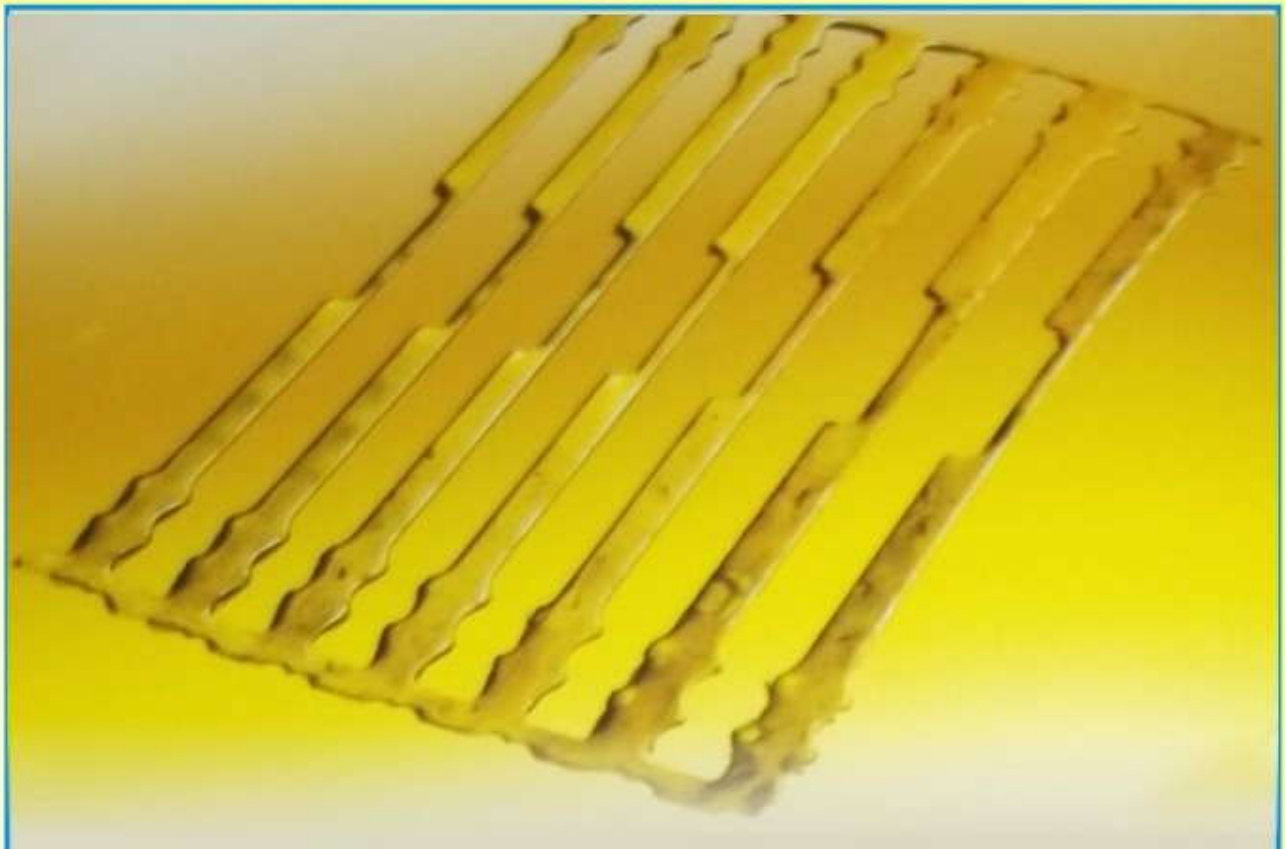

KRC

Kantilal Rupchand & Co.

Dealers & Stockist of All Kind of Non-Ferrous Metals

Specialist in Brass Sheet Cutting & Brass Boring

102, V.P. Road, Jyoti Prakash Bldg., Mumbai - 400 004

Tel : 23885696 / 66394729 Mob.: 9892245901 / 9892400419 / 9892403259 / 9920826953

जन्मदिवस पर शुभकामना
बधाई एवं शुभाशीर्वाद

चि. द्रोण

सुपुत्र : सौ. पीनल-श्री प्रवीण नागर, मुंबई

20 नवम्बर 2015

शुभाकांक्षी -
दादा-दादी : शंकरलालजी-सौ. जमनाबेन
नाना-नानी : पुरुषोत्तम लाल (परेश) -सौ. मंजूला नागर
एवं समस्त नागर परिवार, मो. 099878 61391

जय झाटकेश वाणी के संरक्षक मंडल के सदस्य

श्री पुरुषोत्तमलालजी (परेश) नागर

को जन्मदिवस (20 नवम्बर) पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा चैतन्य लोक प्रिंटर्स, 20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यही से प्रकाशित
सम्पादक : सौ. संगीता शर्मा (56) मो. 94250 63129
LATE POSTING